**संरक्षक सदस्य**

श्रीमहन्त पू. स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती, श्रीमहन्त विद्यानंद सरस्वती, स्वामी रविन्द्रानन्द सरस्वती, स्वामी देवानन्द सरस्वती, श्री प्रवीन अग्रवाल, श्री अनिल चौधरी, श्री बी.एन. तिवारी, डॉ. संजय सिन्हा, श्री नरेन्द्र सोमानी, श्री आर.के. सिंह, श्री प्रशान्त सोमानी, श्री राजेन्द्र सिंह, श्री शशिधर सिंह, श्री ब्रजकिशोर सिंह, डॉ. संजय पासवान (पूर्व केन्द्रीय मंत्री), स्वामी विवेकानन्द,

प्रधान सम्पादक/संस्थापक

**महामंडलेश्वर**

**डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज**

**प्रबन्ध सम्पादक** - प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल

**कार्यकारी सम्पादक** - **श्री प्रेमशंकर ओझा**

**सम्पादक मण्डल** - शत्रुघ्न प्रसाद, बालकृष्ण शास्त्री, श्रीमती राखी सिंह, अभिजीत तुपदाले, डॉ. दीपक कुमार, डॉ. हरेश प्रताप सिंह, श्री कुलदीप श्रीवास्तव, डॉ. सुखेन्दु कुमार, दिनेशचन्द्र शर्मा

**आवरण सज्जा** - आनन्द शुक्ला

**व्यवस्था मण्डल** - श्री वीरेन्द्र सोमानी, श्री संजय अग्रवाल, राजेन्द्र प्र. अग्रवाल (मथुरा वाले), श्री सुभाषचन्द्र त्यागी, श्री गोपाल सचदेव, श्री रविशरण सिंह चौहान, श्री महेन्द्र सिंह वर्मा, श्री राजनारायण सिंह, श्री अश्विनी शर्मा, श्री सुरेश रामबर्ण (मॉरीशस)

**वित्तीय सलाहकार** - श्री वेगराज सिंह

**विधि सलाहकार** - श्री अशोक चौबे

**परामर्श एवं सहयोग**-श्री राजेन्द्र अग्रवाल, श्री श्यामबाबू गुप्ता, श्री शिलेश्वर मानिकतला, श्री नरेन्द्र वाशनिक (निक्की), श्रीमती नैना बेनबीड़ीवाला

**विज्ञापन व्यवस्था** - श्री दयाशंकर वर्मा

**प्रमुख संवाददाता** - श्री मोहन सिंह

(प्रकाशन में लगे सभी व्यक्ति अवैतनिक है)

**मूल्य** - 25/-

**वार्षिक चन्दा** - 300/-

**आजीवन** - 5000/-

*दिल्ली सम्पर्क सूत्र :* 305-308, **प्लाट नं.** 9, **विकास सूर्या गैलेक्सी, सेक्टर-**4, **सेन्ट्रल मार्केट, द्वारका, नई दिल्ली-**110075

मोबाईल +91-8010188188

*सम्पर्क सूत्र :*

**महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज**

आदर्श आयुर्वेदिक फार्मेसी, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखंड)

फोन- 01334-2626 00, मोबाइल-09897034165

E-mail: Umakantmaharaj@hotmail.com, swamiumakantanand@gmail.com

# शाश्वत ज्योति

## शाश्वत दर्पण


- **अर्न्तमन से** ❑ म.म. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज .... 2
- शिव कथा- **अविरल अमृत प्रवाह** ❑ म.म.स्वामी जी महाराज ..... 3
- गीता काव्य- **गीता महिमा** ❑ माधव पाण्डेय निर्मल ..... 10
- विवेचन- **किन परिस्थितियों में व्यक्ति को नींद नहीं आती** ❑ कौशल पाण्डेय ..... 14
- हृदयस्पर्शी- **पंडित जी को वैश्या ने पढ़ाया पाठ** ❑ ब्रिजेश सिंह ..... 15
- ज्ञान-विज्ञान- **अर्जुन को कृष्ण भक्ति का घमंड, गरीब ब्राह्मण ने दिया जवाब** ❑ मनोहरलाल ..... 16
- ऐतिहासिक-**मनीषी विदुर ने मृत्यु से पहले बताई थी अपनी अंतिम इच्छा** ❑ सुरेश मेहरा ..... 17
- ऋषि चिन्तन-**दूसरा दीपक** ❑ आचार्य श्रीराम शर्मा ..... 18
- शिवरात्रि पर विशेष-शवरात्रि शिकारी की कथा ❑ नीतिका ..... 19
- प्रेरक प्रसंग-**सबसे महत्वपूर्ण स्वयं को जानना** ❑ .योगाचार्य अतुल द्विवेदी ..... 21
- इतिहास-संस्कृति-**सूत्र साहित्य का संक्षिप्त परिचय** ❑ डॉ. देवेन्द्र गुप्ता ..... 23
- प्रेरणास्पद-**मनन-चिन्तन** ..... 27
- प्रेरणास्पद-**नालायक** ❑ महिमा शुक्ला ..... 28
- स्वभाव-प्रकृति-**आदतें औकात का पता बता देती हैं** ❑ राजेश चौबे ..... 30
- धर्म-कर्म-**सत्संग का प्रभाव सर्प बन गया देवपुरुष** ❑ प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल ..... 31
- समाज और कर्म-**काम और जीवन** ❑ रितेश पाण्डेय .....32
- सत्संग मंथन-**महान सम्राट जनक के गुरु ऋषि अष्टावक्र** ❑ अनिरूद्ध जोशी 'शतायु' .....33
- गौरथ गाथा-**लाल बहादुर शास्त्री के जीवन के प्रसंग** ❑ साभार..... 35
- प्रेरणास्पद-**लालाजी का लालच** ❑ अरुण शुक्ला ..... 36
- आयुर्वेद-**नौसादर का आरोग्यवर्धक आदर** ❑ वैद्य दीपक ..... 39
- ज्योतिष शास्त्र-**शनैश्चरी अमावस्या पर करें ये काम, हर समस्या का होगा समाधान** ❑ कौशल पाण्डेय (ज्योतिष) ... 41
- इतिहास गाथा-**तीन कसौटियाँ** ❑ सुकरात ..... 42
- होलिका पर विशेष-होलिका दहन पर भद्रा का साया, फिर भी इस बार शुभ है होली ❑ साभार ..... 43
- जानकारी-**अजब-गजब देश दुनिया की बातें** ..... 44
- तत्वज्ञान-**स्वार्थ परम ज्ञान ले आता है** ❑ पंकज पाण्डेय ..... 45
- **व्रत त्यौहार** ..... 48


**स्वामित्व-डिवाइन श्रीराम इण्टरनेशनल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक- डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती द्वारा माँ गायत्री ऑफसेट प्रिन्टर्स, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखंड) से मुद्रित तथा आदर्श आयुर्वेद फार्मेसी कनखल, हरिद्वार से प्रकाशित। साज सज्जा: स्वामिनारायण प्रिंटर्स, फोन- 09560229526, 011-45076240**

# अंतर्मन से.....

आत्मीय पाठकों/भक्तों,

हिन्दुत्व भारतीय संस्कृति का पर्याय है। यह सच्चाई है, भले ही कुछ तथाकथित आधुनिकतावादी इसे समझने से इन्कार करें। आज पूरे देश में एक नकारात्मक माहौल बनाने का प्रयास चल रहा है कि हिन्दुत्व खतरे में है। अथवा यह कहकर कि हिन्दुओं की जनसंख्या लगातार कम होती जा रही है। एक दिन ये समाप्त हो जायेंगे। वास्तव में हिन्दुत्व दूसरे सम्प्रदायों की तरह कोई मत-पन्थ या सम्प्रदाय नहीं है। यह एक विचार है। एक ऐसी विचारधारा जो सदियों से समस्त विश्व समुदाय को संरक्षित और संबंधित किया है। यह मानव जीवन का मूल तत्त्व है। इसके बिना धरती पर मानवता की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती है। सदियों से इस संस्कृति पर आक्रमण होता रहा है, परन्तु अभी तक उसका कुछ नहीं बिगड़ा। इसीलिये तो कहते है-

**यूनान, मिश्र, रोमा सब मिट गये जहां से।**
**कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।।**
**सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमा हमारा।।**

अरनाल्ड टायनवी नाम के एक प्रसिद्ध इतिहासकार ने अपनी एक पुस्तक ''हिस्ट्री ऑफ हिस्टोरिकल राइटिंग में लिखा है-तृतीय विश्वयुद्ध होगा, दुनिया नहीं बचेगी। अगर कुछ नहीं हुआ और कुछ लोग बच गये अथवा तृतीय विश्वयुद्ध के बाद भी कुछ लोग बच गये तो आने वाले भविष्य का जो धर्म होगा वह है भारतीय संस्कृति। इसी विचारधारा को दुनिया अपनायेगी और सुखी रहेगी।''

अत: निराशा कितनी भी हो अपने धर्म और संस्कृति के भविष्य को लेकर कभी निराशा का भाव न रखें।

'न्यू संस्था' जो विश्व की एक विशेष संस्था है। उसने हिन्दु जनसंख्या और इनके अस्तित्व को लेकर विश्वभर के भविष्यवक्ताओं और उनकी भविष्य वाणियों तथा वैज्ञानिकों के भविष्य कथन का विकोशन किया है। उनके अनुसार 2050 तक हिन्दु धर्म मानने वाले लोगों की जनसंख्या 1.4 अरब हो जायेगी जो जनसंख्या के हिसाब से दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा धर्म हो जायेगा। कहा जा रहा है कि पश्चिमी देश इस्लाम के विरूद्ध प्रचार करेंगे जिसके कारण 97 मिलियन लोग हिन्दु धर्म स्वीकार कर लेंगे। धर्म के कारण सिर्फ 3 मिलियन लोग इस्लाम जबकि 36 मिलियन लोग दूसरे धर्म अपनायेंगे। ''न्यू संस्था'' के अनुसार 2050 तक इस्लाम मानने वालों की संख्या खतरे अधिक होगी परन्तु उनका जीवन नारकीय हो जायेगा जिससे वे लोग इस्लाम छोड़ हिन्दुस्व की ओर आकर्षित होंगे।

फ्रांस के नोबेल पुरस्कार विजेता रोमाड रोजा के अनुसार आने वाले 500 साल में हिन्दु धर्म पूरी दुनिया में बहुत तेजी से बढ़ेगा क्योंकि इसी धर्म में प्राचीन और भविष्य की ज्ञान और बुद्धि का योग है।

नोस्ट्राडेमन ने अपनी पुस्तक येचुरी में हिन्दु धर्म के भविष्य के बारे में कहा है कि भविष्य में विश्व हिन्दुत्व से प्रभावित होगा और सभी भारत के साथ मिलकर अरब देशों में हिन्दुत्व का प्रसार करेंगे।

**अल्बर्ट आइस्टीन**-प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइस्टीन का कहना है कि हिन्दुओं ने अपने योग साधना और बुद्धि के बल पर बड़े-बड़े प्रतिकार किया है। इसी आधार पर हिन्दू धर्म एक दिन विश्व में शांति स्थापित करेगा।

**बर्नाड शॉ**-बर्नाड शॉ ने हिन्दू धर्म को लेकर भविष्यवाणी की थी कि भविष्य में सारी दुनिया के बुद्धिमान तथा शिक्षित लोग हिन्दू धर्म को समझेंगे और उसे अपना लेंगे।

**मैक्समूलर**-दुनिया के प्रसिद्ध विद्वान मैक्समूलर ने कहा कि अगर आपको अपने शांतिमय और सुखी जीवन के लिये प्रेरणा लेनी है तो आपको हिन्दू धर्म से ही ऐसी प्रेरणा मिल सकती है। क्योंकि यही एक धर्म है जो हमें अधिक विश्वास बोध लगता है।

**ऐनी वेसेंट**-ऐनीवेसेंट ने कहा था हिन्दू धर्म के बिना भारत का कोई अस्तित्व नहीं है। हिन्दू धर्म ही विश्व का सर्वोच्च धर्म है। वो सभी मत पन्थों की जननी है हिन्दू धर्म में ही पूर्ण रूप से विज्ञान और धर्म का सामन्जस्य पाया जाता है।

**चार्ल्स क्लार्क**-अमेरिका के भविष्यवक्ता क्लार्क के अनुसार 20वीं सदी से पहले एक देश विज्ञान की उन्नति के साथ सभी देशों को पीछे छोड़ देगा। वह देश है ''भारत''। लेकिन भारत की प्रतिष्ठा इसके धर्म और दर्शन से होगी। जिसका लोहा दुनिया मानेगी।

**पीटर हरलौस**-महान भविष्यवक्ता ''पीटर हरलौस'' ने अपनी भविष्यवाणी में लिखा है कि भारत में आध्यात्मिकता तथा धार्मिकता की जो लहर उठेगी, वह पूरे विश्व में छा जायेगी।

**क्रुजर**-फ्रांस के महान विद्वान ''क्रूजर'' की भविष्यवाणी पर अगर विश्वास किया जाय तो उन्होंने कहा है कि आने वाले समय में अगर पृथ्वी पर इण्रगनो इन्सानों के पालने की यदि घोषणा की जाय तो उसका सच्चा अधिकारी हिन्दू धर्म ही है।

**जुल्स वर्ण**-जुल्स वर्ण के अनुसार भारत और पाकिस्तान के बीच जंग छिडेगी। पहले बंग्लादेश बनेगा। पाकिस्तान एक छोटे से टापू जैसा रह जायेगा। कुछ भाग अफगानिस्तान में चला जायेगा और बलुचिस्तान स्वतंत्र हो जायेगा। भारत, चीन से अपनी भूमि वापस ले लेगा। इसी समय तक तिब्बत भी स्वतंत्र हो जायेगा। चीन और भारत एटम बम बनायेंगे। सम्पन्न देशों को हर्षल, प्लूटो आदि ग्रहों की विस्तृत जानकारी मिल जायेगी और मंगल ग्रह तक पहुँच जायेगा भारत अत्यधिक शक्तिशाली बनकर उभरेगा।

**लियो टॉलस्टॉय**-टॉल्स्टॉय का कहना था कि एक दिन हिन्दू और हिन्दुत्व ही पूरी दुनिया पर राज करेगा क्योंकि इसी में ज्ञान और विज्ञान का सामन्जस्य है।

**जोहान गीथ**-गीथ का मानना था कि हम सूफी को अभी या बाद में हिन्दू धर्म स्वीकार करना ही होगा। यही असली धर्म है। मुझे कोई हिन्दू कहे तो बुरा नहीं लगेगा। मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ।

**हर्बट वेल्स**-हर्बट वेल्स कहते है कि पहले हिन्दुओं की कई पीढ़िया अत्याचार सहेंगी लेकिन एक दिन ऐसा आयेगा जब सारी दुनिया हिन्दुत्व के दर्शन की ओर आकर्षित हो जायेगी।

**हसटन स्मिथ**-स्मिथ हिन्दुओं के भविष्य के बारे में पूर्ण आश्वस्त थे। उन्होंने तो यहां तक कहा कि अगर दुनिया में कुछ भी बेहतर है तो वह है हिन्दू धर्म अगर हम अपनी भलाई चाहते है तो हमें खुले दिल और दिमाग से हिन्दू धर्म को देखना समझना होगा।

**माइकल नोस्टरीडामा**-इन्होंने कहा कि हिन्दुत्व ही पूरे यूरोप में शासन धर्म बन जायेगा और यूरोप का प्रसिद्ध शहर इसकी राजधानी बन जायेगा।

**बर्ट्रेंड रसल**-भविष्य में यूरोप में ही हिन्दुत्व के सबसे अधिक विचारक होंगे क्योंकि समस्त यूरोप हिन्दुत्व के रंग में रंग जायेगा।

उपरोक्त भविष्य वक्ताओं की भविष्यताओं को समझ कर हमें विश्वास करना चाहिए कि हिन्दू का भविष्य उज्जवल है।

स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती

(स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती)

# अविरल अमृत प्रवाह

-महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

गतांक से आगे

## शिवजी का देवताओं को निमन्त्रण

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! इधर भगवान् शंकर ने जब लग्न-पत्रिका ली थी, उसमें लिखी हुई सभी लोकाचार रीतियों को भी अपनाया, सभी उपस्थित मुनिगणों को भगवान् शंकर ने अपने विवाह में सम्मिलित होने को कहा। उसके बाद भगवान् शंकर ने तुमको भी याद किया। फिर तुम भी वहाँ पहुँच गये और अपने भाग्य की प्रशंसा करते हुए प्रणाम किया। फिर स्तुति करने लगे। तब प्रसन्न होकर शिव बोले-हे ऋषिश्रेष्ठ! तुम्हारे कहने से पार्वतीजी ने उग्र तपस्या की थी जिसके फलस्वरूप प्रसन्न होकर मैं उसे पति होने का वर दे चुका हूँ। अब विवाह के लिए वहाँ से लग्न-पत्रिका भी आ चुकी है। आज से सातवें दिन श्रीपार्वतीजी के साथ लोकरीति के अनुसार मेरा शुभ-विवाह होगा। अब तुम इस शुभ-विवाह के लिए विष्णु आदि देवता, मुनि, सिद्ध, ऋषि सभी को मेरी ओर से निमन्त्रण दे आओ और उन्हें कहना कि अपने परिवार के साथ अपने-अपने वाहनों पर चढ़कर विभूषित हो मेरे महोत्सव में शीघ्र पधारें। इस प्रकार

**उसके बाद भगवान् शंकर ने तुमको भी याद किया। फिर तुम भी वहाँ पहुँच गये और अपने भाग्य की प्रशंसा करते हुए प्रणाम किया। फिर स्तुति करने लगे। तब प्रसन्न होकर शिव बोले-हे ऋषिश्रेष्ठ! तुम्हारे कहने से पार्वतीजी ने उग्र तपस्या की थी जिसके फलस्वरूप प्रसन्न होकर मैं उसे पति होने का वर दे चुका हूँ।**

भगवान् की आज्ञा सुनकर तुम अतीव आनन्दित हुए और कहने लगे-हे भगवान्! मैं आपका सेवक हूँ। आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। यह कहकर देवताओं को निमन्त्रित करने के लिए तुम वहाँ से चल पड़े। सभी देवताओं को जाकर निमन्त्रण देकर प्रसन्नतापूर्वक लौट आये। आकर सभी समाचार सुनाया। ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! निमन्त्रण पाकर अतीव प्रसन्नता से सज-धज-कर भगवान् विष्णु श्रीलक्ष्मी के साथ भगवान् शंकर के पास पहुँच गये। वहाँ शंकर को प्रणाम करके उनकी आज्ञा से अपने स्थान पर बैठ गये। इसी प्रकार सब देवता, लोकपाल, इन्द्र आदि अपने गण तथा परिवार के साथ वस्त्राभूषणों से शोभायमान होकर वहाँ पहुँच गये। सिद्ध, चारण, गन्धर्व, ऋषि, मुनि सब निमन्त्रित होकर कैलाश पहुँच गये। अप्सराएं नाचने लगीं, देव-नारियाँ गाने लगीं। लोकचार रीतियाँ करके भगवान् शंकर की आज्ञा से विष्णु आदि सभी देवता वरयात्रा (बरात) ले जाने की तैयारी करने लगे। सात माताओं ने शिव का श्रृंगार किया। मस्तक पर तीसरा नेत्र मुकुट बन गया। चन्द्रकला का तिलक लगाया गया। कण्ठ के सर्पों ने अपने फन दोनों ओर ऊँचे कर लिए। वे सुन्दर कुण्डल हो गये। इसी प्रकार सब अंगों में साँप लिपट गये। वे आभूषण बन गये। सारे अंगों पर चिता की भस्म रमा दी गई। वह चमक उठी। वस्त्र के स्थान पर सिंह तथा गज-चर्म शोभायमान हो गया। इस प्रकार के श्रृंगार से सुशोभित होकर भगवान् शंकर दूल्हा बने। विष्णुजी कहने लगे-हे शंकरजी! आप अपना गृह्य-सूत्र की विधि के अनुसार विवाह करें। मण्डप स्थापन नन्दीमुखी श्राद्धादि कुलरीति से करते चलें इसमें आपका यश होगा और लोक भी इसी प्रकार करने लग जायेंगे। ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! यह सुनकर महादेवजी ने स्वीकार करके कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, गौतम, गुरु, कण्व, वृहस्पति, शक्ति, जमदाग्नि, पाराशर, मार्कण्डेय, अगस्त्य, च्यवन, गर्ग, शिलापाक, अरुणपाल, अकृत, श्रम, दधीचि, उपमन्यु, भारद्वाज, अकृतब्रह्मा, पिप्पलाद, कौशिक, कौत्स इत्यादि ऋषि-मुनियों को शिष्यों के साथ बुलाकर सभी लोक-रीतियाँ कराने की आज्ञा दे दी। तब तो सबने मिलकर भगवान् शंकर की रक्षा-विधान करके ऋग्वेद, यजुर्वेद द्वारा स्वस्तिवाचन किया। फिर विघ्न निवारणार्थ ग्रह-पूजन मण्डप में आये हुए देवताओं के पूजन कराये। इसी प्रकार और भी आलौकिक वैदिक विधि के अनुसार सभी मंगल कार्य करा दिए। इन सबके हो जाने पर श्रीमहादेवजी ने ब्राह्मणों को नमस्कार की तथा उनकी आज्ञा पाकर अपनी बरात सजाकर प्रस्थान किया।

## वर-यात्रा

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! उस समय श्रीमहादवेजी ने नन्दीश्वर आदि गणों को चलने के लिए आज्ञा दी और कई एक गण रक्षा के लिए वहाँ ठहरा दिए गये।

हे नारदजी! उसी समय गणों का स्वामी शंख कर्ण करोड़ों गण साथ लिए चला। केकराक्ष ने दस करोड़ गण अपने साथ कर लिए। विष्टंभ तथा विकृत के साथ आठ-आठ करोड़ गण चले। विसाख ने चार करोड़ गण लिए। इसी प्रकार पारिजात ने नौ करोड़, संवर्तिक तथा विकृतानन ने साठ-साठ करोड़ गण साथ ले लिए। दुन्दुभ ने आठ करोड़, कपालाख्य ने पाँच करोड़, सुन्दारक ने छः करोड़, कन्दक कुण्डल एक-एक करोड़, पिप्पल तथा महाकेश एक-एक हजार करोड़, सनादक एक अरब, चन्द्रतायन तथा अवेशन आठ-आठ करोड़, कुण्ड और पर्वतक बारह-बारह करोड़, काल कालक महाकाल सन्नाह ये चार

**इसी प्रकार सब अंगों में साँप लिपट गये। वे आभूषण बन गये। सारे अंगों पर चिता की भस्म रमा दी गई। वह चमक उठी। वस्त्र के स्थान पर सिंह तथा गज-चर्म शोभायमान हो गया। इस प्रकार के श्रृंगार से सुशोभित होकर भगवान् शंकर दूल्हा बने। विष्णुजी कहने लगे-हे शंकरजी! आप अपना गृह्य-सूत्र की विधि के अनुसार विवाह करें। मण्डप स्थापन नन्दीमुखी श्राद्धादि कुलरीति से करते चलें इसमें आपका यश होगा और लोक भी इसी प्रकार करने लग जायेंगे।**

सौ करोड़, अग्निमुख एक करोड़, आदित्य-मूर्धा, धनावह, कुमद, अमोघ, कोकिल, सुमत्र से सब करोड़-करोड़, काक यादेदर, सन्नाक, महाबल, मधु, पिंगल, नील, पूर्णभद्र ये सब नौ-नौ करोड़, चतुर्दक, करण बीस-बीस करोड़, अहिरोमक, यज्वाक्ष, शतमन्यु करोड़-करोड़, काष्ठागुष्ठ चौंसठ करोड़ गण साथ लेकर चले।

विरूपाक्ष, सुकेश, वृषभ, तालकेतु, षडास्य, चंचास्य, सनातन, संवर्तक, चैत्र, लवुकलीश, लोकाव्तक, दीपात्मा, दैतयाकष्टदेव, भृंगी, रिटि, श्रीमानदेवप्रिय, अशनि, भानु आदि गणों ने चौसठ-चौसठ हज़ार गण साथ लिए। भूत एक अरब, प्रथम तीन करोड़, प्रथम रोमज बीस-बीस करोड़ और वीरभद्र चौसठ हज़ार गण लेकर बारात में चले।

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! इसी प्रकार नन्दी क्षेत्रपाल, भैरवादि गणों ने भी असंख्यों गण साथ ले लिए तो हजारों हाथोंवाले मुकुट माला जटा चन्द्र रेखा वाले नीलकण्ठ त्रिनेत्रधारी, रुद्राक्ष पहने, भस्म रमाए, कुण्डल-कड़ों से सुशोभित ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र के समान अणिमा आदि सिद्धियों से युक्त करोड़ों सूर्यों के समान तेजस्वी आकाश, पृथ्वी, पाताल आदि सभी जगह विचरने वाले ये सम्पूर्ण गण भगवान् शंकर के विवाह उत्सव में आकर चल रहे थे।

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! इस प्रकार बारात के तैयार हो जाने पर भगवान् शंकर सर्पों के आभूषण से भूषित होकर बैल पर सवार होकर हिमाचल के नगर की ओर दूल्हा बनकर चल पड़े। उसके बाद चण्डी सदाशिव की बहिन बनकर सिर पर सोने का कलसा रखकर परिवार के साथ वहाँ पहुँच गई। वह भी अनेकों विलक्षण चरित्र करती हुई सब गणों के आगे-आगे होकर चली। उस समय डमरू, शंख, सींग अनेक नगाड़े आदि बाजे-बजने

**ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! तब परस्पर विचार कर शिवजी से आज्ञा ले विष्णु ने तुमको हिमाचल के घर भेजा। तुम हिमाचल के घर गये। वहाँ जाकर तुमने विश्वकर्मा द्वारा रचित अपनी वह कृत्रिम मूर्ति देखी, जो उसने अपने द्वार पर बनवा रखी थी। उसे देख तुम बड़े आश्चर्यचकित हुए, फिर तुमने हिमाचल के बनाये हुए सभी सुवर्ण के कलश, रम्भा के स्तम्भों से शोभित वह मण्डप देखा**

लगे। सब देवताओं के मध्य में विष्णु चल रहे थे। जिनके सिर पर छत्र था। चमर ढुलाए जा रहे थे, ब्रह्माजी बोले-मैं भी वेद, शास्त्र, पुराण, अगम आदि के साथ सनक आदि सिद्ध तथा प्रजापतियों के साथ-साथ अपने परिवार में मिलकर चल रहा था।

## नारदजी द्वारा हिमाचल का निरीक्षण

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! तब परस्पर विचार कर शिवजी से आज्ञा ले विष्णु ने तुमको हिमाचल के घर भेजा। तुम हिमाचल के घर गये। वहाँ जाकर तुमने विश्वकर्मा द्वारा रचित अपनी वह कृत्रिम मूर्ति देखी, जो उसने अपने द्वार पर बनवा रखी थी। उसे देख तुम बड़े आश्चर्यचकित हुए, फिर तुमने हिमाचल के बनाये हुए सभी सुवर्ण के कलश, रम्भा के स्तम्भों से शोभित वह मण्डप देखा जिसमें रत्नमय हज़ारों कदली के खम्भे खड़े थे और अत्यन्त अद्भुत वेदिका बनी थी। यह सब देखते हुए तुम हिमाचल से मिले और पूछा कि क्या बारात सहित शिवजी अभी नहीं आये।

हिमाचल ने कहा-अभी कोई समाचार नहीं है; परन्तु आशा है कि सर्वज्ञ प्रभु आते ही होंगे। आइये, तब तक चलकर आप भोजनादि से निवृत्त होइये। हे नारदजी! तब तुमने जाकर हिमाचल के साथ भोजन किया और पुनः उसके मेरु आदि पुत्रों को साथ ले उसकी आज्ञा से शिवागमन का मार्ग देखने आये। तब तक इधर से समस्त देवताओं के उस बृहद् समूह एवं बारात सहित शिवजी तुमसे मार्ग में मिले। सब देवताओं और शिवजी ने भी तुमसे हिमाचल के घर की रचना और उनके मन का भाव पूछा। तुमने कहा-सब ठीक है। हिमाचल आपके लिए अपनी कन्या पार्वती को देने के लिए बड़ी रचना एवं बनाव के साथ उत्सुक बैठा आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। यह सुन शंकरजी सहित सब देवता प्रसन्न हो हिमाचल के नगर के निकट जा पहुँचे।

## देवताओं और पर्वतों का मिलाप

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! भगवान् शंकर विष्णु आदि देवताओं के साथ हिमाचल पुर में आ पहुँचे। उनका आगमन सुनकर आनन्दित होकर हिमाचल पर्वतों को साथ लेकर उनकी अगवानी करने पहुँचे। भगवान् शंकर की बारात देखकर हिमाचल चकित हो गये। इसके बाद पूर्व और पश्चिम के समुद्रों के मिलने की भाँति देवता और पर्वत परस्पर मिलने लगे। इसके बाद हिमाचल भगवान् शंकर के पास पहुँचे। इन्हें प्रणाम किया। इसी प्रकार

सब पर्वतों ने प्रणाम किया। उस समय भगवान् शंकर की शोभा निराली थी। हिमाचल ने बारम्बार प्रणाम किया। फिर उनकी आज्ञा लेकर सम्पूर्ण देवताओं को ठहरने के लिए प्रबन्ध किया। फिर वेदी के निकट आकर स्नान किया। इसके बाद पुण्य करके अपने पुत्रों को बुलाकर कहा कि तुम लोग भगवान् शंकर को जाकर प्रार्थना करो कि हमारे पिता हिमाचल अपने बन्धुओं के साथ (चराचर) मिलनी करने को आपका रास्ता देख रहे हैं। इस प्रकार पिता की आज्ञा पाकर हिमाचल पुत्रों ने जाकर भगवान् शंकर को प्रणाम किया और पिता की कही हुई बात जाकर सुना दी। तब भगवान् शंकरजी ने कहा कि तुम जाकर कहो कि वे आ रहे हैं। यह सुनकर हिमाचल के पुत्र चले गये। देवताओं ने सुन्दर श्रृंगार करके हिमाचल के घर को गमन किया। उसी समय हे नारदजी! मैना ने तुमको बुलावा दिया और भगवान् शंकर के दर्शन की इच्छा से मैना तुमसे इस प्रकार कहने लगी।

## शिव की अनुपम लीला

मैना बोली-हे नारदजी! मैं शिव को इस समय देखना चाहती हूँ कि उनका रूप कैसा है। जिन्हें पाने की इच्छा से पार्वतीजी ने कठोर तप किया था। मैं उन्हें देख तो लूँ। यह कहकर तुमको साथ लेकर चन्द्रशाला की ओर चल पड़ीं।

इधर भगवान् शंकरजी मैना के इस प्रकार के अभिमान को जान गये और ब्रह्मा एवं विष्णु से बोले कि मेरी इच्छा है कि तुम लोग सब देवताओं को साथ लेकर अलग-अलग होकर हिमाचल के घर पहुँच जाओ। हम भी अपने गणों के साथ पीछे-पीछे आ रहे हैं, देवताओं ने यह आज्ञा मान ली।

तब देवताओं की सजी-सजाई सेना देखकर मैना अत्यन्त प्रसन्न हुई। उस बारात

**तब देवताओं की सजी-सजाई सेना देखकर मैना अत्यन्त प्रसन्न हुई। उस बारात में सबसे आगे सुन्दर वस्त्र-आभूषणों से सजे हुए गन्धर्व गण अपने-अपने वाहनों पर सवार होकर बाजे बजाते आ रहे थे। उन्हीं के साथ ध्वजा-पताकाएं फहराते हुए उनके गण थे। अप्सराएं नाचती हुई आ रही थीं। उनके पीछे वसु आ रहे थे।**

में सबसे आगे सुन्दर वस्त्र-आभूषणों से सजे हुए गन्धर्व गण अपने-अपने वाहनों पर सवार होकर बाजे बजाते आ रहे थे। उन्हीं के साथ ध्वजा-पताकाएं फहराते हुए उनके गण थे। अप्सराएं नाचती हुई आ रही थीं। उनके पीछे वसु आ रहे थे।

उन्हें देखकर मैना बोली-हे नारदजी! क्या इन्हीं में शिव हैं ? यह सुनकर नारदजी ने कहा-नहीं, ये तो उनके गण हैं। तब मैना ने विचार किया कि जब शिव के गण ही इतने सुन्दर है तो न जाने शिव कितने सुन्दर होंगे? इसके बाद अपनी सेना लेकर मणिग्रीव आये। इसी प्रकार अग्नि, यम, निऋतु, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, इन्द्र आदि क्रम-क्रम से आने लगे।

उतावली होकर मैना ने पूछा-इन्हीं में शिव हैं? तब नारदजी ने कहा कि ये तो शिव के सेवक दिकपाल हैं। चन्द्र और सूर्य भी आये। उन्हें देखकर भी यही प्रश्न किया। नारदजी ने उन्हें सूर्य और चन्द्रमा बताया।

इनके बाद मेघ के समान श्याम सुन्दर करोड़ों काम को जीतनेवाले शोभा सम्पन्न चार भुजावाले, कमलनयन पीताम्बर लहराते, शांत स्वरूप, गरुड़ पर सवार होकर विष्णु आये तब मैना चकित होकर बोल उठीं-हे नारदजी! क्या यही पार्वतीजी के पति हैं? तब नारदजी ने कहा-यह पार्वती के पति नहीं यह तो लक्ष्मी के पति विष्णु हैं। मैना तुम सोच क्या रही हो? त्रिलोकी के नाथ सम्पूर्ण कार्य करनेवाले भगवान् शंकर तो इनसे भी अधिक सुन्दर हैं। मैं उनकी सुन्दरता वर्णन ही नहीं कर सकता।

ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! तब तो मैना अपने भाग्य को सराहने लगी। ये लोग तो शिव के सेवक हैं। जिन्हें मैं अपनी आँखों से देख रही हूँ। इन्हीं के स्वामी मेरी पार्वती के पति हों तो फिर मेरे भाग्य ही सराहने के योग्य हैं।

हे नारदजी! इस प्रकार मैना अभिमान में आकर कह रही थी उसी समय उसका अभिमान दूर करने के लिए अपने अद्‌भुत रूपवाले गणों को साथ ले शिव भी आने लगे। भूत, प्रेत, पिशाचादि, अत्यन्त कुरूप

गणों की सेना आने लगी। उनमें कोई वायु रूप था, किसी की टेढ़ी सूंड थी, किसी के होठ लम्बे थे। किसी की दाढ़ी लम्बी थी, किसी का सिर ही गंजा था, किसी के आँखें नहीं तो कोई नासिकाहीन था, कोई दण्ड पास लिए है तो कोई औंधा होकर चल रहा है, कोई वाहन की पूँछ की ओर मुँह करके बैठा है तो कोई वाहन की गर्दन पर सवार है, कोई सींग, कोई डमरू, कोई गोमुख बजाता हुआ आ रहा है। किसी का मुण्ड नहीं, किसी का रुण्ड नहीं, किसी के अनेकों मुख हैं, किसी के अनेकों आँखें हैं, किसी के अनेकों पाँव हैं, किसी के हाथ नहीं, कोई टूटे हाथवाला है। किसी के कान नहीं हैं, कोई अनेकों कानवाला है। किसी के सिर नहीं, कोई अनेकों सिरवाला है। इसी प्रकार के बड़े कुरूप और भयानक गण आ रहे हैं।

हे नारदजी! तुमने शिव की ओर संकेत करके मैना को कहा। यह सुनते ही मैना भय के मारे काँपने लगी। इतने में उन्हीं के बीच में पाँच मुखवाले, त्रिनेत्रधारी, दस भुजा वाले, अंगों में भस्म रमाए, मुण्ड माला पहिने, बाघम्बर ओढ़े, पिनाक धनुष उठाये, त्रिशूल कन्धे पर रखे, बड़े कुरूप एवं बूढ़े बैल पर चढ़े हुए भगवान् शंकर उसे दिखाई दिये।

नारदजी का इशारा पाकर मैना तो अत्यन्त डर गई। तब तुमने उसे समझाकर कहा-हे मैना देवी! यह शिव ही तुम्हारी कन्या के पति हैं। ब्रह्माजी बोले-हे नारदजी! तुम्हारा वचन सुनते ही तेज वायु के झकोरे लगने से टूटी लता के समान मैना दु:ख से काँप कर पृथ्वी पर धड़ाम से गिर पड़ी और मूर्छित हो गई।

## मैना-प्रबोधन

ब्रह्माजी बोले-जब मैना कुछ सचेष्ट हुई तब अत्यन्त क्षुभित होकर विलाप और तिरस्कार की बातें करने लगीं। पहले तो

**ब्रह्माजी बोले-जब मैना कुछ सचेष्ट हुई तब अत्यन्त क्षुभित होकर विलाप और तिरस्कार की बातें करने लगीं। पहले तो उन्होंने व्याकुल होकर अपने पुत्रों की निन्दा की, फिर अपनी पुत्री को दुर्वचन कहना आरम्भ किया। मैना ने नारदजी से कहा-हे मुने! पहले तुमने कहा कि पार्वती शिव को वरेगी।**

उन्होंने व्याकुल होकर अपने पुत्रों की निन्दा की, फिर अपनी पुत्री को दुर्वचन कहना आरम्भ किया। मैना ने नारदजी से कहा-हे मुने! पहले तुमने कहा कि पार्वती शिव को वरेगी, इसी से पर्वतराज ने इससे शिव की पूजा कराई। वास्तव में यह उसी का अनर्थकारी फल दिखाई पड़ा। रे अधम मुनि! रे दुर्बुद्धे! तूने सर्वथा ही मुझे ठग लिया। हाँ, क्या करूँ और कहाँ जाऊँ? कौन मेरा दु:ख छुड़ाएगा? हाँ, मेरा कुल आदि सब कुछ नष्ट हो गया। मेरा जीवन नष्ट हो गया। पता नहीं कि दिव्य महर्षि कहाँ चले गये। मैं उनकी दाढ़ी उखाड़ लूँगी। उस वशिष्ठ की तपस्विनी पत्नी सचमुच बड़ी धूर्ता निकली। मैंने ऐसा किसका अपराध किया था जो आज मेरा सर्वस्व लूट गया।

ऐसा कहकर वह पुत्री की ओर देख उसे कटु वचन कहने लगीं। रे दुष्ट पुत्री! तूने मुझे दु:ख देनेवाला यह क्या काम किया, जो तुम दुष्टा ने सुवर्ण देकर काँच खरीद लिया। हाँ, तूने चन्दन छोड़ कीच को लपेट लिया। हंस को उड़ा हाथ में कौए को पकड़ लिया। तूने गंगाजल छोड़कर कुएं का जल पिया। सूर्य को छोड़ जुगनू पकड़ा। तण्डुलों को छोड़ तुष का भक्षण किया। सिंह को छोड़ श्रृंगाल को पाला तथा ब्रह्म-विद्या को त्याग कुत्सित गाथाएं सुनीं। हे पुत्री! तूने घर की मांगलिक यज्ञ-विभूति को छोड़कर अमांगलिक चिता की भस्म को ग्रहण किया। विष्णु जैसे परमेश्वर और सम्पूर्ण देवताओं को छोड़कर तूने अपनी बुद्धि से शिव के लिए ऐसा तप किया। तेरी ऐसी बुद्धि और रूप तथा चरित्र को धिक्कार है। तेरी सखियों को धिक्कार है और तुझे जन्म देनेवाले हम दोनों को भी धिक्कार है। हे नारद! तुम्हारी बुद्धि तथा सुबुद्धि देनेवाले सप्तर्षियों को भी धिक्कार है। तूने मेरा घर नष्ट कर दिया। अब तो मैं अवश्य ही मर जाऊँगी। अब यह पर्वतराज मेरे निकट न आयें और सप्तर्षि लोग मुझे मुँह न दिखायें। हाँ, इन्हें

क्या मिल गया जो इन सबने मिलकर मेरा कुल नष्ट कर दिया? मैं बन्ध्या क्यों न हो गई? मेरा गर्भ ही क्यों न गिर गया अथवा मैं मर ही क्यों न गई अथवा यह पार्वती ही क्यों न मर गई अथवा आज आकाश में किसी राक्षस ने ही इसे क्यों नहीं खा लिया? हे मुने! अभी तेरा सिर काट लूँगी। शरीर रख कर ही क्या होगा? हाँ, मैं तुझे छोड़कर कहाँ जाऊँ? हाँ, मेरा तो जीवन ही नष्ट हो गया। ब्रह्माजी कहते हैं-ऐसा कहकर मैना मूर्छित हो फिर पृथ्वी पर गिर पड़ीं तथा शोक और क्रोध से सन्तप्त हो अपने पति के पास गईं। फिर तो बड़ा हाहाकार मच गया। सभी देवता क्रम से उनके निकट जाने लगे। सबसे पहले मैं पहुँचा। हे नारद! तब मुझे देखकर तुम उससे कहने लगे-क्या तूने पहले शिवजी के स्वाभाविक सौन्दर्य को नहीं जाना था, जो उन्होंने लीला करने के लिए धारण किया? हे पतिव्रते! क्रोध त्याग कर स्वस्थ हो जाओ और हठ छोड़कर कार्य करो तथा शिवजी के लिए पार्वती को दे दो।

तब तुम्हारी यह बात सुनकर मैना ने तुमसे कहा-यहाँ से हट जाओ। तुम बड़े दुष्ट तथा अधम शिरोमणि हो। तब उसके ऐसा कहने पर इन्द्रादिक लोकपालों ने कहा कि हे बहिन मैनके! तुम प्रसन्न होकर हमारे वचन सुनो। तुम्हारी पुत्री का कठिन तप देखकर भगवान् शंकर ने उसे वर दिया है। वह अन्यथा नहीं होगा। इस पर मैना ने बार-बार रोते हुए कहा कि मैं उस उग्र रूपधारी शिव को अपनी कन्या नहीं दूँगी। तुम सब देवता प्रपंच न फैलाओ। उसके ऐसा कहते ही वशिष्ठादि सप्तर्षि वहाँ आकर बोले-हे पितृकन्ये! हे पर्वतराज प्रिये! हम सब तो तुम्हारे हितैषी हैं। फिर आप से विरुद्ध कार्य कैसे कर सकते हैं? क्या यह कोई कम लाभ है जो शिव का दर्शन हुआ और वे तुम्हारे घर दानक पात्र

**तब तुम्हारी यह बात सुनकर मैना ने तुमसे कहा-यहाँ से हट जाओ। तुम बड़े दुष्ट तथा अधम शिरोमणि हो। तब उसके ऐसा कहने पर इन्द्रादिक लोकपालों ने कहा कि हे बहिन मैनके! तुम प्रसन्न होकर हमारे वचन सुनो। तुम्हारी पुत्री का कठिन तप देखकर भगवान् शंकर ने उसे वर दिया है। वह अन्यथा नहीं होगा।**

बन कर आये? मैना तो ज्ञान-शून्य हो रही थीं, उन्होंने ऋषियों के वाक्यों को व्यर्थ कर दिया और कहा-मैं पार्वती को शस्त्र से मार दूँगी, किन्तु शिव के लिए नहीं दूँगी। तुम सब दूर चले जाओ और मेरे पास मत आओ।

इस वृत्तान्त से वहाँ हाहाकार मच गया। हिमाचल उसे समझाने आये। उन्होंने कहा-हे प्रिये! क्या तू नहीं जानती कि तेरे घर कौन-कौन आये हैं? तू उनकी निन्दा न कर। शिवजी के एक ही रूप नहीं हैं जिसे देखकर तुम व्याकुल हो रही हो। उनके और भी दिव्य रूप हैं। वे निग्रह-अनुग्रह करने वाले तथा पूज्यों के भी पूज्य हैं। दु:ख त्यागकर उठो और शीघ्र ही सब कार्य करो। तुमको खिझाने के लिए ही लीलाधारी शम्भु ने यह विकट रूप धारण किया है। किन्तु उनका परम माहात्म्य देखकर ही मैंने और तुमने उन्हें अपनी कन्या देना स्वीकार किया था। अत: उठो और उन्हें प्रणाम करो।

इस पर मैना ने कहा-हे नाथ! तुम मेरे वचन सुनो और वैसा ही करो। क्योंकि तुम योग्य हो। पार्वती का गला बाँधकर नि:शंक हो नीचे गिरा दो। मैं शंकर के लिए कन्या नहीं दूँगी अथवा निर्दय होकर इस कन्या को ले जाकर समुद्र में डुबो दो और सुखी हो जाओ। परन्तु मैं इस विकट रूपधारी शंकर को अपनी पुत्री नहीं दूँगी। यदि तुम दोगे तो निश्चय ही मैं अपने प्राणों को त्याग दूँगी। जब मैना ने इस प्रकार के वचनों में हठ पकड़ लिया तब पार्वती स्वयं ही आकर उनसे यह मनोहर वचन बोलीं कि हे माता! तुम्हारी शुद्ध बुद्धि विपरीत क्यों हो गई? तुम तो एक परम धर्मज्ञा थीं। फिर धर्म को क्यों त्यागती हो? यह रुद्र तो परम प्रभु साक्षात् ईश्वर हैं। यह भगवान् शंकर तो सबके प्रभु और स्वयं एक ऐसे राजा हैं जिनकी ब्रह्मा, विष्णु आदि सभी उपासना करते हैं। इससे बढ़कर और कौन-सा सुख है। अतएव उठो और अपने जीवन को सफल करो। हे माता!

तुम परमेश्वर शंकर के लिए मुझको दो। मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करो। यदि तुम मुझे शंकर के लिए नहीं दोगी तो मैं अन्य वर का वरण नहीं करूँगी। भला सिंह के भाग को श्रृंगाल कैसे पा सकता है? मैं तो मन, कर्म और वाणी से शंकरजी को वर चुकी हूँ। आगे तुम्हारी जैसी इच्छा हो वह करो।

पार्वती के इन वचनों को सुन कर हिमाचल की स्त्री मैना के क्रोध का अन्त न रहा। वे बहुत विलपती हुई पार्वती को पकड़कर, क्रोध से दाँतों को पीसती हुई मुट्ठी तथा पहुँचों से उसे प्रताड़ित करने लगीं। ऋषियों ने मैना के हाथ से छीनकर पार्वती को अलग किया। मैना ऋषियों को दुर्वचन कह फटकारने लगीं और कहा कि मैं इस शिवा को लेकर क्या करूँगी? अब इसे या तो विष दे दूँगी या कुएं में डाल दूँगी। परन्तु इस भयंकर रूपवाले शंकर को अपनी कन्या न दूँगी। इस दुष्टा ने कैसा भयंकर वर वरण किया है। हा, इसने मेरा और गिरिराज का उपहास कराया है। भला जिसके माता-पिता, गोत्रज, भाई-बन्धु, स्वरूप, चातुर्य और घर कुछ भी नहीं तथा जिसके पास कोई वस्त्र और अलंकार तक नहीं है, न उसका कोई सहायक है, न सुन्दर वाहन, न अवस्था और न कुछ धन ही है और न पवित्रता, न विद्या ही है तथा जिसका शरीर भी सर्वथा ही दु:खित है, उसे मैं अपनी सुमंगली पुत्री कैसे दूँ? हे मुनीश्वर! ऐसा कहकर मैना दु:ख और शोक से व्याकुल होकर उच्च स्वर से विलाप करने लगीं।

तब मैं (ब्रह्मा) शीघ्र ही मैना के पास गया और शोकहारी शिवतत्त्व का वर्णन करने लगा। साथ ही यह भी कहा कि तुम इस बुरे हठ को छोड़ पार्वती को शिव के लिए दे दो। तब बार-बार विलाप करती हुई मैना ने मुझसे कहा कि हे ब्रह्मन्! आप

**तब मैं (ब्रह्मा) शीघ्र ही मैना के पास गया और शोकहारी शिवतत्त्व का वर्णन करने लगा। साथ ही यह भी कहा कि तुम इस बुरे हठ को छोड़ पार्वती को शिव के लिए दे दो। तब बार-बार विलाप करती हुई मैना ने मुझसे कहा कि हे ब्रह्मन्! आप इसके श्रेष्ठ रूप को विफल क्यों करते हैं?**

इसके श्रेष्ठ रूप को विफल क्यों करते हैं? यदि ऐसा ही है तो अपने ही हाथ से इसे मार क्यों नहीं देते? आप इस शिव के लिए एक वाक्य भी न कहें। मैं पार्वती को शिव के लिए नहीं दूँगी। क्योंकि मेरी पार्वती मुझे प्राणों से भी प्यारी है। हे मुनीश्वर! इसके पश्चात् सनकादिकों ने भी मैना को समझाया और विष्णु ने शिवतत्त्व निरुपण कर शिवजी की महानता प्रकट करते हुए कहा कि सब कुछ शिवमय है। इसमें कुछ अन्य विचार क्या करना? अब वही परम पुरुष तुम्हारे द्वार पर आये हैं, इसलिए तुम दु:ख त्याग शिवजी का भजन करो। तुम्हें बड़ा आनन्द प्राप्त होगा और क्लेश नाश हो जायेंगे। हे मुनीश्वर! जब विष्णुजी ने इस प्रकार बहुत कुछ कहकर मैना को समझाया तब मैना का चित्त कुछ कोमल हुआ और उसने शिव को कन्या न देने का हठ छोड़ दिया, परन्तु फिर गिरिप्रिया कुछ रोष से विष्णुजी से इस प्रकार बोलीं कि यदि शंकर का शरीर मनोहर हो जाए तो मैं अपनी कन्या उन्हें दे सकती हूँ अन्यथा कोटि यत्न करो तो भी कन्या शंकर को नहीं दूँगी, यह मैं सत्य कहती हूँ और मैं इस पर सर्वथा ही दृढ़ हूँ। ऐसा कहकर दृढ़व्रता मैना चुप हो गईं। इसके आगे और क्या सुनना चाहते हो?

**-शेष अगले अंक में -क्रमशः**

**किसी का भरोसा करते समय इतना जरूर ध्यान रखें कि मिश्री और फिटकरी एक जैसी होती है।**

# चौथा अध्याय

कर्म और फल की आसक्ति त्याग किया करता है जो।
जग आश्रय से रहित तृप्त परमात्मा में रहता है जो।।
वह करके भी रहे अकर्ता, वह तो सच्चा ज्ञानी है।
समझो उसने कर्मफलों की रीति-नीति पहचानी है।।

इच्छारहित सदा संतोषी हर्ष-शोक में रहे समान।
सिद्धि-असिद्धि सभी में सम हो, कर्मबंध से पाता त्राण।।
यज्ञ-अग्नि-आहुति क्रिया का फल भी सब ब्रह्मार्पित है।
योगी स्व में स्थित रहता, कामरहित समर्पित है।।

सभी इंद्रियों के कर्मों को ज्ञानअग्नि में करे हवन।
परमात्मा के सिवा किसी का नहीं करे पलभर चिंतन।।
यज्ञकर्म करने वाले ऐसे मनुष्य के कर्म सभी।
होते विलीन, वह जान लिया है धर्म-कर्म के मर्म सभी।।

अहंकार-ममता के त्यागी अनासक्त जो प्राणी है।
परमात्मा में चित्त लगाये रहता जो भी ज्ञानी है।।
उसके कर्म अकर्म बनें यदि वह ब्रह्मार्पित हो जाये।
बंधनकारी कर्मफलों के परिणामों से वह बच जाये।।

ब्रह्मार्पित सब यज्ञकर्म ही ब्रह्मरूप हो जाते है।
कर्त्ता, कर्म, क्रिया या फल सब ही तो ब्रह्म कहाते है।।
यज्ञ कर्मकर्त्ता, योगी का फल भी होता ब्रह्म समान।
इसको जो जाने वह पा जाता है पावन सच्चा ज्ञान।।

अर्पण, स्रुवा, हवन, यज्ञ के सभी द्रव्य हैं ब्रह्मस्वरूप।
याज्ञिक, अग्नि, आहुति देना, सब हो जाते हैं तद्रूप।।
ऐसे ज्ञानी का जीवन ही हो जाता है पूर्ण ब्रह्ममय।
वह भी तो वह ही है, उसमें उसका भी हो जाता है लय।।

कुछ साधक ऐसे भी जो रहते गृहस्थ के जीवन में।
क्रियायोग के पथ पर चलते रखकर ईश्वर को मन में।।
ऐसे पथ के साधक योगी प्राणायाम किया करते हैं।
प्राण-अपान पवन की समिधा दान किया करते है।।

कुछ योगीगण देवयज्ञ का भी विधान करते हैं।
अन्य दूसरे परमात्मा का ध्यान किया करते हैं।।
स्वयं ब्रह्मा हैं, अग्नि ब्रह्मा है, आत्मयज्ञ वे करते हैं।
ब्रह्मअग्नि में आत्महवन कर ब्रह्मलीन वे रहते हैं।।

कई अन्य इन्द्रिय विषयों का हवन करें संयम से।
आत्महवन करते रहते हैं निष्ठा और नियम से।।
सभी इंद्रियों के कर्मों की ऊर्जा जलती रहती है।
इंद्रियनिग्रह क्रिया सदा अन्तर में चलती रहती है।।

प्राणायाम-परायण योगी रोकें प्राण-अपान को।
ब्रह्मयज्ञ में हवन किया करते हैं अपने प्राण को।।
ऐसे साधक परमब्रह्म परमात्मा को पा जाते है।
लोक और परलोक पार कर अमरलोक को पाते है।।

-क्रमशः

# रामायण का सत्संग

**स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज**

**आँखें दीपक हैं। तुम आँखरूपी प्रकाश में कूड़ा-करकट देखते हो कि श्रीराम को देखते हो ? तुम आँख किसको देते हो ? तुम जगत को आँख किस भाव से देते हो ? जिसको आँख देते हो, वह तुम्हारे मन के अन्दर आता है। ज्ञानी पुरुष जगत को उपेक्षा-भाव से देखते हैं, अपेक्षात्मक दृष्टि परमात्मा में ही रखते हैं। जगत को उपेक्षा-भाव से देखो।**

आँखें दीपक हैं। तुम आँखरूपी प्रकाश में कूड़ा-करकट देखते हो कि श्रीराम को देखते हो ? तुम आँख किसको देते हो ? तुम जगत को आँख किस भाव से देते हो ? जिसको आँख देते हो, वह तुम्हारे मन के अन्दर आता है। ज्ञानी पुरुष जगत को उपेक्षा-भाव से देखते हैं, अपेक्षात्मक दृष्टि परमात्मा में ही रखते हैं। जगत को उपेक्षा-भाव से देखो। अपेक्षात्मक दृष्टि परमात्मा के स्वरूप में रखो।

भक्ति में आँख मुख्य हैं। आँख सुधरने के बाद ही भक्ति का सही आरम्भ होता है। जिसको स्त्री में सौंदर्य दीखता है, जिसको पुरुष का शरीर सुन्दर लगता है, वह क्यों भगवान की भक्ति करता है ? अरे, वह तो संसार की भक्ति करता है। आँख न बिगड़े तब तक मन बिगड़ता नहीं। रावण की आँख बिगड़ी, रावण का मन बिगड़ा, रावण की वाणी बिगड़ी। रावण का समस्त जीवन बिगड़ गया। अधिक तो क्या कहें- हजारों वर्ष हो गये रावण का नाम भी बिगड़ गया। लोग अपने बालक का नाम राम रखते हैं परन्तु किसी को भी रावण का नाम रखना पसन्द नहीं। किसी ने भी 'रावण भाई' नाम रखा हो ऐसा सुना नहीं। रावण के नाम से भी घृणा आती है। रावण का नाम लेना पसन्द नहीं। रावण जैसा कोई दुष्ट नहीं और वह रामजी के दर्शन करके भी सुधरा नहीं। परन्तु कोई रावण जैसा हो और वह रामायण की कथा का श्रवण करे, रामायण का सत्संग करे, राम-नाम का जप करे तो वह अवश्य ही सुधरेगा।

परमात्मा का कथामृत अलौकिक है। मानव को इन्द्रियाँ त्रास न दें, इस कारण ही परमात्मा ने कृपा करके यह दो अमृत जगत् को दिए हैं। जब-जब मन में विषय प्रवेश करें, पाप प्रवेश करें, तब-तब नामामृत अथवा कथामृत का आश्रय लेने से मानव इन्द्रियों के त्रास से त्राण पा जाता है। राम-कथा अमृत है, राम-नाम अमृत है। प्रभु का नाम अमृत से भी मधुर है। कथामृत पाप को जलाता है, जीवन को सुधारता है।

सबका भक्षण करनेवाला जो काल है, उसका भक्षण करनेवाले श्रीरामजी हैं। रावण को मारने के लिए रामजी को इतनी खटपट, जीवों को प्रभु का मार्ग बताती है, अनेक जीवों का कल्याण करती है।

कितने ही लोग रोज मन्दिर में जाकर दर्शन करते हैं और बाहर जाकर पाप भी करते हैं। ऐसे लोग दर्शन करते हैं, फिर भी उनका स्वभाव सुधरता नहीं। मानव का व्यवहार जबतक शुद्ध नहीं होता, तबतक उसे भक्ति में आनन्द नहीं आता। भक्ति बहुत करते हैं परन्तु व्यवहार शुद्ध नहीं रखते, इससे भक्ति में जो आनन्द मिलना चाहिए, वह नहीं मिलता। व्यवहार में पाप करे, दम्भ करे, उससे भक्ति का जैसा फल मिलना चाहिए वैसा फल नहीं मिलता।

कितने ही लोग मानते हैं कि व्यवहार में थोड़ी भूल होती ही है और पाप भी करना पड़ता है। व्यवहार में थोड़ा पाप हो जाए तो बड़ा दोष नहीं कहलाता। मन्दिर में जाकर थोड़ी भेंट रख दे, दर्शन कर ले, उससे भगवान सब पाप भस्म करता हूँ कि तुझे धिक्कारता हूँ। मन्दिर में तुम दर्शन करो, भेंट धरो, इससे भगवान तुम्हारे पापों को भस्म कर देंगे- यह कल्पना बिल्कुल खोटी है।

व्यवहार में पाप करना ही पड़े, ऐसा नहीं है। निष्पाप होकर भी व्यवहार हो सकता है। तुम अधिक भक्ति न करो तो कोई बाधा नहीं, परन्तु व्यवहार को शुद्ध रखो, पाप छोड़ो। पाप को कभी साधारण गिनों नहीं। साधारण चिनगारी भी किसी समय सब कुछ जलाकर भस्म कर देती है। पाप, अग्नि, शत्रु, रोग और ऋण- ये साधारण नहीं होते। साधारण पाप किसी समय बहुत बड़ा अनर्थ कर देता है। मेरे हाथ से बिल्कुल पाप न हो, ऐसी इच्छा हो तो सबमें परमात्मा को देखने की आदत डालो।

पाप किसे कहते हैं ?

चोरी, हिंसा, व्यभिचार आदि तो महापाप हैं ही। ये साधारण पाप नहीं है। जगत में सर्वत्र वैधानिक रूप से इनको अपराध माना गया है धर्म-दृष्टि से इनको पाप माना गया है। इनके अलावा भी दूसरे पाप हैं।

ज्ञानी पुरुष भेद-दृष्टि को पाप मानते हैं। ज्ञानी पुरुष अद्वैतभाव से स्थित होते हैं। वे ऐसा

मानते हैं कि मेरे अन्दर जो शुद्ध चेतन आत्मा है, वही सबमें भी है। वे सबमें स्वयं को और स्वयं में सबको देखते हैं।

सर्वंभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।

जहाँ भेद है, वहीं भय है। राग-द्वेष है। ज्ञानी पुरुष जगत को अभिन्न भाव से देखते हैं। ज्ञान-मार्ग में एक ही सत्ता है, ईश्वर-तत्त्व एक ही है, और वह सबमें विलास करता है। जो भेद दिखाई देता है, वह माया के कारण दीखता है।

आकाश में सूर्यनारायण एक ही हैं, परन्तु भवन को छत पर यदि तुम अनेक घड़ों में पानी भरकर रखोगे तो प्रत्येक घड़े में तुमको अलग-अलग सूर्यनारायण दीखेंगे। घड़े में सूर्य दीखते हैं क्या वह सत्य हैं? घड़े में डाला हुआ पानी बाहर निकाल दो और फिर देखो। इसमें जो सूर्यनारायण थे, वह कहाँ गये? घड़े में सूर्य था, ऐसा बोलना भी उचित नहीं। घड़े में जो दीखता था, वह तो प्रतिबिम्ब था। सूर्य एक ही है परन्तु जल की उपाधि से जैसे अनेक रूपों में भासता है, वैसे ही अन्त:करण की उपाधि से एक हो परमात्मा-तत्त्व अनेक रूपो में भासता है। ज्ञान-मार्ग में भेद-दृष्टि ही पाप है। जहाँ भेदभाव आया, वहाँ ही समस्त विकार जगते हैं, भय उत्पन्न होता है, मोह उत्पन्न होता है।

भक्ति-मार्ग में श्रीराम का, श्रीकृष्ण का विस्मरण ही पाप है। परमात्मा का जिस क्षण में विस्मरण होता है, उसी क्षण पाप होता है। श्रीधरस्वामी पाप की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि जो परमात्मा से दूर ले जावे, जो लक्ष्य को भुलावे, वही पाप है। जाना है परमात्मा के चरणों में और पाप ले जाता है जन्म-मरण के चक्कर में। कर्म-मार्ग में धर्म का त्याग पाप माना गया है। जिसके लिए जो धर्म प्रभु ने निश्चित किया है, यदि वह व्यक्ति परमात्मा की आज्ञा को भंग करे, अपने कर्त्तव्यप्ार बराबर आरूढ़ न रहे और धर्म का पालन न करे, तो कर्म-मार्ग में इसे पाप माना गया है।

ज्ञान-मार्ग में दृष्टि-भेद पाप है, भक्ति-मार्ग में प्रभु-विस्मरण और कर्म-मार्ग में स्वधर्म का त्याग पाप है। वाह्य रूप से देखने में इनमें परस्पर भेद जैसा दीखता है परंतु सिद्धांत एक ही है। पाप से बचना हो तो सबमें भगवद्भाव रखो, सबमें भगवद्भाव रखकर व्यवहार करो।

**सब में एक ही प्रभु विराजे हैं, ऐसा समझकर व्यवहार करोगे तो व्यवहार भी भक्ति बनेगा। स्वामी रामदासजी ने 'दास-बोध' में लिखा है कि जिसको व्यवहार करना नहीं आता, वह भक्ति नहीं कर सकता। व्यवहार और भक्ति को अलग मत मानो। ईश्वर चैतन्य-रूप से सबमें हैं, ऐसा अनुभव करने की आदत डालो। ऐसी आदत जिसकी पड़ जाएगी, उसकी प्रत्येक क्रिया भक्तिमय और ज्ञानमय बनेगी।**

सब में एक ही प्रभु विराजे हैं, ऐसा समझकर व्यवहार करोगे तो व्यवहार भी भक्ति बनेगा। स्वामी रामदासजी ने 'दास-बोध' में लिखा है कि जिसको व्यवहार करना नहीं आता, वह भक्ति नहीं कर सकता। व्यवहार और भक्ति को अलग मत मानो। ईश्वर चैतन्य-रूप से सब में हैं, ऐसा अनुभव करने की आदत डालो। ऐसी आदत जिसकी पड़ जाएगी, उसकी प्रत्येक क्रिया भक्तिमय और ज्ञानमय बनेगी। परमात्मा की आज्ञा समझकर जो व्यवहार करता है, स्वधर्म का पालन करता है, उसकी बुद्धि में ज्ञान आ जाता है, उसके हृदय में भक्ति बसती है, उससे पाप दूर भागते हैं।

व्यवहार में पाप करना नहीं। किसी को धोखा देना नहीं, किसी जीव के साथ कपट करना नहीं। पाप एक दिन प्रकट हो जायेगा। पाप और पारा फूटे बिना नहीं रहते, वे कभी गुप्त रह ही नहीं सकते। कितने ही मनुष्य दूसरों के साथ प्रेम करते हैं परन्तु भाई के साथ कपट करते हैं। उनको ऐसा लगता है कि भाई को क्या खबर पड़ेगी? अरे, आज नहीं पड़ेगी तो साल दो साल चार साल बाद किसी दिन तो उसको खबर पड़ती ही है। जिसके व्यवहार में कपट है, उसको भक्ति में आनन्द नहीं आता। जो धन के लिए कपट करता है, उसको भक्ति में आनन्द नहीं आता। पैसा तुम्हारे भाग्य में जितना लिखा है, उतना ही तुमको मिलना है। पाप करने से अधिक पैसा मिलेगा, यह कल्पना गलत है। अनेक बार मनुष्य समझता है कि मैंने झूठा व्यवहार किया, तो आज मुझे अधिक लाभ हुआ। अरे, तुझे लाभ हुआ वह झूठ बोलने से नहीं हुआ। तेरे प्रारब्ध में आज जो लाभ लिखा था, वही तुझे मिला है। परन्तु झूठ बोलने का पाप तेरे माथे आ गया।

पैसा प्रारब्ध-प्रमाण से ही मिलता है। शास्त्र में लिखा है कि सम्पत्ति, सन्तति और संसार सुख ये पूर्व जन्म में किए हुए कर्मानुसार ही निशिचत किए गये हैं। पूर्व जन्म में किए हुए कर्मों के अनुसार सम्पत्ति मिलती है, पूर्व जन्म के कर्मानुसार ही संसार सुख और सन्तति प्राप्त होती है। मनुष्य ऐसा समझता है कि मैं पाप करूँ तो सुखी रहूँगा। पाप करने से कोई सुखी हुआ नहीं। तुम अधिक भक्ति न करो तो बाधा नहीं, परन्तु व्यवहार में पाप न करो। व्यवहार को अतिशय शुद्ध रखोगे तो मन पवित्र रहेगा और मन पवित्र होगा तो तुम्हे भक्ति में आनन्द आवेगा ही। भक्ति में तन और धन ये गौण हैं। मन मुख्य है। मन बिगड़े तो भक्ति करने पर भी मनुष्य को भक्ति में आनन्द नहीं आता।

व्यवहार को शुद्ध रखने के लिए रामायण का सत्संग करो। तुम अपना कर्त्तव्य विधिवत्

पूरा करो। रामायण में पूर्ण वर्णन है कि स्त्री-धर्म क्या है ? स्त्री का कर्त्तव्य क्या है ? माता-पिता का कर्त्तव्य क्या है ? गुरु का कर्त्तव्य क्या है ? शिष्य का कर्त्तव्य क्या है ? समाज धर्म कैसा है ? राज्य धर्म कैसा है ? रामायण की कथा ऐसी है कि जीवमात्र को धर्म का बोध कराती है।

रामायण का प्रत्येक पात्र अति दिव्य है। मानव स्वयं का हक माँगता है, स्वयं का भाग माँगता है परन्तु उसे स्वयं का कर्त्तव्य पूरा करने की इच्छा नहीं होती। वह विचारता नहीं कि मेरा कर्त्तव्य क्या है ? क्या मैं अपने कर्त्तव्य की पूर्ति करता हूँ ? जो स्वयं के कर्त्तव्य का भी पालन न करे, उसको भाग लेने का क्या अधिकार है ? माता-पिता की सम्पत्ति लेने की इच्छा है, परन्तु पुत्र होकर माता-पिता की सेवा करने की इच्छा मन में होती नहीं। बाप का सब कुछ ले लेना चाहता है, परन्तु बाप की सेवा करने में शर्म आती है।

रामायण में सब कुछ आता है। चाहे जैसा जीव हो, वह रामकथा सुने तो उसे मार्गदर्शन मिलता है। रामकथा की महिमा का वर्णन कौन कर सकता है ? रामकथा का एक-एक अक्षर बोधमय है। देश के लिए कोई प्राणों का त्याग करे, यह ठीक है। परन्तु देश के लिए दिव्य जीवन व्यतीत करे, यह अधिक ठीक है। दिव्य जीवन बनाना हो तो रामायण का सत्संग करो, रामजीका दर्शन करो, रामजी की सेवा करो।

जगत में श्रीराम जैसा पुत्र हुआ नहीं, दशरथ महाराज जैसा पिता हुए नहीं। जब श्रीराम वन में गये। तब दशरथ महाराज अंतिम श्वास तक रामजीका स्मरण करते रहे। दशरथ महाराज बार-बार कौशल्या से पूछते हैं कि मेरा राम कहाँ है ? मुझे रामजी को देखना है। जिस समय यहाँ थे, उस समय मैंने उन्हें अच्छी तरह नहीं देखा था। मेरे राम के पास मुझे ले जाओ। राम के बिना मैं जीवित रह नहीं सकता। रामजी के बिना दशरथ महाराज जीवित रहे नहीं। रामजी वन में गये, उसी के साथ दशरथ महाराज ने प्राण छोड़ दिये। रामायण का एक-एक पात्र दिव्य है, अद्वितीय है।

श्रीराम जैसा पुत्र नहीं हुआ।
दशरथ जैसे पिता नहीं हुए।
कौशल्या जैसी माता नहीं हुई।
लक्ष्मण-भरत जैसे भाई नहीं हुए।
रामजी जैसा पति नहीं हुआ।
सीता जी जैसी पत्नी नहीं हुई।
वशिष्ठ जी जैसे गुरु नहीं हुए।
रावण जैसा शत्रु नहीं हुआ।
हनुमानजी जैसा सेवक नहीं हुआ। ❑

**रामायण में सब कुछ आता है। चाहे जैसा जीव हो, वह रामकथा सुने तो उसे मार्गदर्शन मिलता है। रामकथा की महिमा का वर्णन कौन कर सकता है ? रामकथा का एक-एक अक्षर बोधमय है। देश के लिए कोई प्राणों का त्याग करे, यह ठीक है। परन्तु देश के लिए दिव्य जीवन व्यतीत करे, यह अधिक ठीक है।**

## डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

**दीपावली त्योहार का दिन था, एक छोटा मुस्लिम बालक भी हिन्दुओं का यह उल्लासपूर्ण पर्व मनाना चाहता था, लेकिन वह बहुत गरीब था और चूँकि अखबार बेचकर वो बेचारा अपनी पढ़ाई का खर्च जुटाता था और दो पैसे की मदद अपने गरीब बाप की भी किया करता था, अतः उसके पास पर्याप्त पैसों की कमी थी। संयोगवश उस दिन उसने अखबार बेचकर अन्य दिनों की अपेक्षा पाँच पैसे ज्यादा कमाये। तब वह पटाखे वाले के पास जाता है और उससे एक रॉकेट की माँग करता है, परन्तु वह विक्रेता रॉकेट देने से मना कर देता है। यह कहते हुए कि पाँच पैसे में रॉकेट नहीं आता है। बालक निराश हो जाता है और दुकानदार से कहता है, 'अच्छा मुझे पाँच पैसे के खराब पटाखे ही दे दो?' 'खराब मतलब? वे किस काम आयेंगे?' 'मैं उनसे रॉकेट बना लूँगा?' इसके बाद वह पाँच पैसे में ढेर सारे खराब पटाखों का कूड़ा उठा लाया और एक नहीं कई रॉकेट बनाये और उस दिन उसके गाँव में मुस्लिम मोहल्ले में गगन की दूरी नापने वाले दीवाली के रॉकेट केवल उस बालक के आँगन से ही छोड़े गये थे। वह बालक ही आगे चलकर मिसाइल-मैन के नाम से प्रसिद्ध हुआ और बाद में वह बालक भारत का राष्ट्रपति भी बना। उस बालक का नाम ए. पी. जे. अब्दुल कलाम था। यदि मन में कुछ करने की तीव्र इच्छा हो तो आप अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग कर के प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना सकते हैं।**

# किन परिस्थितियों में व्यक्ति को नींद नहीं आती

**कौशल पाण्डेय**

महाभारत युद्ध शुरू होने से पहले की बात हैं, जब हस्तिनापुर के दूत संजय पांडवों का सन्देश लेकर आये थे और अगले दिन सभा में उनका सन्देश सुनाने वाले थे।

उसी रात महाराज धृतराष्ट्र बहुत व्याकुल थे और उन्हें नींद नहीं आ रही थी, तब उन्होंने महामंत्री विदुर को बुलवाया। कुछ समय पश्चात महामंत्री विदुर राज महल में महाराज के सामने पहुंच गए।

धृतराष्ट्र ने विदुर से अपने व्याकुल मन की व्यथा बताई और कहा कि जब से संजय पांडवों के यहां से लौटकर आया है, तब से मेरा मन बहुत अशांत है। संजय कल सभा में सभी के सामने क्या कहेगा, यह सोच- सोचकर मन व्यथित हो रहा है और नींद नहीं आ रही है।

यह सुनकर विदुर ने महाराज से महत्वपूर्ण नीतियों की बात कही और कहा कि जब किसी व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष दोनों के जीवन में ये चार बातें होती हैं, तब उसकी नींद उड़ जाती है और मन अशांत हो जाता है। ये चार बातें कौन-कौन सी हैं, आईये जानते हैं-

**पहली बात**- विदुर ने धृतराष्ट्र से कहा कि यदि किसी व्यक्ति के मन में कामभाव जाग गया हो तो उसकी नींदें उड़ जाती है और जब तक उस व्यक्ति की काम भावना तृप्त नहीं हो जाती तब तक वह सो नहीं सकता है। कामभावना व्यक्ति के मन को अशांत कर देती है और कामी व्यक्ति किसी भी कार्य को ठीक से नहीं कर पाता है। यह भावना स्त्री और पुरुष दोनों की नींद उड़ा देती है।

**दूसरी बात**- जब किसी स्त्री या पुरुष की शत्रुता उससे अधिक बलवान व्यक्ति से हो जाती है तो भी उसकी नींद उड़ जाती है। निर्बल और साधनहीन व्यक्ति हर पल बलवान शत्रु से बचने के उपाय सोचता रहता है क्यूंकि उसे हमेशा यह भय सताता है कि कहीं बलवान शत्रु की वजह से कोई अनहोनी न हो जाए।

**तीसरी बात**- यदि किसी व्यक्ति का सब कुछ छीन लिया गया हो तो उसकी रातों की नींद उड़ जाती है। ऐसा इंसान न तो चैन से जी पाता है और ना ही सो पाता है। इस परिस्थिति में व्यक्ति हर पल छीनी हुई वस्तुओं को पुनः पाने की योजनाएं बनाता रहता है और जब तक वह अपनी वस्तुएं पुनः पा नहीं लेता है, तब तक उसे नींद नहीं आती है।

**चौथी बात**- यदि किसी व्यक्ति की प्रवृत्ति चोरी की है या जो चोरी करके ही अपने उदर की पूर्ति करता है, जिसे चोरी करने की आदत पड़ गई है, जो दूसरों का धन चुराने की योजनाएं बनाते रहता है, उसे भी नींद नहीं आती है। चोर हमेशा रात में चोरी करता है और दिन में इस बात से डरता है कि कहीं उसकी चोरी पकड़ी ना जाए। इस वजह से उसकी नींद भी उड़ी रहती है।

ये चारों बातें व्यवहारिक और हर युग में सटीक मालूम पड़ती हैं, उम्मीद करते हैं कि महात्मा विदुर की बातों से आप भी अपनी सीख लेंगे और दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।

❑

# पंडितजी को वेश्या ने पढ़ाया पाठ

**ब्रिजेश सिंह**

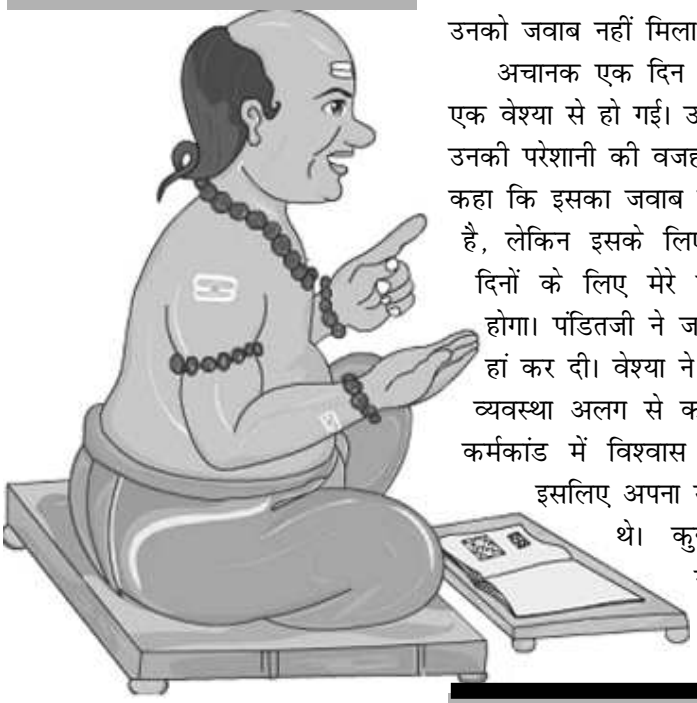

कहते हैं कि गुरु के बगैर या तो ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है या ज्ञान अधूरा होता है। गृहस्थ हो या संत, संन्यासी हो या ब्रह्मचारी, हर किसी की राह गुरु के आशीर्वाद से और उनके मार्गदर्शक बनने से ही आसान होती है। जब आप स्कल होते हैं तो गुरु का गुणगान होता है और उसका श्रेय लूटने वालों की होड़ भी लग जाती है। पुण्य कार्य के गुरु तो बहुत होते हैं, लेकिन पाप का गुरु कोई नहीं होता है, लेकिन आज हम आपको बताएंगे कि पाप का गुरु कौन होता है।

यह कहानी है शास्त्रों के पारंगत एक पंडित की है, जो काशी में विद्याध्ययन के बाद अपने गांव लौटे थे। उस वक्त गांव के एक किसान ने उनसे पूछा कि पाप का गुरु कौन है? पंडितजी अचंभे में पड़ गए क्योंकि उनके जीवन में अध्यात्म के अलावा कोई गुरु था ही नहीं।

पंडितजी को लगा कि उनका अध्ययन अभी अधूरा है इसलिए वह वापस काशी लौट गए और किसान के सवाल का जवाब तलाशने लगे, लेकिन उनको जवाब नहीं मिला।

अचानक एक दिन उनकी मुलाकात एक वेश्या से हो गई। उसने पंडितजी से उनकी परेशानी की वजह पूछी। वेश्या ने कहा कि इसका जवाब तो बेहद आसान है, लेकिन इसके लिए आपको कुछ दिनों के लिए मेरे पड़ोस में रहना होगा। पंडितजी ने जवाब की खातिर हां कर दी। वेश्या ने उनके रहने की व्यवस्था अलग से कर दी। पंडितजी कर्मकांड में विश्वास रखने वाले थे इसलिए अपना खाना खुद बनाते थे। कुछ समय बीत गया, लेकिन सवाल का जवाब नहीं मिला।

**यह कहानी है शास्त्रों के पारंगत एक पंडित की है, जो काशी में विद्याध्ययन के बाद अपने गांव लौटे थे। उस वक्त गांव के एक किसान ने उनसे पूछा कि पाप का गुरु कौन है? पंडितजी अचंभे में पड़ गए क्योंकि उनके जीवन में अध्यात्म के अलावा कोई गुरु था ही नहीं।**

एक दिन वेश्या ने कहा कि पंडितजी आपको खाना बनाने में बड़ी दिक्कत होती है इसलिए आपको एतराज नहीं हो तो मैं स्नान कर आपका खाना पका दूं? साथ में मैं आपको भोजन के बाद एक स्वर्ण मुद्रा भी दूंगी। इतना सुनते ही पंडितजी ने अपने खुद के बनाए नियमों को तिलांजली दे दी और वेश्या के हाथ से बना खाना खाने के लिए हाँ कर दी। और कहा कि इस बात का खास ख्याल रहे कि इस बात की भनक किसी को नहीं होना चाहिए।

वेश्या ने पहले ही दिन कई तरह के पकवान बनाए और पंडितजी के सामने परोसे। जैसे ही पंडितजी खाने के लिए आसन पर विराजमान हुए वेश्या ने पकवानों से सजी थाली खींच ली। पंडितजी बेहद खफा हो गए और तैश में आकर बोले कि यह क्या मजाक है? वेश्या ने कहा यह मजाक नहीं पंडितजी आपके प्रश्न का उत्तर है। यहां आने से पहले आप किसी के हाथ का पानी भी नहीं पीते थे, लेकिन स्वर्ण मुद्राओं के लोभ में आकर आपने मेरे हाथ का खाना खाना भी मंजूर कर लिया। इसलिए आपके सवाल का जवाब यह है कि लोभ ही पाप का गुरु है।

पंडितजी को अपने प्रश्न का उत्तर तो मिला ही, साथ ही बेहद आत्मग्लानी के साथ जीवन का सार भी मिल गया कि जिस सवाल का जवाब उन्होंने बड़े-बड़े विद्वानों की संगति में ढूंढा, उसका जवाब एक वेश्या के कोठे पर मिला। इसलिए उन्होंने उस वेश्या को भी अपना गुरु स्वीकार किया और यह सीख भी ली कि क्षणभर के लोभमात्र से जीवनभर के पुण्य पर पानी फिर जाता है। ❑

# अर्जुन को कृष्ण भक्ति का घमंड, गरीब ब्राह्मण ने दिया जवाब

**मनोहरलाल**

महाभारत द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार, अपमान और बदले की आग में सब कुछ भस्म कर देने वाला, साथ ही दर्द और दुख के समुंदर की कथा है तो मान-सम्मान, स्वाभिमान और जीवन को जीने की कला देने वाला एक अद्‌भुत कथानक भी है।

हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ के महापुरूषों को राजकुल में पले-बढ़े होने की वजह से अहंकार होना तो लाजमी था। किसी को बल का तो किसी को श्रेष्ठ युद्धवीर होने का, किसी को रूप का तो किसी को छल में महारत का घमंड था।

यानी अहंकार हर किसी के दिल के किसी कोने में जरूर था। इस तरह अर्जुन के बारे मे कहा जाता है कि उनको अपने श्रेष्ठ धर्नुधर होने का गर्व था, लेकिन हर कोई इस बात से अनजान है कि उनको एक और बात का घमंड था और वह घमंड उनके सर चढ़कर भी बोलता था।

अर्जुन को यह अहंकार था कि ब्रह्माण्ड में सिर्फ वही श्री कृष्ण के परम भक्त हैं। श्रीकृष्ण अर्जुन के इस अहंकार से भली-भांति परिचित थे। इसलिए उन्होंने अर्जुन का घमंड तोड़ने का निश्चय किया और अर्जुन को अपने साथ टहलने के लिए लेकर गए। टहलते समय उनकी नजर एक गरीब ब्राह्मण पर जाती हैं जो सूखी घास खा रहा था। और उसकी कमर पर तलवार लटकी हुई थी। यह देखकर अर्जुन को बड़ा अचंभा हुआ और ब्राह्मण से पूछा कि 'आप तो अहिंसा के पुजारी हैं, जीव हिंसा के भय से सूखी हुई खास खाकर अपना गुजारा करते हैं लेकिन फिर हिंसा का यह उपकरण तलवार आपने क्यों अपने साथ रखा हैं।

अर्जुन के सवाल पर ब्राह्मण ने जवाब दिया कि-'मैं कुछ लोगों को दण्डित करना चाहता हूं'। अर्जुन ने अचंभित होकर पूछा 'आपके शत्रु कौन हैं?' तब ब्राह्मण ने कहा, 'मैं उन 4 लोगों को खोज रहा हूं, ताकि उनसे अपना हिसाब चुकता कर सकूं।' सबसे पहले ब्राह्मण ने नारद का नाम लिया और कहा कि नारद मेरा पहला निशाना है, क्योंकि वह मेरे प्रभु को कभी आराम नहीं करने देते हैं, सदा भजन-कीर्तन कर उन्हें जागृत रखते हैं। उसके बाद उन्होंने द्रौपदी का नाम लिया और कहा कि द्रौपदी ने मेरे प्रभु को उस वक्त पुकारा जब वह जब वह भोजन करने बैठे थे। उन्हें तत्काल भोजन छोड़ पांडवों को दुर्वासा ऋषि के श्राप से बचाने जाना पड़ा। उसकी हिम्मत तो देखिए। उसने मेरे प्रभु को जूठा खाना खिलाया।

अब अर्जुन ने बड़ी जिज्ञासा के साथ पूछा कि 'हे ब्राह्मण देवता आपका तीसरा शत्रु कौन है?' तब ब्राह्मण ने कहा कि 'मेरा तीसरा शत्रु वह हृदयहीन प्रह्मलाद। उस निर्दयी ने मेरे प्रभु को गरम तेल के कड़ाह में प्रविष्ट कराया, हाथी के पैरों तले कुचलवाया और अंत में खंभे से प्रकट होने के लिए विवश किया।' अर्जुन ने उसके बाद उत्सुकतावश पूछा कि ब्राह्मण देव आपका चौथा शत्रु कौन है? तब ब्राह्मण ने जवाब देते हुए कहा कि मेरा चौथा शत्रु है अर्जुन। अर्जुन ने धृष्टता का परिचय देते हुए मेरे प्रभु को युद्ध में अपना सारथी ही बना लिया। उसको भगवान के कष्ट का जरा भी ज्ञान नहीं रहा। यह कहते हुए उस गरीब ब्राह्मण की आंखों से आंसू छलक पड़े।

ब्राह्मण का जवाब सुनते ही अर्जुन के सिर से कृष्णभक्ति का घमंड हमेशा के लिए उतर गया। उसने कृष्ण से क्षमा मांगते हुए कहा कि प्रभु ब्रह्मांड में आपके अनगिनत भक्त है। इन सभी के सामने मैं तो कुछ भी नही हूं। इस कहानी की सार यह है कि घमंड करने से पहले यह बात सोच लेना चाहिए कि जिस चीज पर आप घमंड कर रहे हैं उसमें आपसे आगे कई लोग हो सकते हैं और विशिष्टता के साथ उस काम में शुमार किए जाते हो।

❑

# मनीषी विदुर ने मृत्यु से पहले श्रीकृष्ण को बताई थी अपनी अंतिम इच्छा

सुरेश मेहरा

**महाभारत काल के महत्वपूर्ण पात्रों में से एक पात्र विदुर जी को माना जाता है। विदुर जी हस्तिनापुर के प्रधानमंत्री, कौरवों व पांडवों के काका और धृतराष्ट्र एवं पाण्डु के भाई थे। परंतु इनका जन्म एक दासी के गर्भ से हुआ था। इतनी महत्वपूर्ण भूमिका होने के बाद भी मनीषी विदुर महाभारत में अपना कोई अस्तित्व कायम न कर सके। विदुर जी को महाभारत के केंद्रीय पात्रों में से एक माना तो गया।**

महाभारत काल के महत्वपूर्ण पात्रों में से एक पात्र विदुर जी को माना जाता है। विदुर जी हस्तिनापुर के प्रधानमंत्री, कौरवों व पांडवों के काका और धृतराष्ट्र एवं पाण्डु के भाई थे। परंतु इनका जन्म एक दासी के गर्भ से हुआ था। इतनी महत्वपूर्ण भूमिका होने के बाद भी मनीषी विदुर महाभारत में अपना कोई अस्तित्व कायम न कर सके। विदुर जी को महाभारत के केंद्रीय पात्रों में से एक माना तो गया, किंतु फिर भी अधिकतर लोग उन्हें जानते नहीं हैं। उनकी पहचान सदैव हस्तिनापुर के प्रधानमंत्री में की गई है। जिन लोगों ने महाभारत ग्रंथ के विस्तार में पढ़ा है, उसे ही यह ज्ञात होगा कि विदुर जी कौरवों व पांडवों के काका थे और धृतराष्ट्र एवं पाण्डु के भाई थे। परंतु वे उनके कोई साधारण भाई नहीं बल्कि उनके बड़े भाई थे, इस बात का पता शायद ही किसी को होगा। सबसे बड़ा होने के बावजूद उन्हें राजपद नहीं सौंपा गया और न ही कभी उन्हें परिवार का अहम हिस्सा माना गया। इन सबका का संबंध उनके जन्म से जुड़ा हुआ है।

दरअसल विदुर किसी रानी या महारानी के नहीं, वरन् एक दासी के पुत्र थे। हस्तिनापुर के राजा विचित्रवीर्य अपनी दोनों रानियों को संतान सुख देने में असमर्थ हुए थे और अंत में क्षय रोग से पीड़ित होकर मृत्यु को प्राप्त हुए। ऐसे में हस्तिनापुर का अगला रखवाला कौन होगा, इसके लिए वेद व्यास जी की मदद ली गई। वेद व्यास ने दोनों रानियों को संतान सुख का आशीर्वाद देने के लिए बुलाया, किंतु उनके डर से रानियों ने दासी को भेज दिया। यही कारण है कि पहली संतान दासी के गर्भ से ही हुई। किंतु एक दासी की संतान को राजा का दर्जा देना उचित न समझते हुए, विदुर को कभी वह दर्जा प्राप्त नहीं हुआ जिसके वे हकदार थे। कहा जाता है कि वेद व्यास जी ने दासी के गर्भ से होने वाली संतान को विशेष वर दिया था। उनका कहना था कि यह संतान बेहद बुद्धि मान एवं सर्वगुण सम्पन्न होगी।

महाभारत ग्रंथ के अनुसार विदुर को धर्मराज का स्वरूप माना गया है। अपनी सूझ-बूझ के चलते ही विदुर को हस्तिनापुर का प्रधानमंत्री घोषित किया गया था। कहते हैं विदुर ने महाभारत युद्ध लड़ने से इनकार कर दिया था। किंतु मृत्यु से पहले उन्होंने श्रीकृष्ण से एक वरदान मांगा था।

यह उस समय की बात है जब महाभारत युद्ध चल रहा था। विदुर, श्रीकृष्ण के पास गए और उनसे एक निवेदन किया। वे अपनी अंतिम इच्छा श्रीकृष्ण को बताना चाहते थे। उन्होंने कहा, 'हे प्रभु, मैं धरती पर इतना प्रलयकारी युद्ध देखकर बहुत आत्मग्लानिता का अनुभव कर रहा हूं। मेरी मृत्यु के बाद मैं अपने शरीर का एक भी अंश इस धरती पर नहीं छोड़ना चाहता। इसलिए मेरा आपसे यह निवेदन है कि मेरी मृत्यु होने पर न मुझे जलाया जाए, न दफनाया जाए, और न ही जल में प्रवाहित किया जाए।'

वे आगे बोले, 'प्रभु, मेरी मृत्यु के बाद मुझे आप कृपया सुदर्शन चक्र में परिवर्तित कर दें। यही मेरी अंतिम इच्छा

है। श्रीकृष्ण ने उनकी अंतिम इच्छा स्वीकार की और उन्हें यह आश्वासन दिया कि उनकी मृत्यु के पश्चात वे उनकी इच्छा अवश्य पूरी करेंगे।

अब महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। युद्ध बीते कुछ ही दिन हुए थे, पांचों पांडव विदुर जी से मिलने वन में पहुंचे। युधिष्ठिर को देखते ही विदुर ने प्राण त्याग दिए और वे युधिष्ठिर में ही समाहित हो गए।

युधिष्ठिर के लिए यह घटना कुछ अजीब थी। वे समझ नहीं पा रहे थे कि ये क्या हुआ, क्यों हुआ, इसके पीछे क्या कारण था? अपनी दुविधा का हल खोजने के लिए उन्होंने श्रीकृष्ण का स्मरण किया। श्रीकृष्ण प्रकट हुए, युधिष्ठिर को दुविधा में देखते हुए वे मुस्कुराए और बोले, 'हे युधिष्ठिर, यह समय चिंता का नहीं है। विदुर धार्मराज के अवतार थे और तुम स्वयं धर्मराज हो। इसलिए प्राण त्याग कर वे तुममें समाहित हो गए। लेकिन अब मैं विदुर को दिया हुआ वरदान पूरा करने आया हूं।'

यह कहकर श्रीकृष्ण ने विदुर के शव को सुदर्शन चक्र में परिवर्तित किया और उनकी अंतिम इच्छा को पूरा किया। ❑

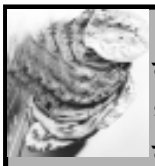

## जली हुई रोटियाँ

**बात उस समय की है, जब डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम छोटे बच्चे थे. एक रात वे अपने माता-पिता के साथ भोजन कर रहे थे। भोजन करते हुए उनकी दृष्टि अपने पिता की प्लेट पर गई। उन्होंने देखा कि उनकी माँ ने उन्हें जो रोटियाँ परोसी हैं, वे जली हुई हैं। लेकिन वे बिना कुछ कहे शांति से उन जली हुई रोटियों को खा रहे हैं। जब उनकी माँ ने जली हुई रोटियों के लिए उनके पिता से क्षमा मांगी, तो वे हँसते हुए बोले, कोई बात नहीं, मुझे तो जली हुई रोटियाँ पसंद है। यह सुनकर डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम आश्चर्य में पड़ गये। बाद में उन्होंने अपने पिता से पूछा कि क्या वाकई उन्हें जली हुई रोटियाँ पसंद है, तो उनके पिता ने उत्तर दिया, एक जली हुई रोटी किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकती, लेकिन जले हुए शब्द बहुत कुछ बिगाड़ सकते हैं। दोस्तों! शब्दों में अद्‌भुत शक्ति होती है। इस शक्ति का उपयोग हमें संभलकर करना चाहिए. हमारे द्वारा कहे गए गलत शब्द किसी को आहत कर सकते है और संबंधों में दरार डाल सकते है। इसलिए जहाँ तक संभव हो, छोटी-छोटी गलतियों को नजरअंदाज कर देना चाहिए और जहाँ आवश्यक हो, वहाँ अपनी बात प्रेमपूर्वक रीति से ही समझाना चाहिए।**

## ऋषि चिन्तन के सान्निध्य में

### दूसरा दीपक

चाणक्य नीति-शास्त्र के लिए प्रसिद्ध थे। उनका गुणगान सुनकर एक दिन एक चीनी दार्शनिक उनसे मिलने आया। जब वह चाणक्य के घर पहुँचा, तब तक अँधेरा हो चुका था। घर में प्रवेश करते समय उसने देखा कि तेल से दीप्यमान एक दीपक के प्रकाश में चाणक्य कोई ग्रन्थ लिखने में व्यस्त है। चाणक्य की दृष्टि जब आगंतुक पर पड़ी, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए उसका स्वागत किया और उसे अंदर विराजमान होने को कहा। फिर शीघ्रता से अपना लेखन कार्य समाप्त कर उन्होंने उस दीपक को बुझा दिया, जिसके प्रकाश में वे आगंतुक के आगमन तक कार्य कर रहे थे। जब दूसरा दीपक जलाकर वे उस चीनी दार्शनिक से वार्तालाप करने लगे, तो उस चीनी दार्शनिक के आश्चर्य की कोई सीमा न रही। उसने सोचा कि अवश्य ही भारत में इस तरह का कोई रिवाज होगा। उसने जिज्ञासावश चाणक्य से पूछा, मित्र, मेरे आगमन पर आपने एक दीपक बुझा कर ठीक वैसा ही दूसरा दीपक जला दिया। दोनों में मुझे कोई अंतर नहीं दिखता। क्या भारत में आगंतुक के आने पर नया दीपक जलाने का रिवाज है? प्रश्न सुनकर चाणक्य मुस्कुराये और उत्तर दिया, नहीं मित्र, ऐसी कोई बात नहीं है। जब आपने मेरे घर में प्रवेश किया, उस समय मैं राज्य का कार्य कर रहा था। इसलिए वह दीपक जला रखा था, जो राजकोष के धन से खरीदे हुए तेल से दीप्यमान था। किन्तु, अब मैं आपसे वार्तालाप कर रहा हूँ। यह मेरा व्यक्तिगत वार्तालाप है। अत: मैं उस दीपक का उपयोग नहीं कर सकता क्योंकि ऐसा करना राजकोष की मुद्रा का दुरूपयोग होगा। बस यही कारण है कि मैंने दूसरा दीपक जला लिया। स्वदेश प्रेम का अर्थ है अपने देश की वस्तु की अपनी वस्तु के समान रक्षा करना। चाणक्य का देश प्रेम देखकर वह चीनी यात्री उनके समक्ष नतमस्तक हो गया।

**-आचार्य श्रीराम शर्मा**

# शिवरात्रि
# शिकारी की कथा

**नीतिका**

**एक बार पार्वती जी ने भगवान शिवशंकर से पूछा, 'ऐसा कौन-सा श्रेष्ठ तथा सरल व्रत-पूजन है, जिससे मृत्युलोक के प्राणी आपकी कृपा सहज ही प्राप्त कर लेते हैं?' उत्तर में शिवजी ने पार्वती को 'शिवरात्रि' के व्रत का विधान बताकर यह कथा सुनाई- एक बार चित्रभानु नामक एक शिकारी था। पशुओं की हत्या करके वह अपने कुटुम्ब को पालता था।**

एक बार पार्वती जी ने भगवान शिवशंकर से पूछा, 'ऐसा कौन-सा श्रेष्ठ तथा सरल व्रत-पूजन है, जिससे मृत्युलोक के प्राणी आपकी कृपा सहज ही प्राप्त कर लेते हैं?' उत्तर में शिवजी ने पार्वती को 'शिवरात्रि' के व्रत का विधान बताकर यह कथा सुनाई- एक बार चित्रभानु नामक एक शिकारी था। पशुओं की हत्या करके वह अपने कुटुम्ब को पालता था। वह एक साहूकार का ऋणी था, लेकिन उसका ऋण समय पर न चुका सका। क्रोधित साहूकार ने शिकारी को शिवमठ में बंदी बना लिया। संयोग से उस दिन शिवरात्रि थी।

शिकारी ध्यानमग्न होकर शिव-संबंधी धार्मिक बातें सुनता रहा। चतुर्दशी को उसने शिवरात्रि व्रत की कथा भी सुनी। संध्या होते ही साहूकार ने उसे अपने पास बुलाया और ऋण चुकाने के विषय में बात की। शिकारी अगले दिन सारा ऋण लौटा देने का वचन देकर बंधन से छूट गया। अपनी दिनचर्या की भांति वह जंगल में शिकार के लिए निकला। लेकिन दिनभर बंदी गृह में रहने के कारण भूख-प्यास से व्याकुल था। शिकार करने के लिए वह एक तालाब के किनारे बेल-वृक्ष पर पड़ाव बनाने लगा। बेल वृक्ष के नीचे शिवलिंग था जो विल्वपत्रों से ढका हुआ था। शिकारी को उसका पता न चला।

पड़ाव बनाते समय उसने जो टहनियां तोड़ीं, वे संयोग से शिवलिंग पर गिरीं। इस प्रकार दिनभर भूखे-प्यासे शिकारी का व्रत भी हो गया और शिवलिंग पर बेलपत्र भी चढ़ गए। एक पहर रात्रि बीत जाने पर एक गर्भिणी मृगी तालाब पर पानी पीने पहुंची। शिकारी ने धनुष पर तीर चढ़ाकर ज्यों ही प्रत्यंचा खींची, मृगी बोली, 'मैं गर्भिणी हूं। शीघ्र ही प्रसव करूंगी। तुम एक साथ दो जीवों की हत्या करोगे, जो ठीक नहीं है। मैं बच्चे को जन्म देकर शीघ्र ही तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत हो जाऊंगी, तब मार लेना।' शिकारी ने प्रत्यंचा ढीली कर दी और मृगी जंगली झाड़ियों में लुप्त हो गई।

कुछ ही देर बाद एक और मृगी उधर से निकली। शिकारी की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। समीप आने पर उसने धनुष पर बाण चढ़ाया। तब उसे देख मृगी ने विनम्रतापूर्वक निवेदन किया, हे पारधी! मैं थोड़ी देर पहले ऋतु से निवृत्त हुई हूं। कामातुर विरहिणी हूं। अपने प्रिय की खोज में भटक रही हूं। मैं अपने पति से मिलकर शीघ्र ही तुम्हारे पास आ जाऊंगी।' शिकारी ने उसे भी जाने दिया। दो बार शिकार को खोकर उसका माथा ठनका। वह चिंता में पड़ गया। रात्रि का आखिरी पहर बीत रहा था। तभी एक अन्य मृगी अपने बच्चों के साथ उधर से निकली। शिकारी के लिए यह स्वर्णिम अवसर था। उसने धनुष पर तीर चढ़ाने में देर नहीं लगाई। वह तीर छोड़ने ही वाला था कि मृगी बोली, 'हे पारधी!' मैं इन बच्चों को इनके पिता के हवाले करके लौट आऊंगी। इस समय मुझे मत मारो।

शिकारी हंसा और बोला, सामने आए शिकार को छोड़ दूं, मैं ऐसा मूर्ख नहीं। इससे पहले मैं दो बार अपना शिकार खो चुका हूं। मेरे बच्चे भूख-प्यास से तड़प रहे होंगे। उत्तर में मृगी ने फिर कहा, जैसे तुम्हें अपने बच्चों की ममता सता रही है, ठीक वैसे ही मुझे भी। इसलिए सिर्फ बच्चों

**उपवास, रात्रि-जागरण तथा शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ने से शिकारी का हिंसक हृदय निर्मल हो गया था। उसमें भगवद् शक्ति का वास हो गया था। धनुष तथा बाण उसके हाथ से सहज ही छूट गया। भगवान शिव की अनुकंपा से उसका हिंसक हृदय कारुणिक भावों से भर गया। वह अपने अतीत के कर्मों को याद करके पश्चाताप की ज्वाला में जलने लगा।**

के नाम पर मैं थोड़ी देर के लिए जीवनदान मांग रही हूं। हे पारथी! मेरा विश्वास कर, मैं इन्हें इनके पिता के पास छोड़कर तुरंत लौटने की प्रतिज्ञा करती हूं।

मृगी का दीन स्वर सुनकर शिकारी को उस पर दया आ गई। उसने उस मृगी को भी जाने दिया। शिकार के अभाव में बेल-वृक्ष पर बैठा शिकारी बेलपत्र तोड़-तोड़कर नीचे फेंकता जा रहा था। पौ फटने को हुई तो एक हृष्ट-पुष्ट मृग उसी रास्ते पर आया। शिकारी ने सोच लिया कि इसका शिकार वह अवश्य करेगा। शिकारी की तनी प्रत्यंचा देखकर मृग विनीत स्वर में बोला, हे पारधी भाई! यदि तुमने मुझसे पूर्व आने वाली तीन मृगियों तथा छोटे-छोटे बच्चों को मार डाला है, तो मुझे भी मारने में विलंब न करो, ताकि मुझे उनके वियोग में एक क्षण भी दु:ख न सहना पड़े। मैं उन मृगियों का पति हूं। यदि तुमने उन्हें जीवनदान दिया है तो मुझे भी कुछ क्षण का जीवन देने की कृपा करो। मैं उनसे मिलकर तुम्हारे समक्ष उपस्थित हो जाऊंगा।

मृग की बात सुनते ही शिकारी के सामने पूरी रात का घटनाचक्र घूम गया, उसने सारी कथा मृग को सुना दी। तब मृग ने कहा, 'मेरी तीनों पत्नियां जिस प्रकार प्रतिज्ञाबद्ध होकर गई हैं, मेरी मृत्यु से अपने धर्म का पालन नहीं कर पाएंगी। अत: जैसे तुमने उन्हें विश्वासपात्र मानकर छोड़ा है, वैसे ही मुझे भी जाने दो। मैं उन सबके साथ तुम्हारे सामने शीघ्र ही उपस्थित होता हूं।' उपवास, रात्रि-जागरण तथा शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ने से शिकारी का हिंसक हृदय निर्मल हो गया था। उसमें भगवद् शक्ति का वास हो गया था। धनुष तथा बाण उसके हाथ से सहज ही छूट गया। भगवान शिव की अनुकंपा से उसका हिंसक हृदय कारुणिक भावों से भर गया। वह अपने अतीत के कर्मों को याद करके पश्चाताप की ज्वाला में जलने लगा।

थोड़ी ही देर बाद वह मृग सपरिवार शिकारी के समक्ष उपस्थित हो गया, ताकि वह उनका शिकार कर सके, किंतु जंगली पशुओं की ऐसी सत्यता, सात्विकता एवं सामूहिक प्रेमभावना देखकर शिकारी को बड़ी ग्लानि हुई। उसके नेत्रों से आंसुओं की झड़ी लग गई। उस मृग परिवार को न मारकर शिकारी ने अपने कठोर हृदय को जीव हिंसा से हटा सदा के लिए कोमल एवं दयालु बना लिया। देवलोक से समस्त देव समाज भी इस घटना को देख रहे थे। घटना की परिणति होते ही देवी-देवताओं ने पुष्प-वर्षा की। तब शिकारी तथा मृग परिवार मोक्ष को प्राप्त हुए। ❑

## सूचना

**समस्त पाठकों/ लेखकों, विचारकों तथा चिन्तकों से प्रस्तुत पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख आमंत्रित हैं। लेख, कविता, लघुकथा, आलेख, लघु-नाटिका, आध्यात्मिक प्रसंग, उवाच, समीक्षा, इतिहास-प्रमाण रचना, आधुनिक विज्ञानबद्ध, मानव धर्म एवं शुद्ध स्वच्छ रमणीय/ मानव धर्मी, प्रशासन-व्यवस्था, ज्योतिष विज्ञान, स्वास्थ संबंधी, योगदर्शन, भारतविद्या (इंडोलॉजी) आदि विषयों पर होने चाहिए। रचना साफ़ व लिखाई में फुल-स्केप काग़ज पर एक जैसी लिखी होनी चाहिए। लेख पूर्व-प्रकाशित नहीं होने चाहिए। लेख के साथ अपना नाम, शाखा सदस्यता, फोन-नंबर अवश्य दें।**

# सबसे महत्वपूर्ण स्वयं को जानना

**योगाचार्य अतुल द्विवेदी**

एक था भिखारी! रेल सफर में भीख माँगने के दौरान एक सूट बूट पहने सेठ जी उसे दिखे। उसने सोचा कि यह व्यक्ति बहुत अमीर लगता है, इससे भीख माँगने पर यह मुझे जरूर अच्छे पैसे देगा। वह उस सेठ से भीख माँगने लगा। भिखारी को देखकर उस सेठ ने कहा, 'तुम हमेशा मांगते ही हो, क्या कभी किसी को कुछ देते भी हो?

भिखारी बोला, 'साहब मैं तो भिखारी हूँ, हमेशा लोगों से मांगता ही रहता हूँ, मेरी इतनी औकात कहाँ कि किसी को कुछ दे सकूँ?'

सेठ- जब किसी को कुछ दे नहीं सकते तो तुम्हें मांगने का भी कोई हक नहीं है। मैं एक व्यापारी हूँ और लेन-देन में ही विश्वास करता हूँ, अगर तुम्हारे पास मुझे कुछ देने को हो तभी मैं तुम्हें बदले में कुछ दे सकता हूँ।

तभी वह स्टेशन आ गया जहाँ पर उस सेठ को उतरना था, वह ट्रेन से उतरा और चला गया।

इधर भिखारी सेठ की कही गई बात के बारे में सोचने लगा। सेठ के द्वारा कही गयीं बात उस भिखारी के दिल में उतर गई। वह सोचने लगा कि शायद मुझे भीख में अधिक पैसा इसीलिए नहीं मिलता क्योकि मैं उसके बदले में किसी को कुछ दे नहीं पाता हूँ। लेकिन मैं तो भिखारी हूँ, किसी को कुछ देने लायक भी नहीं हूँ। लेकिन कब तक मैं लोगों को बिना कुछ दिए केवल मांगता ही रहूँगा।

बहुत सोचने के बाद भिखारी ने निर्णय किया कि जो भी व्यक्ति उसे भीख देगा तो उसके बदले मे वह भी

**एक था भिखारी! रेल सफर में भीख माँगने के दौरान एक सूट बूट पहने सेठ जी उसे दिखे। उसने सोचा कि यह व्यक्ति बहुत अमीर लगता है, इससे भीख माँगने पर यह मुझे जरूर अच्छे पैसे देगा। वह उस सेठ से भीख माँगने लगा। भिखारी को देखकर उस सेठ ने कहा, 'तुम हमेशा मांगते ही हो, क्या कभी किसी को कुछ देते भी हो?**

उस व्यक्ति को कुछ जरूर देगा।

लेकिन अब उसके दिमाग में यह प्रश्न चल रहा था कि वह खुद भिखारी है तो भीख के बदले में वह दूसरों को क्या दे सकता है?

इस बात को सोचते हुए दिन भर गुजरा लेकिन उसे अपने प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिला।

दूसरे दिन जब वह स्टेशन के पास बैठा हुआ था तभी उसकी नजर कुछ फूलों पर पड़ी जो स्टेशन के आस-पास के पौधों पर खिल रहे थे, उसने सोचा, क्यों न मैं लोगों को भीख के बदले कुछ फूल दे दिया करूँ। उसको अपना यह विचार अच्छा लगा और उसने वहां से कुछ फूल तोड़ लिए।

वह ट्रेन में भीख मांगने पहुंचा। जब भी कोई उसे भीख देता तो उसके बदले में वह भीख देने वाले को कुछ फूल दे देता। उन फूलों को लोग खुश होकर अपने पास रख लेते थे। अब भिखारी रोज फूल तोड़ता और भीख के बदले में उन फूलों को लोगों में बांट देता था।

कुछ ही दिनों में उसने महसूस किया कि अब उसे बहुत अधिक लोग भीख देने लगे हैं। वह स्टेशन के पास के सभी फूलों को तोड़ लाता था। जब तक उसके पास फूल रहते थे तब तक उसे बहुत से लोग भीख देते थे। लेकिन जब फूल बांटते बांटते खत्म हो जाते तो उसे भीख भी नहीं मिलती थी, अब रोज ऐसा ही चलता रहा।

एक दिन जब वह भीख मांग रहा था तो उसने देखा कि वही सेठ ट्रेन में बैठे है जिसकी वजह से उसे भीख के बदले फूल देने की प्रेरणा मिली थी।

वह तुरंत उस व्यक्ति के पास पहुंच गया और भीख मांगते हुए बोला, आज मेरे पास आपको देने के लिए कुछ फूल हैं, आप मुझे भीख दीजिये बदले में मैं

आपको कुछ फूल दूंगा।

सेठ ने उसे भीख के रूप में कुछ पैसे दे दिए और भिखारी ने कुछ फूल उसे दे दिए। उस सेठ को यह बात बहुत पसंद आयी।

सेठ: वाह क्या बात है..? आज तुम भी मेरी तरह एक व्यापारी बन गए हो, इतना कहकर फूल लेकर वह सेठ स्टेशन पर उतर गया।

लेकिन उस सेठ द्वारा कही गई बात एक बार फिर से उस भिखारी के दिल में उतर गई। वह बार-बार उस सेठ के द्वारा कही गई बात के बारे में सोचने लगा और बहुत खुश होने लगा। उसकी आँखे अब चमकने लगीं, उसे लगने लगा कि अब उसके हाथ सफलता की वह चाबी लग गई है जिसके द्वारा वह अपने जीवन को बदल सकता है।

वह तुरंत ट्रेन से नीचे उतरा और उत्साहित होकर बहुत तेज आवाज में ऊपर आसमान की ओर देखकर बोला, 'मैं भिखारी नहीं हूँ, मैं तो एक व्यापारी हूँ..

मैं भी उस सेठ जैसा बन सकता हूँ.. मैं भी अमीर बन सकता हूँ!

लोगों ने उसे देखा तो सोचा कि शायद यह भिखारी पागल हो गया है, अगले दिन से वह भिखारी उस स्टेशन पर फिर कभी नहीं दिखा।

एक वर्ष बाद इसी स्टेशन पर दो व्यक्ति सूट-बूट पहने हुए यात्रा कर रहे थे। दोनों ने एक दूसरे को देखा तो उनमें से एक ने दूसरे को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और कहा, 'क्या आपने मुझे पहचाना?' सेठ- 'नहीं तो! शायद हम लोग पहली बार मिल रहे हैं।

भिखारी- सेठ जी.. आप याद कीजिए, हम पहली बार नहीं बल्कि तीसरी बार मिल रहे हैं।

सेठ- मुझे याद नहीं आ रहा, वैसे हम पहले दो बार कब मिले थे? अब

**एक वर्ष बाद इसी स्टेशन पर दो व्यक्ति सूट-बूट पहने हुए यात्रा कर रहे थे। दोनों ने एक दूसरे को देखा तो उनमे से एक ने दूसरे को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और कहा, 'क्या आपने मुझे पहचाना?' सेठ- 'नहीं तो! शायद हम लोग पहली बार मिल रहे हैं।**

पहला व्यक्ति मुस्कुराया और बोला-

हम पहले भी दो बार इसी ट्रेन में मिले थे, मैं वही भिखारी हूँ जिसको आपने पहली मुलाकात में बताया कि मुझे जीवन में क्या करना चाहिए और दूसरी मुलाकात में बताया कि मैं वास्तव में कौन हूँ।

नतीजा यह निकला कि आज मैं फूलों का एक बहुत बड़ा व्यापारी हूँ और इसी व्यापार के काम से दूसरे शहर जा रहा हूँ।

आपने मुझे पहली मुलाकात में प्रकृति का नियम बताया था... जिसके अनुसार हमें तभी कुछ मिलता है, जब हम कुछ देते हैं। लेन -देन का यह नियम वास्तव में काम करता है, मैंने यह बहुत अच्छी तरह महसूस किया है, लेकिन मैं खुद को हमेशा भिखारी ही समझता रहा, इससे ऊपर उठकर मैंने कभी सोचा ही नहीं था और जब आपसे मेरी दूसरी मुलाकात हुई तब आपने मुझे बताया कि मैं एक व्यापारी बन चुका हूँ। अब मैं समझ चुका था कि मैं वास्तव में एक भिखारी नहीं बल्कि व्यापारी बन चुका हूँ।

भारतीय मनीषियों ने संभवत: इसीलिए स्वयं को जानने पर सबसे अधिक जोर दिया और फिर कहा - सोहं शिवोहम !!

समझ की ही तो बात है...

भिखारी ने स्वयं को जब तक भिखारी समझा, वह भिखारी रहा। उसने स्वयं को व्यापारी मान लिया, व्यापारी बन गया।

जिस दिन हम समझ लेंगे कि मैं तो वही हूँ, मैं तो स्वयं शिव हूँ,

फिर जानने समझने को रह ही क्या जाएगा? शिवोभूत्वा शिवम् यजेत

शिव को भजो, शिव होकर।

❑

**व्यक्ति का सम्मान उन शब्दों से नहीं है जो उसी उपस्थिति में कहे जाए, अपितु उन शब्दों से है जो उसकी अनुपस्थिति में कहे जाए!!**

# सूत्र साहित्य का संक्षिप्त परिचय

**(गतांक से आगे....)**

❑ डॉ. देवेन्द्र गुप्ता

## संस्कार

प्राचीन भारतीय मनीषियों ने मनुष्य के जीवन को समुन्नत एवं विकसित बनाने के उद्देश्य से जिन व्यवस्थाओं की नियोजना की, उनमें संस्कारों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जहाँ ये संस्कार व्यक्ति के जीवन को सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित तथा अनुशासित बनाते थे वही इनके द्वारा व्यक्ति तथा समाज दोनों का कल्याण होता था। व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक इन्हीं संस्कारों की महत्ता थी। इनका उद्देश्य मनुष्य की भौतिक और सांस्कृतिक उन्नति ही नहीं अपितु उनकी शुद्धि करना भी था, क्योंकि ऐसा माना जाता था कि संस्कारहीन व्यक्ति का जीवन अपवित्र, अपूर्ण और अव्यवस्थित होता है। अत: संस्कारों के द्वारा व्यक्ति के जीवन को उन्नत, परिष्कृत एवं पवित्र करने का प्रयास किया जाता था जिससे कि वह विशुद्ध चित्त होकर जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष की ओर अग्रसर हो सके। इस प्रकार ये संस्कार व्यक्ति को संस्कारसिद्ध बनाने के लिए ही थे। मनु के अनुसार संस्कार मनुष्य के इस जीवन को ही पवित्र नहीं

करते अपितु वे उसके पारलौकिक जीवन को भी पवित्र करते हैं। शंख के अनुसार संस्कारों से संस्कृत तथा आठ आत्मगुणों से युक्त व्यक्ति ब्रह्मलोक में पहुंचकर ब्रह्मपद को प्राप्त कर लेता है जिससे वह फिर कभी च्युत नहीं होता। संस्कारों के अर्न्तगत यज्ञों एवं कर्मकाण्डों के माध्यम से देवताओं को प्रसन्न करके भावी जीवन को सुखमय बनाने का प्रयास किया जाता था ताकि भविष्य में किसी प्रकार की विघ्न बाधाओं का सामना

**प्राचीन भारतीय मनीषियों ने मनुष्य के जीवन को समुन्नत एवं विकसित बनाने के उद्देश्य से जिन व्यवस्थाओं की नियोजना की, उनमें संस्कारों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जहाँ ये संस्कार व्यक्ति के जीवन को सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित तथा अनुशासित बनाते थे वही इनके द्वारा व्यक्ति तथा समाज दोनों का कल्याण होता था।**

न करना पड़े। जीवन के प्रत्येक महत्वपूर्ण अवसरों पर इनका आयोजन किया जाता था जिसमें व्यक्ति में किसी प्रकार की विकृतियाँ जन्म न ले सकें और वह स्वाभाविक गति से अपना सर्वाङ्गिण विकास कर सके। डॉ. राजबली पाण्डेय के अनुसार इनका उद्देश्य केवल औपचारिक दैहिक संस्कार ही न होकर संस्कार्य व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का परिष्कार, शुद्धि और पूर्णता भी है। लक्ष्मीदत्त ठाकुर के अनुसार इन संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति के शारीरिक सौन्दर्य को बढ़ाना ही नहीं था अपितु इनके द्वारा आत्मा का भी अभ्युदय किया जाता था। इस प्रकार ये संस्कार हिन्दू समाज के सदस्यों के लिए अत्यन्त धार्मिक विधान रहे हैं। प्राचीन काल से लेकर आज तक अनेक परिवर्तनो के बाद भी हिन्दू समाज में इन संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

**मानव जीवन में चिरकाल से संस्कारों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वास्तव में इनका मुख्य उद्देश्य देवों की आराधना तथा व्यक्तित्व के समग्र एवं पूर्ण विकास के लिए शारीरिक तथा मानसिक दोषों को हटाकर उनमें अपेक्षित गुणों का आधान करना था। मनु तथा याज्ञवल्क्य के अनुसार संस्कार करने से बीज-गर्भ से उत्पन्न दोष समाप्त हो जाते हैं।**

संस्कार शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की सम पूर्वक कृञ् धातु में घञ् प्रत्यय करने से हुई है जिसका अभिप्राय परिशोधन एवं शुद्धता से है। जैमिनी ने संस्कार का अर्थ यज्ञ के पवित्र एवं निर्मल कार्यों से किया है। शबर के अनुसार संस्कार वह है जिसके होने से कोई पदार्थ या व्यक्ति किसी कार्य के लिए योग्य हो जाता है। तन्त्रवार्तिक के अनुसार संस्कार वे क्रियाएं तथा रीतियाँ हैं जो योग्यता प्रदान करती हैं। यह योग्यता दो प्रकार की होती है एक पापमोचन से उत्पन्न योग्यता तथा दूसरी नवीन गुणों से उत्पन्न योग्यता। संस्कारों से नवीन गुणों की प्राप्ति तथा तप से पापों एवं दोषों का मार्जन होता है। आचार्य शंकर के अनुसार संस्कारों द्वारा गुणों का आधान किया जाता है और दोषों को दूर किया जाता है। वीरमित्रोदय के अनुसार शारीरिक तथा आध्यात्मिक प्रकृति के आधायक सविधि अनुष्ठानों का नाम संस्कार है। संस्कृत साहित्य में इसके अनेक नाम मिलते हैं जैसे धार्मिक विधि-विधान, शुद्धि, परिष्कार, शिक्षा, संस्कृति, प्रशिक्षण, सौजन्य, पूर्णता, शोभा, आभूषण, प्रभाव, स्वरूप, धारणा, स्मरण शक्ति, क्रिया की विशेषता, कार्य का परिणाम, पवित्रता एवं अनुष्ठान आदि। डॉ. राजबली पाण्डेय के अनुसार संस्कार का अभिप्राय शुद्धि की धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति के दैहिक, मानसिक और बौद्धिक परिष्कार के लिए किए जाने वाले अनुष्ठानों से है जिससे कि वह समाज का पूर्ण विकसित सदस्य बन सके। इस प्रकार संस्कार से तात्पर्य उन पवित्र अनुष्ठानों से है जो व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक और आध्यात्मिक परिष्कार के लिए गर्भाधान से मृत्युपर्यन्त तक सम्पन्न किये जाते हैं। लक्ष्मीदत्त ठाकुर के अनुसार वास्तव में संस्कार से अभिप्राय व्यक्ति को किसी कार्य के योग्य बनाना है। प्रत्येक कार्य के लिए कुछ विशेष प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता रहती है। जब तक शिक्षा प्राप्त नहीं हो जाती है, उस काम को किसी कार्य के योग्य बनाना या बनाये रखना ही उसका संस्कार है और यही उसका धर्म है। मनुष्य अपने अभ्युदय और नि:श्रेयस के लिए जो कर्म करता है वह मनुष्य का धर्म है और जो कर्म इस हेतु किये जाते हैं उन्हीं को संस्कार कहते हैं, इसलिए धर्म संस्कार का ही नाम है। इसी के अनुकूल मनु ने संस्कार को दो भागों में विभाजित किया है। प्रथम कोटि में आने वाले संस्कार वे हैं जो संसारी के पापों और दोषों को दूर करते हुए अभ्युदयदायी और नि:श्रेयस सिद्धि प्रदान करने वाले कर्मों को करने की योग्यता प्रदान करते हैं। जबकि

दूसरी कोटि के संस्कार वे हैं जिन्हें स्वाध्याय, होम, यज्ञ अथवा नि:श्रेयस और अभ्युदय के साधक कर्म कहा जाता है।

## संस्कारों का उद्देश्य

मानव जीवन में चिरकाल से संस्कारों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वास्तव में इनका मुख्य उद्देश्य देवों की आराधना तथा व्यक्तित्व के समग्र एवं पूर्ण विकास के लिए शारीरिक तथा मानसिक दोषों को हटाकर उनमें अपेक्षित गुणों का आधान करना था। मनु तथा याज्ञवल्क्य के अनुसार संस्कार करने से बीज–गर्भ से उत्पन्न दोष समाप्त हो जाते हैं। संस्कारतत्व में उद्धत हारीत के अनुसार जब कोई व्यक्ति गर्भाधान की विधि के अनुसार संभोग करता है तो वह अपनी पत्नी में वेदाध्ययन के योग्य भ्रूण स्थापित करता है। पुंसवन संस्कार द्वारा वह गर्भ को पुरुष या नर बनाता है। सीमन्तोन्नयन संस्कार द्वारा माता–पिता से उत्पन्न दोषों को दूर करता है। बीज, रक्त एवं भ्रूण से उत्पन्न दोष जातकर्म, नामकरण, अन्नप्रासन, चूड़ाकरण एवं समावर्त्तन से दूर होते हैं। इन आठ प्रकार के संस्कारों से अर्थात् गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्रासन, चूडाकरण एवं समावर्त्तन से पवित्रता की उत्पत्ति होती है। राजबली पाण्डेय के अनुसार संसार के अन्य देशों की भांति हिन्दुओं का भी विश्वास था कि वे चारों ओर से ऐसे अतिमानुष प्रभावों से घिरे हुए हैं जो बुरा और भला करने की शक्ति रखते है। उनकी धारणा थी कि उक्त प्रभाव जीवन के किसी भी महत्वपूर्ण अवसर पर व्यक्ति के जीवन में हस्तक्षेप कर सकते हैं। अत: वे अमङ्गलजनक प्रभावों के निराकरण तथा हितकर प्रभावों की प्राप्ति के लिए प्रयत्न किया करते थे जिससे मनुष्य बिना किसी बाह्य विघ्न के अपना विकास और अभिवृद्धि कर सके और देवों तथा दिव्य शक्तियों से सामयिक निर्देश और सहायता प्राप्त कर सके। संस्कारों के अनेक अंगों के मूल में यही विश्वास रहे हैं। लेकिन आज के इस वैज्ञानिक युग में उनकी सत्ता और उपयोगिता पर प्रश्नवाची चिह्न और निरूद्देश्यता का कलंक लग गया है। किन्तु इतना होते हुए भी उनकी अपनी महत्ता है। समाज विज्ञान की दृष्टि से भी संस्कार अपना विशेष महत्व रखते है।

### आत्माभिव्यक्ति का माध्यम

संस्कारों का प्रथम उद्देश्य मानव–जीवन से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट भावनाओं एवं उद्वेगों को अभिव्यक्त करना था। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सुख–दुख, प्रेम तथा घृणा आदि अनेक नैसर्गिक प्रवृत्तियाँ होती हैं। जिनकी अभिव्यक्ति समय–समय पर होती है। लेकिन संस्कारों के माध्यम से हम इन उद्वेगों को एक निश्चित रूप तथा सुनियोजित ढंग से अभिव्यक्त कर सकते हैं। उदाहरणार्थ नामकरण संस्कार के द्वारा हम पुत्र के जन्म के आनन्द को अभिव्यक्त करते हैं। वास्तव में बालक के प्रगतिशील जीवन का प्रत्येक चरण परिवार को सन्तोष एवं हर्ष से भर देता है। इसी प्रकार विवाह का आयोजन भी उल्लास का अवसर माना

**अमङ्गलजनक प्रभावों के निराकरण तथा हितकर प्रभावों की प्राप्ति के लिए प्रयत्न किया करते थे जिससे मनुष्य बिना किसी बाह्य विघ्न के अपना विकास और अभिवृद्धि कर सके और देवों तथा दिव्य शक्तियों से सामयिक निर्देश और सहायता प्राप्त कर सके। संस्कारों के अनेक अंगों के मूल में यही विश्वास रहे हैं।**

जाता है जबकि अन्त्येष्टि संस्कार आत्म-परिजन के निधन पर उसके प्रति शोक एवं श्रद्धा का प्रतीक बन जाता है।

**विघ्न-बाधाओं और शुभ शक्तियों का प्रतिकार**-व्यक्ति को जीवन में अनेक ऐसी विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है जिससे उसका विकास क्रम अवरूद्ध होता है। अत: संस्कारों के द्वारा ऐसी विघ्न-बाधाओं और अशुभ शक्तियों को दूर करने का प्रयास किया जाता था। संस्कारों में इन बाधाओं को दूर करने के लिए उपकरण के रूप में अग्नि, जल एवं मंत्र आदि ऐसे उपादानों का प्रयोग किया जाता था जो अशुभनाशक हैं। इसी प्रकार हवन-पूजन के द्वारा देवताओं की आराधना की जाती थी ताकि अदृश्य बाधाएँ और अशुभ शक्तियाँ निष्क्रिय हो जाए और व्यक्ति के जीवन का विकास निर्बाध रूप से हो सके। उदाहरणार्थ गर्भाधान संस्कार के द्वारा पुरुष अपने शुक्राणु को विधिवत् और उचित समय पर स्त्री के गर्भ में रखता था ताकि निर्बल, कुरुप, विकलांग अथवा मृत सन्तान पैदा न हो। मुण्डन के अवसर पर बालक के कटे हुए केशों को गाय के गोबर के पिण्ड में रखकर गोशाला में गाड़ दिया जाता था। अथवा नदी में फेंक दिया जाता था ताकि उस पर अशुभ प्रयोग न कर सके। जन्म के तत्काल बाद जातकर्म संस्कार बच्चे को अनिष्टकारी प्रभावों से बचाने के लिए किया जाता था। सीमन्तोन्नयन संस्कार के अवसर पर केशों को भी इसी उद्देश्य से संवारा जाता था। इसी प्रकार दाह संस्कार के बाद राख को गंगा या किसी अन्य पवित्र नदी में प्रवाहित कर दिया जाता था। इसके पीछे स्वास्थ्य के दृष्टिकोण के साथ-साथ अशुभ प्रभावों से रक्षा की बात भी निहित है। स्वार्थपरता के वशीभूत होकर इन अमंगल शक्तियों को अपने ऊपर से हटाकर अन्य शक्तियों की ओर संक्रमित करने का प्रयास किया जाता था। उदाहरणार्थ वधू द्वारा धारण किए हुए वैवाहिक वस्त्र ब्राह्मण को दान कर दिये जाते थे, क्योंकि वे वधू के लिए घातक समझे जाते थे। कुछ भी हो, इस विषय में लोगों की धारणा थी कि ब्राह्मण इतना सशक्त है कि उस पर अशुभ शक्तियाँ आक्रमण नहीं कर सकती।

**इन संस्कारों में जहाँ एक ओर उपर्युक्त क्रियाओं द्वारा अशुभ शक्तियों का नाश किया जाता था वहीं दूसरी ओर शुभ शक्तियों का आवाह्न भी किया जाता था। हिन्दुओं का यह विश्वास था कि जीवन का प्रत्येक समय किसी न किसी देवता द्वारा अधिष्ठित है। अत: प्रत्येक अवसर पर संस्कार्य व्यक्ति को वर एवं आशीर्वाद देने के लिए उस देवता का आवाह्न किया जाता था।**

इन संस्कारों में जहाँ एक ओर उपर्युक्त क्रियाओं द्वारा अशुभ शक्तियों का नाश किया जाता था वहीं दूसरी ओर शुभ शक्तियों का आवाह्न भी किया जाता था। हिन्दुओं का यह विश्वास था कि जीवन का प्रत्येक समय किसी न किसी देवता द्वारा अधिष्ठित है। अत: प्रत्येक अवसर पर संस्कार्य व्यक्ति को वर एवं आशीर्वाद देने के लिए उस देवता का आवाह्न किया जाता था। इसके साथ-साथ वे स्वयं विविध उपायों से अपनी सहायता करते थे। शुभ वस्तुओं के स्पर्श से वे मङ्गल परिणाम की आशा करते थे। सीमन्तोन्नयन संस्कार के समय उदुम्बर वृक्ष की शाखा का पत्नी के गले से स्पर्श कराया जाता था। यह विश्वास था कि उसके स्पर्श से स्त्री में उर्वरता आ जाती है। शिलारोहण के माध्यम से दृढ़ता आती है इसलिए ब्रह्मचारी और वधू के लिए उसका विधान किया था। हृदय स्पर्श ब्रह्मचारी और आचार्य तथा पति और पत्नी के बीच में ऐक्य और सामजस्य स्थापित करने का एक निश्चित उपाय समझा जाता था। श्वास जीवन का प्रतीक समझा जाता था अत: पिता नवजात शिशु पर उसके श्वास-प्रश्वास को दृढ़ करने के लिए तीन बार फूंकता था। पुत्र सन्तति प्रजनन के लिए पत्नी की नाक के दाएं छेद में दूरव्यापी जड़वाले विशाल वट वृक्ष का रस छोड़ा जाता था। स्नातक के लिए अशुभ अक्षरों से प्रारंभ होने वाले शब्दों का उच्चारण या दूषित विचारों को मस्तिष्क में लाना निषिद्ध था।

**-क्रमश:**

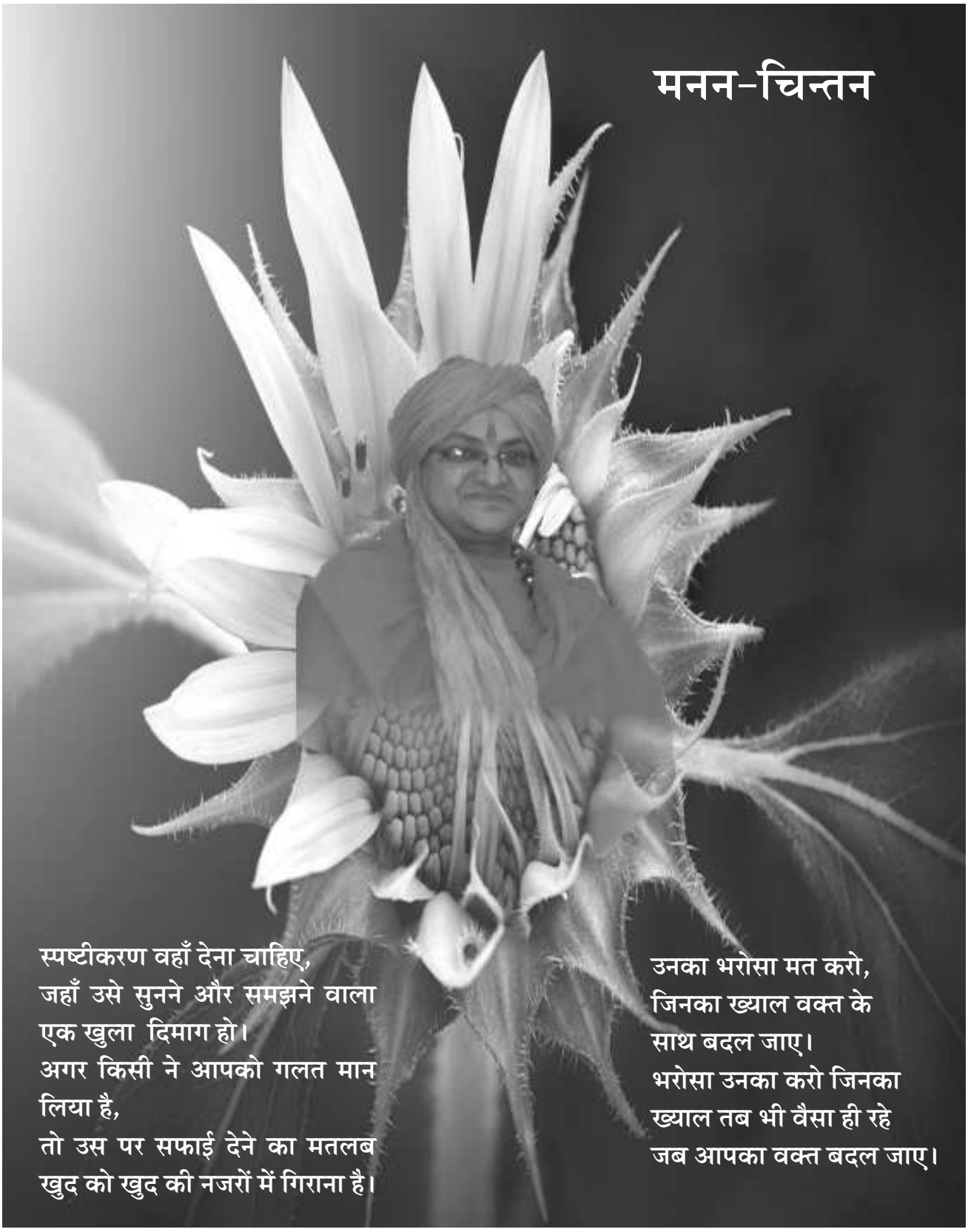
मनन-चिन्तन
स्पष्टीकरण वहाँ देना चाहिए,
जहाँ उसे सुनने और समझने वाला
एक खुला दिमाग हो।
अगर किसी ने आपको गलत मान
लिया है,
तो उस पर सफाई देने का मतलब
खुद को खुद की नजरों में गिराना है।
उनका भरोसा मत करो,
जिनका ख्याल वक्त के
साथ बदल जाए।
भरोसा उनका करो जिनका
ख्याल तब भी वैसा ही रहे
जब आपका वक्त बदल जाए।

# नालायक

महिमा शुक्ला

देर रात अचानक ही पिता जी की तबियत बिगड़ गयी। आहट पाते ही उनका नालायक बेटा उनके सामने था।

माँ ड्राईवर बुलाने की बात कह रही थी, पर उसने सोचा अब इतनी रात को इतना जल्दी ड्राईवर कहाँ आ पायेगा?

यह कहते हुये उसने सहज जिद और अपने मजबूत कंधों के सहारे बाऊजी को कार में बिठाया और तेजी से हॉस्पिटल की ओर भागा।

बाऊजी दर्द से कराहने के साथ ही उसे डांट भी रहे थे।

'धीरे चला नालायक, एक काम जो इससे ठीक से हो जाए।'

नालायक बोला

'आप ज्यादा बातें ना करें बाऊजी, बस तेज साँसें लेते रहिये, हम हॉस्पिटल पहुँचने वाले हैं।'

अस्पताल पहुँचकर उन्हे डॉक्टरों की निगरानी में सौंप, वो बाहर चहल कदमी करने लगा, बचपन से आज तक अपने लिये वो नालायक ही सुनते आया था।

उसने भी कहीं न कहीं अपने मन में यह स्वीकार कर लिया था की उसका नाम ही शायद नालायक ही हैं।

**देर रात अचानक ही पिता जी की तबियत बिगड़ गयी। आहट पाते ही उनका नालायक बेटा उनके सामने था। माँ ड्राईवर बुलाने की बात कह रही थी, पर उसने सोचा अब इतनी रात को इतना जल्दी ड्राईवर कहाँ आ पायेगा? यह कहते हुये उसने सहज जिद और अपने मजबूत कंधों के सहारे बाऊजी को कार में बिठाया और तेजी से हॉस्पिटल की ओर भागा।**

तभी तो स्कूल के समय से ही घर के लगभग सब लोग कहते थे की नालायक फिर से फेल हो गया।

नालायक को अपने यहाँ कोई चपरासी भी ना रखे।

कोई बेवकूफ ही इस नालायक को अपनी बेटी देगा।

शादी होने के बाद भी वक्त बे वक्त सब कहते रहते हैं की इस

बेचारी के भाग्य फूटें थे जो इस नालायक के पल्ले पड़ गयी।

हाँ बस एक माँ ही हैं जिसने उसके असल नाम को अब तक जीवित रखा है, पर आज अगर उसके बाऊजी को कुछ हो गया तो शायद वे भी..

इस ख्याल के आते ही उसकी आँखे छलक गयी और वो उनके लिये हॉस्पिटल में बने एक मंदिर में प्रार्थना में डूब गया। प्रार्थना में शक्ति थी या समस्या मामूली, डॉक्टरों ने सुबह-सुबह ही बाऊजी को घर जाने की अनुमति दे दी।

घर लौटकर उनके कमरे में छोड़ते हुये बाऊजी एक बार फिर चीखें,

'छोड़ नालायक ! तुझे तो लगा होगा कि बूढ़ा अब लौटेगा ही नहीं।'

उदास वो उस कमरे से निकला, तो माँ से अब रहा नहीं गया, 'इतना सब तो करता है, बावजूद इसके आपके लिये वो नालायक ही है ?'

विवेक और विशाल दोनों अभी तक सोये हुए हैं उन्हें तो अंदाजा तक नही हैं की रात को क्या हुआ होगा .....बहुओं ने भी शायद उन्हें बताना उचित नही समझा होगा ।

यह बिना आवाज दिये आ गया और किसी को भी परेशान नही किया

भगवान न करे कल को कुछ अनहोनी हो जाती तो?

और आप हैं की?

उसे शर्मिंदा करने और डांटने का एक भी मौका नही छोड़ते।

कहते-कहते माँ रोने लगी थी।

इस बार बाऊजी ने आश्चर्य भरी नजरों से उनकी ओर देखा और फिर नजरें नीची कर ली। माँ रोते-रोते बोल रही थी।

अरे, क्या कमी है हमारे बेटे में ?

हाँ मानती हूँ पढाई में थोड़ा कमजोर था तो क्या?

क्या सभी होशियार ही होते हैं?

वो अपना परिवार, हम दोनों को, घर-मकान, पुश्तैनी कारोबार, रिश्तेदार और

रिश्तेदारी सब कुछ तो बखूबी सम्भाल रहा है

जबकि बाकी दोनों जिन्हें आप लायक समझते हैं वो बेटे सिर्फ अपने बीबी और बच्चों के अलावा ज्यादा से ज्यादा अपने ससुराल का ध्यान रखते हैं ।

कभी पूछा आपसे की आपकी तबियत कैसी हैं?

और आप हैं की ....

बाऊजी बोले सरला तुम भी मेरी भावना नही समझ पाई?

मेरे शब्द ही पकड़े न ??

क्या तुझे भी यहीं लगता हैं की इतना सब के होने बाद भी इसे बेटा कह के नहीं बुला पाने का, गले से नहीं लगा पाने का दु:ख तो मुझे नही हैं?

क्या मेरा दिल पत्थर का हैं?

हाँ सरला सच कहूँ दु:ख तो मुझे भी होता ही है, पर उससे भी अधिक डर लगता है कि कहीं ये भी उनकी ही तरह लायक ना बन जाये।

इसलिए मैं इसे इसकी पूर्णता: का अहसास इसे अपने जीते जी तो कभी नही होने दूगाँ ....

माँ चौंक गई .....

ये क्या कह रहे हैं आप ???

हाँ सरला ...यहीं सच हैं

अब तुम चाहो तो इसे मेरा स्वार्थ ही कह लो। 'कहते हुये उन्होंने रोते हुए नजरे नीची किये हुए अपने हाथ माँ की तरफ जोड़ दिये जिसे माँ ने झट से अपनी हथेलियों में भर लिया।

**नालायक बोला 'आप ज्यादा बातें ना करें बाऊजी, बस तेज साँसें लेते रहिये, हम हॉस्पिटल पहुँचने वाले हैं।'अस्पताल पहुँचकर उन्हे डॉक्टरों की निगरानी में सौंप, वो बाहर चहल कदमी करने लगा, बचपन से आज तक अपने लिये वो नालायक ही सुनते आया था। उसने भी कहीं न कहीं अपने मन में यह स्वीकार कर लिया था की उसका नाम ही शायद नालायक ही हैं।**

और कहा अरे ...अरे ये आप क्या कर रहे हैं मुझे क्यो पाप का भागी बना रहे हैं ।

मेरी ही गलती हैं मैं आपको इतने वर्षों में भी पूरी तरह नही समझ पाई .....

और दूसरी ओर दरवाजे पर वह नालायक खड़ा-खड़ा यह सारी बातचीत सुन रहा था वो भी आंसुओं में तरबतर हो गया था।

उसके मन में आया की दौड़ कर अपने बाऊजी के गले से लग जाये पर ऐसा करते ही उसके बाऊजी झेंप जाते, यह सोच कर वो अपने कमरे की ओर दौड़ गया।

कमरे तक पहुँचा भी नही था की बाऊजी की आवाज कानों में पड़ी..

अरे नालायक ..वो दवाईयाँ कहां रख दी गाड़ी में ही छोड़ दी क्या?

कितना भी समझा दो इससे एक काम भी ठीक से नहीं होता ....

नालायक झटपट आँसू पोंछते हुये गाड़ी से दवाईयाँ निकाल कर बाऊजी के कमरे की तरफ दौड़ गया।

शब्द नहीं हैं (नालायक) ❑

## राजा दशरथ की सीख

**राजा दशरथ जब अपने चारों बेटों की बारात लेकर राजा जनक के द्वार पर पहुंचे तो राजा जनक ने सम्मानपूर्वक बारात का स्वागत किया। तभी दशरथजी ने आगे बढ़कर जनकजी के चरण छू लिए। चौंककर जनकजी ने दशरथजी को थाम लिया और कहा- महाराज, आप बड़े हैं, वर पक्ष वाले हैं, ये उल्टी गंगा कैसे बहा रहे हैं? इस पर दशरथजी ने बड़ी सुंदर बात कही- महाराज, आप दाता हैं, कन्यादान कर रहे हैं। मैं तो याचक हूं, आपके द्वार कन्या लेने आया हूं। अब आप ही बताएं कि दाता और याचक दोनों में कौन बड़ा है? यह सुनकर जनकजी के नेत्रों से अश्रुधारा बह निकली। भाग्यशाली हैं वे जिनके घर होती हैं बेटियां! हर बेटी के भाग्य में पिता होता है, लेकिन हर पिता के भाग्य में बेटी नहीं होती।**

# आदतें औकात का पता बता देती हैं...

राजेश चौबे

**एक राजा के दरबार में एक अजनबी इंसान नौकरी मांगने के लिए आया। उससे उसकी काबलियत पूछी गई, तो वो बोला, 'मैं आदमी हो चाहे जानवर, शक्ल देख कर उसके बारे में बता सकता हूँ। राजा ने उसे अपने खास 'घोड़ों के अस्तबल का इंचार्ज' बना दिया।**

एक राजा के दरबार में एक अजनबी इंसान नौकरी मांगने के लिए आया। उससे उसकी काबलियत पूछी गई, तो वो बोला, 'मैं आदमी हो चाहे जानवर, शक्ल देख कर उसके बारे में बता सकता हूँ। राजा ने उसे अपने खास 'घोड़ों के अस्तबल का इंचार्ज' बना दिया। चंद दिनों बाद राजा ने उससे अपने सब से महंगे और मनपसन्द घोड़े के बारे में पूछा, उसने कहा, 'नस्ली नही हैं।' राजा को हैरानी हुई, उसने जंगल से घोड़े वाले को बुला कर पूछा.. उसने बताया, घोड़ा नस्ली तो हैं, पर इसकी पैदायश पर इसकी माँ मर गई थी, ये एक गाय का दूध पी कर उसके साथ पला है। राजा ने अपने नौकर को बुलाया और पूछा तुम को कैसे पता चला के घोड़ा नस्ली नहीं हैं?' 'उसने कहा' जब ये घास खाता है तो गायों की तरह सर नीचे करके, जबकि नस्ली घोड़ा घास मुँह में लेकर सर उठा लेता हैं।' राजा उसकी काबलियत से बहुत खुश हुआ, उसने नौकर के घर अनाज, घी, मुर्गे और अंडे बतौर इनाम भिजवा दिए और उसे रानी के महल में तैनात कर दिया। चंद दिनों बाद राजा ने उस से रानी के बारे में राय माँगी, उसने कहा, 'तौर-तरीके तो रानी जैसे हैं लेकिन पैदाइशी नहीं हैं।'

राजा के पैरों तले जमीन निकल गई, उसने अपनी सास को बुलाया मामला उसको बताया, सास ने कहा 'हकीकत ये हैं, कि आपके पिताजी ने मेरे पति से हमारी बेटी की पैदाइश पर ही रिश्ता मांग लिया था, लेकिन हमारी बेटी 6 माह में ही मर गई थी, लिहाजा हम ने आपके रजवाड़े से करीबी रखने के लिए किसी और की बच्ची को अपनी बेटी बना लिया।'

राजा ने फिर अपने नौकर से पूछा 'तुम को कैसे पता चला?'

'उसने कहा,' रानी साहिबा का नौकरों के साथ सुलूक गंवारों से भी बुरा हैं। एक खानदानी इंसान का दूसरों से व्यवहार करने का एक तरीका होता हैं, जो रानी साहिबा में बिल्कुल नहीं। राजा फिर उसकी पारखी नजरों से खुश हुआ और बहुत से अनाज, भेड़ बकरियां बतौर इनाम दीं साथ ही उसे अपने दरबार में तैनात कर दिया।

कुछ वक्त गुजरा, राजा ने फिर नौकर को बुलाया और अपने बारे में पूछा।

नौकर ने कहा 'जान की सलामती हो तो कहूँ।' राजा ने वादा किया।

उसने कहा, 'न तो आप राजा के बेटे हो और न ही आपका चाल-चलन राजाओं वाला है।' राजा को बहुत गुस्सा आया, मगर जान की सलामती का वचन दे चुका था, राजा सीधा अपनी माँ के महल पहुंचा।

माँ ने कहा, 'ये सच है, तुम एक चरवाहे के बेटे हो, हमारी औलाद नहीं थी तो तुम्हें गोद लेकर हमने पाला।'

राजा ने नौकर को बुलाया और पूछा, बता, 'तुझे कैसे पता चला?' उसने कहा जब राजा किसी को इनाम दिया करते हैं, तो हीरे-मोती और जवाहरात की शक्ल में देते हैं....लेकिन आप भेड़, बकरियां, खाने-पीने की चीजें दिया करते हैं...ये रवैया किसी राजाओं का नहीं, किसी चरवाहे के बेटे का ही हो सकता है। किसी इंसान के पास कितनी धन-दौलत, सुख-समृद्धि, रुतबा, इल्म, बाहुबल हैं ये सब बाहरी दिखावा हैं। इंसान की असलियत की पहचान उसके व्यवहार और उसकी नियत से होती हैं... इसीलिए हैसियत बदल जाती है,पर सोच नहीं!

❑

# सत्संग का प्रभाव सर्प बन गया देवपुरुष

प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल

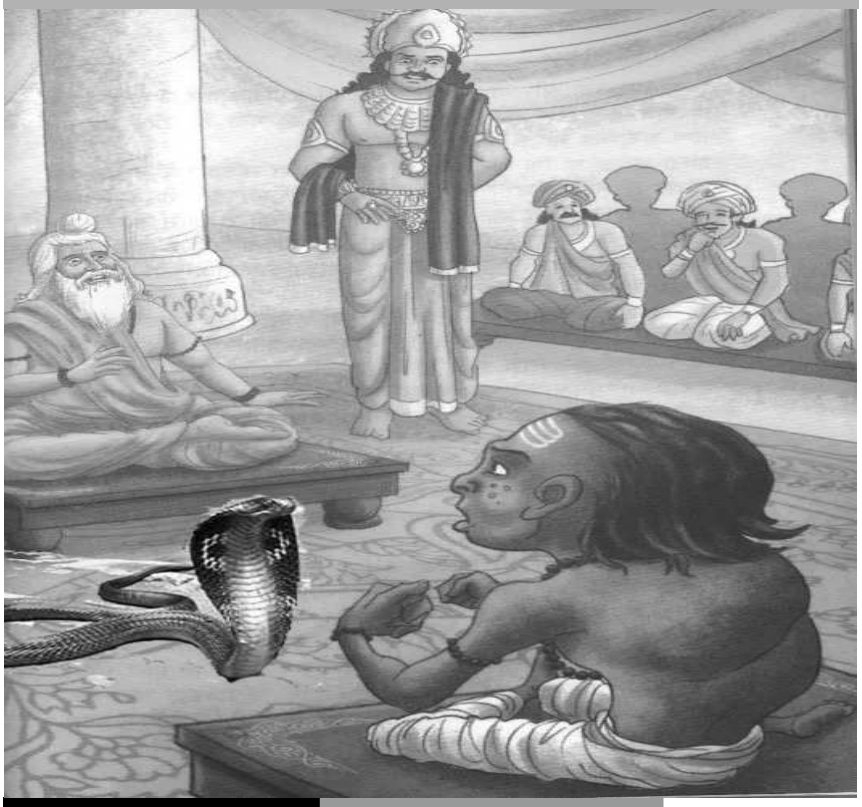

**राजा जनक ने सत्संग का आयोजन किया। जिस समय सत्संग का आरम्भ होने वाला था उसी समय एक काला भयंकर विषधर उस सभा में आया। सत्संगकर्ता अष्टावक्र ऋषि ने योगबल से सर्प का भूतकाल देखकर सभाजनों से कहा, ''तुम लोग भयभीत मत हों, यह भूतपूर्व सम्राट राजा अज हैं।''**

राजा जनक ने सत्संग का आयोजन किया। जिस समय सत्संग का आरम्भ होने वाला था उसी समय एक काला भयंकर विषधर उस सभा में आया। सत्संगकर्ता अष्टावक्र ऋषि ने योगबल से सर्प का भूतकाल देखकर सभाजनों से कहा, ''तुम लोग भयभीत मत हों, यह भूतपूर्व सम्राट राजा अज हैं।''

सत्संग की पूर्णाहुति की घडियां आई तब सर्प की जगह पर एक देवपुरुष की आकृति उभर आई। उस देवपुरुष ने राजा जनक का माथा चूमते हुए कहा, ''पुत्र हो तो तेरे जैसे हों। तुम्हारे सत्संग आयोजन से और अष्टावक्र मुनि की कृपा से मैं सत्संग सुन पाया जिसके फलस्वरूप मुझे अजगर की दुखद योनि से छुटकारा मिला।''

राजा अज पार्षदों के साथ स्वर्ग की ओर गए। राजा जनक को पूर्वजों के दर्शन करने की इच्छा हुई। वह योगबल से यमपुरी पहुंचे। उन्हें देखकर यमराज बोले, ''जनक, तुम सीधे स्वर्ग में नहीं जा सकते, तुम्हें नरक के रास्ते होते हुए जाना पड़ेगा।''

जनक 2 यमदूतों के साथ स्वर्ग की ओर जाने लगे। मार्ग में नारकीय जीवों का आक्रंद सुनकर जनक चकित हो गए। इतने में वह आक्रंद जय- जयकार में बदल गया। 'जनक, तुम्हारी जय हो-जय हो'। यमदूत बोले, ''महाराज, आपने गुरुदीक्षा ली है और गुरुतत्व व आत्मतत्व का प्याला पिया है। आपको छूकर बहती हवा पापियों के पाप-ताप को निवृत्त कर रही है। इसलिए वे जय-जयकार कर रहे हैं।'' जनक ने यमदूतों से कहा, ''यदि मेरे यहां रुकने से इन्हें शांति मिलती है तो मैं यहां ठहरता हूं।'' उसी समय नरक के अधिष्ठाता ने आकर जनक को कहा, ''राजन, आप पुण्यात्मा हैं। आप यहां अधिक देर तक नहीं ठहर सकते। कृपया अब आप स्वर्ग की ओर प्रस्थान करें।'' जनक बोले, ''यदि ऐसा ही है तो इनके कल्याण के लिए मैं अपने सारे पुण्य अर्पित करता हूं।'' उसी समय यमराज स्वयं वहां पधारे और बोले, ''जनक, इनकी भलाई में अपने पुण्य अर्पित करने से तो तुम्हें महापुण्य प्राप्त हुआ है।'' जनक बोले, ''मैं अपना महापुण्य भी इनके कल्याण हेतु अर्पित करता हूं।'' फिर तो साक्षात नारायण आ गए और बोले, ''जनक, अब तो तुम्हें परम पुण्य प्राप्त हुआ है। तुम्हारे जैसे महात्मा जहां जाते हैं वहीं मेरा और बैकुंठ का प्राकट्य हो जाता है।'' जनक बोले, ''भगवन, मुझे तो पता तक नहीं था कि सत्संग, संत-सान्निध्य का इतना महत्व है। प्रभु, अब तो मैं अपने अंतरात्म-स्वर्ग में ही नित्य निवास करूंगा।'' भगवान ने कहा, ''जनक, आज से मेरे 2 हृदय होंगे। मेरा एक हृदय तुम्हारे जैसे संतों के साथ रहेगा और दूसरा हृदय जब-जब मैं अवतार लूंगा तब-तब काम में लूंगा।'' ❑

रितेश पाण्डेय

# काम और जीवन

**एक व्यक्ति अपनी जीविका चलाने के लिए ब्रेड बेचने का काम करता था। वह दिन-रात मेहनत करता, ताकि अपनी पत्नि और दो बच्चों की गुजर-बसर ठीक से कर सके। दिन-भर काम करने के बाद वह शाम को Extra Classes भी जाया करता, ताकि एक बेहतर Job हासिल कर सके। रविवार को छोड़कर शायद ही ऐसा कोई दिन होता।**

एक व्यक्ति अपनी जीविका चलाने के लिए ब्रेड बेचने का काम करता था। वह दिन-रात मेहनत करता, ताकि अपनी पत्नि और दो बच्चों की गुजर-बसर ठीक से कर सके। दिन-भर काम करने के बाद वह शाम को Extra Classes भी जाया करता, ताकि एक बेहतर Job हासिल कर सके। रविवार को छोड़कर शायद ही ऐसा कोई दिन होता। जब वह अपने परिवार के साथ बैठकर भोजन कर पाता था। जब भी उसकी पत्नी या बच्चे इस बात की शिकायत करते कि वह उनके साथ पर्याप्त समय व्यतीत नहीं करता है, तो वह कहता कि उनके साथ समय बिताने के लिए वह भी तरसता है। लेकिन ये सब वह उन सबके लिए ही कर रहा है। उसकी मेहनत का फल भी उसे मिला और वह दिन आ गया जब उसे एक Company में Senior Supervisor की Job मिल गई। हर महीने मिलने वाली अच्छी Salary से वह अपने परिवार के लिए अच्छे कपड़े, अच्छा खाना और अन्य सुविधाएँ मुहैया करवाने लगा। वह One bedroom flat से two bedroom flat में Shift हो गया। जीवन पहले से अधिक आसान हो गया था। लेकिन इसके बावजूद वह अपनी पत्नी और बच्चों से सप्ताह के अधिकांश दिन अधिक मिल नहीं पाता था क्योंकि अब वह Company में Promotion पाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा था। इस संबंध में पत्नि और बच्चों की शिकायत पर वह उनसे यही कहता कि वह ये सब उनके लिए ही तो कर रहा है। कुछ वर्षों बाद उसका Promotion हो गया। अब घर के कामों में अपनी पत्नि की सहायता के लिए उसने नौकर रख लिए Two bedroom flat उसे छोटा लगने लगा और उसने Three bedroom flat खरीद लिया। लेकिन अब भी उसके पास परिवार के लिए समय नहीं था, वह आगे की Promotion के लिए मेहनत करने में लग गया था। अब तो कई-कई बार वह रविवार के दिन भी व्यस्त रहता। परिवार को जवाब देने के लिए अब भी उसके पास यही था कि वह ये सब उनके लिए ही तो कर रहा है। कुछ वर्षों बाद उसका दूसरा Promotion हो गया। अब उसने एक बड़ा सा बंगला खरीद लिया, कई नौकर-चाकर रख लिए अब वह संतुष्ट था। उसने तय किया कि अब उसे और Promotion नहीं चाहिए, वह अपने परिवार के साथ अधिक से अधिक वक्त गुजारना चाहता है। उसके इस निर्णय से उसके पत्नि और बच्चे बहुत खुश हुए। उस रात वह व्यक्ति बहुत ही शांति की नींद सोया। अगली सुबह जब पत्नी उसे जगाने गई, तो वह उठा ही नहीं। वह हमेशा के लिए सो चुका था। मित्रों, काम और जीवन के मध्य संतुलन का होना अति-आवश्यक है। हम अपने और अपने परिवार के सुखमय और आनंदमय जीवन की चाह में काम करते हैं, मेहनत करते हैं, जो आवश्यक भी है। लेकिन हमें इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि कहीं कार्य में अतिसंलिप्तता की वजह से हमारा परिवार हमसे दूर तो नहीं होता जा रहा, कहीं आगे बढ़ने की होड़ में हमारा परिवार और जीवन तो पीछे नहीं छूटता जा रहा, कहीं हम जीवन जीना और उसका आनंद लेना तो नहीं भूल गए हैं। ऐसा ना हो कि जब हम अपने खुद के जीवन के लिए समय निकाले, तब तक जीवन ही हाथ से निकल जाये। ❑

**क्रोध से भ्रम पैदा होता है, भ्रम से बुद्धि व्यग्र होती है, जब बुद्धि व्यग्र होती है तब तर्क नष्ट हो जाता है, जब तर्क नष्ट होता है, तब व्यक्ति का पतन हो जाता है।**

# महान सम्राट राजा जनक के गुरु ऋषि अष्टावक्र

अनिरुद्ध जोशी 'शतायु'

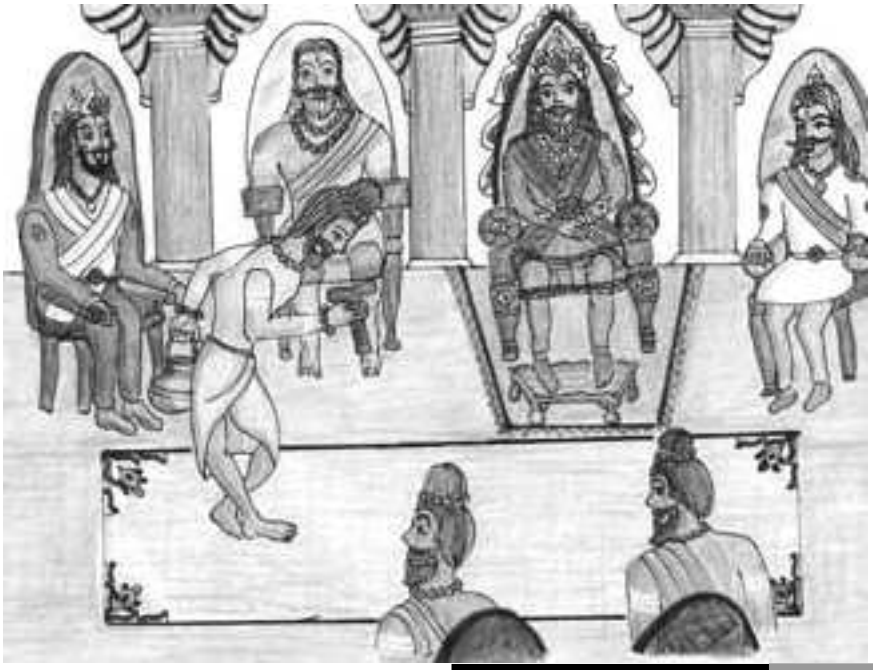

**सद्गुरु ओशो रजनीश ने अष्टावक्र की कहानी को कुछ इस तरह बयां किया. ..पिता के इस शाप के बावजूद अष्टावक्र पिताभक्त थे। जब वे बारह वर्ष के थे तब राज्य के राजा जनक ने विशाल शास्त्रार्थ सम्मेलन का आयोजन किया। सारे देश के प्रकांड पंडितों को निमंत्रण दिया गया, चूंकि अष्टावक्र के पिता भी प्रकांड पंडित और शास्त्रज्ञ थे तो उन्हें भी विशेष आमंत्रित किया गया।**

सद्गुरु ओशो रजनीश ने अष्टावक्र की कहानी को कुछ इस तरह बयां किया. ..पिता के इस शाप के बावजूद अष्टावक्र पिताभक्त थे। जब वे बारह वर्ष के थे तब राज्य के राजा जनक ने विशाल शास्त्रार्थ सम्मेलन का आयोजन किया। सारे देश के प्रकांड पंडितों को निमंत्रण दिया गया, चूंकि अष्टावक्र के पिता भी प्रकांड पंडित और शास्त्रज्ञ थे तो उन्हें भी विशेष आमंत्रित किया गया। जनक ने आयोजन स्थल के समक्ष 1000 गाएं बांध दीं। गायों के सींगों पर सोना मढ़ दिया और गले में हीरे-जवाहरात लटका दिए और कह दिया कि जो भी विवाद में विजेता होगा वह ये गाएं हांककर ले जाए।

संध्या होते-होते खबर आई कि अष्टावक्र के पिता हार रहे हैं। सबसे तो जीत चुके थे। लेकिन वंदनि (बंदी) नामक एक पंडित से हारने की स्थिति में पहुंच गए थे। पिता के हारने की स्थिति तय हो चुकी थी कि अब हारे या तब हारे। यह खबर सुनकर अष्टावक्र खेल-क्रीड़ा छोड़कर राजमहल पहुंच गए। अष्टावक्र भरी सभा में जाकर खड़े हो गए। उनका आठ जगहों से टेढ़ा-मेढ़ा शरीर और अजीब चाल देखकर सारी सभा हंसने लगी। अष्टावक्र यह नजारा देखकर सभाजनों से भी ज्यादा जोर से खिलखिलाकर हंसे।

जनक ने पूछा, 'सब हंसते हैं, वह तो मैं समझ सकता हूं, लेकिन बेटे, तेरे हंसने का कारण बता?'

अष्टावक्र ने कहा, 'मैं इसलिए हंस रहा हूं कि इन चमारों की सभा में सत्य का निर्णय हो रहा है, आश्चर्य! ये चमार यहां क्या कर रहे हैं।'

सारी सभा में सन्नाटा छा गया। सब अवाक् रह गए। राजा जनक खुद भी सन्न रह गए। उन्होंने बड़े संयत भाव से पूछा, 'चमार!!! तेरा मतलब क्या?'

अष्टाव्रक ने कहा, 'सीधी-सी बात है। इनको चमड़ी ही दिखाई पड़ती है, मैं नहीं दिखाई पड़ता। ये चमार हैं। चमड़ी के पारखी हैं। इन्हें मेरे जैसा सीधा-सादा आदमी दिखाई नहीं पड़ता, इनको मेरा आड़ा-तिरछा शरीर ही दिखाई देता है। राजन, मंदिर के टेढ़े होने से आकाश कहीं टेढ़ा होता है? घड़े के फूटे होने से आकाश कहीं फूटता है? आकाश तो निर्विकार है। मेरा शरीर टेढ़ा-मेढ़ा है लेकिन मैं तो नहीं। यह जो भीतर बसा है, इसकी तरफ तो देखो। मेरे शरीर को देखकर जो हंसते हैं, वे चमार नहीं तो क्या हैं?

यह सुनकर मिथिला देश के नरेश एवं भगवान राम के श्वसुर राजा जनक सन्न रह गए। जनक को अपराध बोध हुआ कि सब हंसे तो ठीक, लेकिन मैं भी इस बालक के शरीर को देखकर हंस दिया। राजा जनक के जीवन की सबसे बड़ी घटना थी। देश का सबसे बड़ा ताम-झाम। सबसे सुंदर गाएं। सबसे महंगे हीरे-जवाहरात। सबसे विद्वान पंडित और सारे संसार में इस कार्यक्रम का समाचार और सिर्फ एक ही झटके में सब कुछ खत्म। जनक को बहुत पश्चाताप हुआ।

सभा भंग हो गई।

रात भर राजा जनक सो न सके। दूसरे दिन सम्राट जब घूमने निकले तो उन्हें वही बालक अष्टावक्र खेलते हुए नजर आया। वे अपने घोड़े से उतरे और उस बालक के चरणों में गिर पड़े। कहा-'आपने मेरी नींद तोड़ दी। आप में जरूर कुछ बात है। आत्मज्ञान की चर्चा करने वाले शरीर पर हंसते हैं तो वे कैसे ज्ञानी हो सकते हैं। प्रभु आप मुझे ज्ञान दो।'

तब राजा जनक ने उस बालक से विधिवत दीक्षा लेकर ज्ञान की शिक्षा ली। सबसे पहले अष्टावक्र ने कहा...जो-जो अज्ञान है उसे जान लेना ही ज्ञान की शुरुआत है। अष्टावक्र और राजा जनक के बीच जो संवाद उसे 'अष्टावक्र महागीता' के नाम से जाना जाता है।

पहला प्रश्न- वयोवृद्ध राजा जनक, बालक अष्टावक्र से पूछते हैं-हे प्रभु, ज्ञान की प्राप्ति कैसे होती है, मुक्ति कैसे प्राप्त होती है, वैराग्य कैसे प्राप्त किया जाता है, ये सब मुझे बताएं।

**वयोवृद्ध राजा जनक, बालक अष्टावक्र से पूछते हैं-हे प्रभु, ज्ञान की प्राप्ति कैसे होती है, मुक्ति कैसे प्राप्त होती है, वैराग्य कैसे प्राप्त किया जाता है, ये सब मुझे बताएं। श्री अष्टावक्र उत्तर देते हैं-यदि आप मुक्ति चाहते हैं तो अपने मन से विषयों (वस्तुओं के उपभोग की इच्छा) को विष की तरह त्याग दीजिये। क्षमा, सरलता, दया, संतोष तथा सत्य का अमृत की तरह सेवन कीजिए।**

श्री अष्टावक्र उत्तर देते हैं-यदि आप मुक्ति चाहते हैं तो अपने मन से विषयों (वस्तुओं के उपभोग की इच्छा) को विष की तरह त्याग दीजिये। क्षमा, सरलता, दया, संतोष तथा सत्य का अमृत की तरह सेवन कीजिए।

आप ब्राह्मण आदि सभी जातियों अथवा ब्रह्मचर्य आदि सभी आश्रमों से परे हैं तथा आँखों से दिखाई न पड़ने वाले हैं। आप निर्लिप्त, निराकार और इस विश्व के साक्षी हैं, ऐसा जान कर सुखी हो जाएँ।

धर्म, अधर्म, सुख, दु:ख मस्तिष्क से जुड़ें हैं, सर्वव्यापक आप से नहीं। न आप करने वाले हैं और न भोगने वाले हैं, आप सदा मुक्त ही हैं।

सदा केवल आत्मा का दर्शन करने वाले बुद्धिमान व्यक्ति भोजन कराने पर या पीड़ित करने पर न प्रसन्न होते हैं और न क्रोध ही करते हैं।

❑

## सोच के मुताबिक बनता है कर्म

**दो मित्र अक्सर एक वेश्या के पास जाया करते थे। एक शाम जब वे वहां जा रहे थे, रास्ते में किसी संत का आध्यात्मिक प्रवचन चल रहा था। एक मित्र ने कहा कि वह प्रवचन सुनना पसंद करेगा। उसने उस रोज वेश्या के यहां नहीं जाने का फैसला किया। दूसरा व्यक्ति मित्र को वहीं छोड़ वेश्या के यहां चला गया। अब जो व्यक्ति प्रवचन में बैठा था, वह अपने मित्र के विचारों में डूबा हुआ था। सोच रहा था कि वह क्या आनंद ले रहा होगा और कहां मैं इस खुश्क जगह में आ बैठा। मेरा मित्र ज्यादा बुद्धिमान है, क्योंकि उसने प्रवचन सुनने की बजाए वेश्या के यहां जाने का फैसला किया। उधर, जो आदमी वेश्या के पास बैठा था, वह सोच रहा था कि उसके मित्र ने इसकी जगह प्रवचन में बैठने का फैसला करके मुक्ति का मार्ग चुना है, जबकि मैं अपनी लालसा में खुद ही आ फंसा। प्रवचन में बैठे व्यक्ति ने वेश्या के बारे में सोचकर बुरे कर्म बटोरे। अब वही इसका दुख भोगेगा। गलत काम की कीमत आप इसलिए नहीं चुकाते, क्योंकि आप वेश्या के यहां जाते हैं। आप कीमत इसलिए चुकाते हैं क्योंकि आप चालाकी करते हैं। आप जाना वहां चाहते हैं, लेकिन सोचते हैं कि प्रवचन में जाने से आप स्वर्ग के अधिकारी बन जाएंगे। यही चालाकी आपको नरक में ले जाती है। आप जैसा महसूस करते हैं, वैसे ही आप बन जाते हैं। मान लीजिए कि आप जुआ खेलने के आदी हैं। हो सकता है कि अपने घर में मां, पत्नी या बच्चों के सामने आप जुआ को खराब बताते हों। इसका नाम तक मुंह पर नहीं लाते हों। लेकिन जैसे ही अपने गैंग से मिलते हैं, पत्ते फेंटने लगते हैं। चोरों को क्या ऐसा लगता है कि किसी को लूटना बुरा है? जब आप चोरी में असफल होते हैं, तो वे सोचते हैं कि आप अच्छे चोर नहीं हैं। उनके लिए वह एक बुरा कर्म हो जाता है। हमें ये समझना होगा कि कर्म उसी तरह से बनता है, जिस तरह आप उसे महसूस करते हैं। आप जो कर रहे हैं, उससे इसका संबंध नहीं है।**

# लाल बहादुर शास्त्री के जीवन के प्रसंग

साभार

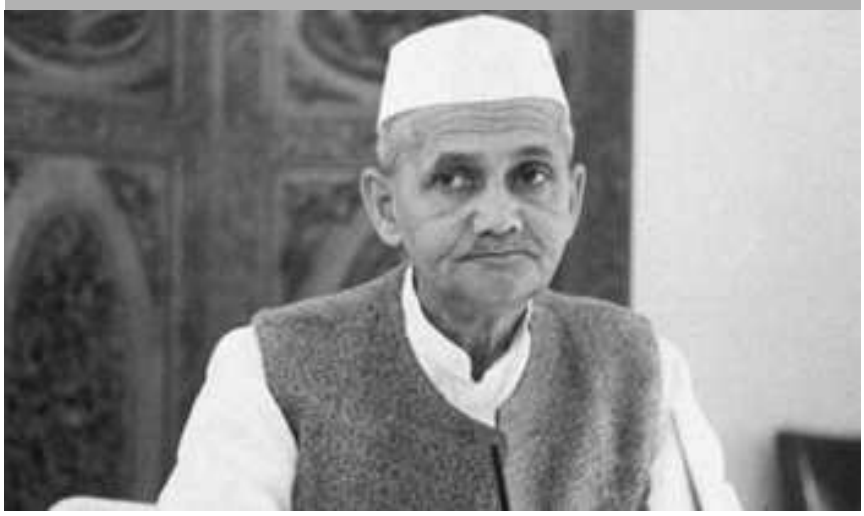

लाल बहादुर शास्त्री भारत के दूसरे प्रधानमंत्री थे। वो एक ऐसे प्रधानमंत्री थे जिन्होंने अपने शासनकाल में स्वजनों की, स्वजातियों और सगे-सम्बन्धियों की उपेक्षा करके सत्य की रक्षा की। यहाँ तक कि उन्होंने अपनी वृद्धा माता एवं अपनी पत्नी की भी सिफारिश पर कभी जरा भी ध्यान नहीं दिया। सत्रह-अठारह वर्षों तक उच्च पदों पर रहते हुए भी शास्त्रीजी के पास कुछ नहीं था। उन्होंने सदैव सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के पथ का अनुसरण किया। उनके जीवन के कुछ प्रेरक प्रसंग इस प्रकार हैं-

एक बार की बात है, शास्त्री जी स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान जेल में थे। घर पर उनकी पुत्री बीमार थी और उसकी हालत काफी गंभीर थी। उनके साथियों ने उन्हें जेल से बाहर आकर पुत्री को देखने का आग्रह किया। पैरोल भी स्वीकृत हो गई, परन्तु शास्त्री जी ने पैरोल पर छूटकर जेल से बाहर आना अपने आत्मसम्मान के विरुद्ध समझा! क्योंकि वे यह लिखकर देने को तैयार न थे कि बाहर निकलकर वे आन्दोलन में कोई काम नहीं करेंगे। अंत में मजिस्ट्रेट को पन्द्रह दिनों के लिए उन्हें बिना शर्त छोड़ना पड़ा। वे घर पहुँचे, लेकिन उसी दिन बालिका के प्राण-पखेरू उड़ गए। शास्त्री जी ने कहा, जिस काम के लिए मैं आया था, वह पूरा हो गया है। अब मुझे जेल वापस जाना चाहिये और उसी दिन वो जेल वापस चले गये।

शास्त्री जी ईमानदारी की साक्षात् मूर्ती थे। नियमों के पालन में उन्होंने कभी अपने रिश्तेदारों का भी पक्ष नहीं लिया। कई बार उनके आधीन अधिकारी, उनके रिश्तेदार की नियम विरुद्ध भी सहायता करने को तैयार हुए, किन्तु शास्त्री जी ने उनकी भी बात मानने में असमर्थता प्रकट कर दी।

जब शास्त्रीजी उत्तर प्रदेश में पुलिस मंत्री थे, तब एक दिन शास्त्री जी की मौसी के लड़के को एक प्रतियोगिता परीक्षा में बैठना पड़ा। उसे कानपुर से लखनऊ जाना था। गाड़ी छूटने वाली थी, इसलिए वह टिकट न ले सका। लखनऊ में वह बिना टिकट पकड़ा गया। उसने शास्त्री जी का नाम बताया। शास्त्री जी के पास फोन आया। शास्त्री जी का यही उत्तर था, हाँ है तो मेरा रिश्तेदार! किन्तु आप नियम का पालन करें। यह सब जानने के बाद मौसी नाराज हो गई।

एक बार उनका सगा भांजा आई.ए.एस. की परीक्षा में सफल हो गया, परन्तु उसका नाम सूची में इतना नीचे था कि चालू वर्ष में नियुक्ति का नंबर नहीं आ सकता था, किन्तु अगर शास्त्री जी जरा सा इशारा कर देते तो उसे इसी वर्ष नियुक्ति मिल सकती थी। बहन ने आग्रह किया, परन्तु उनका सीधा उत्तर था, सरकार को जब आवश्यकता होगी, नियुक्ति स्वत: ही हो जाएगी।

जब वे रेल मंत्री थे तब एक रेल दुर्घटना हो गई। शास्त्री जी ने तुरंत मंत्री पद से स्तीफा दे दिया।

क्या गजब की सत्यनिष्ठा और ईमानदारी थी उनमें। इन्हीं सब गुणों के कारण उन्हें नेहरू जी का उत्तराधिकारी बनाया गया। यद्यपि कोई सोचता भी न था कि वे प्रधानमंत्री बनाये जायेंगे। आज के राजनेताओं को उनके आदर्शों का पालन करना चाहिए, जिससे अपना देश एक साफ-सुथरी छवि वाला एवं भ्रष्टाचार मुक्त देश बन सके। ❑

किसी के दिल को ठेस पंहुचा कर माफ़ी मागना बहुत ही आसान है , लेकिन किसी से चोट खाकर किसी को माफ़ करना बहुत ही मुश्किल ही है.

अरूण शुक्ला

# लाला जी का लालच

एक बार एक सेठ ने मार्ग में जाते हुए एक खजूर का पेड़ देखा जिस में मीठी-मीठी और मोटी-मोटी खजूर लगी हुई थी। खजूर देखकर लालाजी के मुँह में पानी भर आया और वह उन्हें खाने के लिए पेड़ पर चढ़ गये। खजूर खाने के बाद ज्योंही उतरने के लिये पृथ्वी पर देखा, त्यों ही सेठजी का शरीर कांपने लगा, उसने सोचा कि यदि कहीं उतरते समय इसके नीचे गिर पड़ा तो हड्डियों का भी कहीं पता न लगेगा। ऐसा विचार करते हुए वह थर-थर कांप रहा था और खजूर खाने की इच्छा करने वाले अपने मन को बार-बार धिक्कार रहा था।

इस प्रकार सोच-विचार करते हुए बहुत समय व्यतीत हो गया तो उसने कहा—'इस प्रकार पेड़ पर कब तक बैठा रहूँगा। इसलिये परमेश्वर का संकल्प कर धीरे-धीरे पेड़ पर से उतरना आरम्भ कर दिया। जब वह पेड़ पर से आधा नीचे आया तो उसने कहा कि सौ ब्राह्मण तो अधिक होंगे इसलिये पचास को ही भोजन कराऊंगा। हे सज्जनों! वह सेठ ज्यों-ज्यों पेड़ के नीचे उतर रहा था, त्यों-त्यों जिमाने वाले ब्राह्मणों की संख्या भी कम होती जा रही थी।

अन्त में जब वह निर्विघ्नता के साथ पेड़ से नीचे उतर आया तो उसने कहा कि 'केवल दो बिन्दी ऊपर की हटानी पड़ेगी। इसलिये घर पहुँचते ही एक ब्राह्मण को भोजन करा दूँगा। ऐसा करने से न तो प्रतिज्ञा ही भंग होगी और न अधिक खर्च ही करना पड़ेगा।

यह विचार करता हुआ सेठ घर चला गया और दूसरे दिन किसी ऐसे ब्राह्मण को खोजने लगा जो कम से कम भोजन करने वाला हो। अब उसका नियम हो गया था कि कोई ब्राह्मण उसकी दुकान के आगे से निकलता उसी से आहार के बारे में पूछता।

बेचारे सरल स्वभाव ब्राह्मण जितना भोजन करते उससे कहीं अधिक कह देते थे। इस कारण से वह भोजन नहीं कराता।

एक दिन एक धूर्त ने विचार किया कि क्यों न इस लाला को लूट कर अपने घर का काम चलाया जाय। यह विचार कर वह तिलक लगाये और पण्डितों जैसा स्वरूप बनाये उस लाला की दुकान के सामने से निकला त्योंही सेठजी ने उसे विद्वान ब्राह्मण समझकर प्रणाम करते हुये कहा—'पंडित जी! आपकी खुराक कितनी होगी?'

उसने कहा—'इससे तात्पर्य?'

सेठजी ने कहा—पंडितजी! तुम तो बुरा मान गये। तात्पर्य वात्पर्य कुछ नहीं, यूं ही पूछ लिया था। क्रोध न कीजिये महाराज।

लालाजी की बात सुन कर पंडित जी ने कहा—'यजमान, हम ब्राह्मण लोग शत्रु पर भी क्रोध नहीं करते, फिर आप जैसे सज्जनों पर तो अप्रसन्न ही क्यों होने लगे। भाई, आप हमारे भोजन के बारे में पूछना ही चाहते हैं तो लीजिये मैं आपके सम्मुख अपना आहार बताता हूँ सुनिये—अधिक से अधिक आध पाव आटा, आधी छटांक दाल और छै माशे घी। इतना भोजन चौबीस घंटे के लिये पर्याप्त है। सो भी जितना तुम्हें बताया है, सारा नहीं, इसमें से कुछ भाग गऊ के लिये और कुछ काग तथा कुत्ते के लिये निकाल दिया करता हूँ, यदि सारा भोजन कर लूँ तो फिर वैद्य को बुलाकर चूर्ण लेते हुये अड़तालीस घण्टे पेट के दर्द में कराहते हुये व्यतीत करने पड़े और दक्षिणा तो हम किसी से लेते ही नहीं। इतना सुनते ही लाला का मन आनन्द के मारे कमल की तरह खिल गया और तब मुस्कराते हुये उसने कहा—''पंडित जी! कल आपका निमन्त्रण है तो आप हमारे घर आकर इच्छानुसार रसोई बनाकर भोजन कर लेना।''

तत्पश्चात् सेठ जी के घर का पता ठिकाना

**खजूर देखकर लालाजी के मुँह में पानी भर आया और वह उन्हें खाने के लिए पेड़ पर चढ़ गये। खजूर खाने के बाद ज्योंही उतरने के लिये पृथ्वी पर देखा, त्यों ही सेठजी का शरीर कांपने लगा, उसने सोचा कि यदि कहीं उतरते समय इसके नीचे गिर पड़ा तो हड्डियों का भी कहीं पता न लगेगा।**

पूछ पंडित जी तो अपने घर चले गये और रात्रि को सेठ ने अपने घर पहुँच कर सेठानी से कहा—कल एक पंडित जी अपने घर भोजन करने आवेंगे सो उन्हें जिस वस्तु की इच्छा हो दे देना। कहीं ऐसा न हो कि उन्हें अपने घर आकर किसी बात का कष्ट उठाना पड़े। सेठानी बड़ी धर्मात्मा थी। उसने लालाजी के मुख से धर्म के काम के लिए ऐसी दिल खोलकर बातें आज ही सुनी थी, अत: उसे बड़ी प्रसन्नता हुई और उसने कहा—'जैसी आपकी इच्छा।'

दूसरे दिन लालाजी तो दुकान पर चले गये। पश्चात् कोई लगभग नौ बजे पंडित जी सेठ के घर गये और सेठानी से अपने जिमाने के बारे में पूछ-ताछ की। तब सेठानी ने अपने हाथ जोड़ नमस्कार करते हुए कहा—'पंडित जी महाराज! लालाजी ने मुझसे कह दिया है।' अत: आप प्रेमपूर्वक इच्छानुसार भोजन करें जो आपको चाहिये वे सभी आपकी आज्ञानुसार आपके पास पहुँच जायेगा। इसलिए चौके में चलकर रसोई बनाने का कष्ट कीजिये। सेठानी की यह बात सुन कर प्रसन्नता से फूले हुए पंडित जी ने कहा—'बस अभी तो केवल दस सेर आटा ढाई सेर मेवा, साढ़े सात सेर घी और दस सेर बूरा ला दीजिये। जब हलवा लड्डू पूरी तैयारी हो जाय तो साग, मसाला और दही मंगवा देना।'

पंडित जी के कहने की देर थी। सेठानी ने सब सामान मंगवा दिया। अब पंडित जी की रसोई भी तैयार हो चुकी थी और उसी समय उसकी स्त्री अपने बाल बच्चों को भी लेकर आ चुकी थी। तब उसने स्त्री और बाल बच्चों सहित प्रेम से भोजन किया और जो कुछ सामान बाकी बचा उसे उनके हाथ घर पहुँचा दिया। तत्पश्चात् जब वह धूर्तराज घर जाने लगा, तब उसने सेठानी को बुलाकर कहा—सेठानी जी! भगवान आपको सदैव आनन्दित रखें और आपको दिन दूना रात चौगुना लाभ हो। अब दक्षिणा दिलाने का और कष्ट कीजिये। सेठानी ने पूछा—पंडित

**पंडित जी सेठ के घर गये और सेठानी से अपने जिमाने के बारे में पूछ-ताछ की। तब सेठानी ने अपने हाथ जोड़ नमस्कार करते हुए कहा—'पंडित जी महाराज! लालाजी ने मुझसे कह दिया है।' अत: आप प्रेमपूर्वक इच्छानुसार भोजन करें जो आपको चाहिये वे सभी आपकी आज्ञानुसार आपके पास पहुँच जायेगा।**

जी दक्षिणा में क्या दिला दिया जाय? उसने कहा—'लालाजी इस समय होते तो एक सोने की मुहर लेता। अब आपकी जो इच्छा हो दिला दीजिये।'

उसकी यह बात सुनकर सेठानी ने झट दो मुहर देकर विदा किया। रात्रि को जब सेठ जी घर आये तो सेठानी ने ब्रह्म भोज का इतिहास सुनाया तो वह हाय!'कहकर पलंग पर गिर पड़ा।' इसके बाद उसने भाग्य को धिक्कारते हुए और सेठानी की मूर्खता पर दु:ख प्रकट करते हुए कहा—'अरी पगली! तूने क्या किया जो ब्राह्मण पर इतना खर्च कर मुझे दिन दहाड़े लुटवा दिया।'

उसने कहा—'मेरा इसमें क्या अपराध है? आप ही की तो आज्ञा थी कि उन्हें जिस वस्तु की इच्छा हो दे देना।'

सेठानी की यह बात सुन सेठ ने क्रोध करते हुए कहा—'अरी! तुझमें घर की भी फिकिर थी? मैंने यह थोड़े ही कहा था उसे पचास आदमियों का भोजन का सामान देकर उसे दो मुहर दक्षिणा में दे देना। हाय! वह जिस समय दुकान पर आया था, आध पाव आटा, एक छटांक दाल और छै मासे घी मेरे भोजन के लिये अधिक से अधिक होगा और दक्षिणा लेने के लिए सर्वथा इन्कार करता था। इसलिये तो मैंने उसे निमंत्रण देकर जिमाने के लिए कहा।' हे सज्जनों! सेठानी को अब पता लगा कि लाला जी कल क्यों दिल खोल कर बातें कर रहे थे। परन्तु जो कुछ होने वाला था वह हो गया। इधर तो सेठ और सेठानी में इस प्रकार की बातें हो रही थीं और उधर उस पंडित ने घर पहुँच कर अपनी स्त्री से कहा—'अमुक रङ्ग रूप का मनुष्य तेरे पास मुझे पूछने के लिये आये तो उसे देख कर रोते हुए कहना कि पता नहीं किस पापी

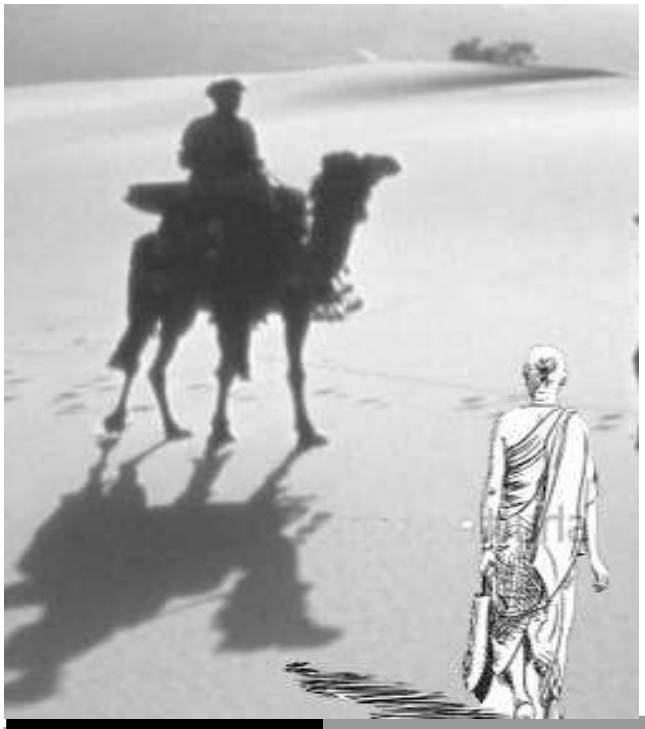

**अब लाला प्रात: उठा और अपने ऊँट को कस उस धूर्त के घर की ओर चल दिया। क्योंकि उसने सोचा था कि 'यदि वह दुष्ट भागेगा तो उसे ऊँठ द्वारा शीघ्र पकड़ लूँगा।' लाला को घर आते देखकर वह धूर्त शीघ्र वहाँ से भाग चला। लाला ने जब उसे भागते हुए देखा तो झट-पट ऊंट पर सवार होकर उसके पीछे-पीछे हो लिया।**

के यहाँ कल कैसा भोजन करके आये। इसलिए वे तो पेट के दर्द में रात ही मर गये। अब मेरे पास उनके दाग देने के लिए न तो लकड़ियों के लिए पैसे हैं और न कफन के लिए कपड़ा। इसलिए थाने में खबर करती हूँ। वहाँ सरकार आप इन्तजाम करेगी।' दूसरे दिन लाला प्रात: उठ कर गलियों में घूमता हुआ लोगों से पता लगाकर ज्योंहि उस धूर्त के घर पहुँचा, त्योंही उसे पूछने पर ब्राह्मणी के मुँह से उसके मरने का पता लग गया और वह बड़े जोर-जोर से रोने लगी। अब तो सेठ बड़ा हैरान हुआ और उसने सोचा कि यदि यह बात पुलिस को मालूम हो गई तो वह छानबीन करती हुई मुझसे पूछताछ करेगी। तब न जाने क्या क्या दुख उठाने पड़ेंगे। साथ में मेरी अपकीर्ति भी होगी। इसलिए इसी को कुछ देकर राजी कर लिया जाय तो सुन्दर है। यह विचार कर लालाजी ने कहा—'पंडितायन! इससे तो पंडित जी की लाश की मिट्टी खराब होगी इसलिए खर्च वर्च के सौ रुपये मैं दे देता हूँ। इससे पंडित जी का अच्छी तरह दाह संस्कार कर क्रिया कर्म करना और बारह ब्राह्मण जिमा देना।' इस प्रकार सौ रुपया गाँठ के देकर सेठ जी राम को मनाता हुआ दुकान पर चला गया और रात्रि को घर आने पर सेठ जी ने पंडित जी की मृत्यु का समाचार सुना दिया। जिसे सुन कर सेठानी जी बड़ी दु:खी हुई। कुछ समय व्यतीत हो जाने के बाद एक दिन मध्यान्ह के समय सेठानी पलंग पर लेटी हुई कोई धार्मिक पुस्तक पढ़ रही थी। उसी समय धूर्तराज पंडित ने उसे आशीर्वाद देते हुए चौंका दिया। यद्यपि मरे हुए पंडित को सम्मुख देख कर सेठानी के भय और आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा, परन्तु फिर भी उसने कड़ा दिल करके नमस्कार करते हुए कहा—'पंडितजी आप तो सुरपुर सिधार गये थे। क्या यह बात वास्तव में सच है?' उसने कहा—'सर्वथा सत्य है।' काँपते हुए सेठानी ने कहा—'फिर आपका यहाँ कैसे आना हुआ?' बोला—'सेठानी! आपकी लड़की (जो कि मर चुकी थी) उसने मुझे आपके पास भेज कर अपने वस्त्र और आभूषण मंगाये हैं। क्योंकि वह वस्त्राभूषणों के बिना बड़ी दु:खी रहती है।' उस धूर्त की ये बातें सुनकर सेठानी ने अपनी लड़की के सारे समाचार पूछे और उसके सब वस्त्राभूषण दे दिये। तब वह धूर्तराज उनकी गठरी बाँधकर प्रसन्न होता हुआ अपने घर चल दिया।

तत्पश्चात् रात्रि को ज्यों ही सेठ अपने घर आया त्योंही सेठानी ने उसे दिन वाली घटना से भली:भाँति परिचित करा दिया। अब लाला को पूर्ण विश्वास हो गया कि वह धूर्त जीवित है और उसने हर बार मुझे लूटने के जाल फैलाये हैं। इसलिए अब प्रात:काल सीधे उसके घर पहुँच कर उसे पकड़ना चाहिये।

अब लाला प्रात: उठा और अपने ऊँट को कस उस धूर्त के घर की ओर चल दिया। क्योंकि उसने सोचा था कि 'यदि वह दुष्ट भागेगा तो उसे ऊँट द्वारा शीघ्र पकड़ लूँगा।' लाला को घर आते देखकर वह धूर्त शीघ्र वहाँ से भाग चला। लाला ने जब उसे भागते हुए देखा तो झट-पट ऊंट पर सवार होकर उसके पीछे-पीछे हो लिया। दो तीन मील जाने पर उस धूर्त ने देखा कि सेठ अब मुझे शीघ्र पकड़ लेगा तो वह दौड़ते हुए एक पेड़ पर चढ़ गया। वृक्ष के नीचे पहुँच कर सेठ ने उसे गालियाँ देते हुए बहुत बार उतर कर नीचे आने को कहा। परन्तु उसने लाला की बातों को नहीं सुना तब तो लाला जी बहुत बिगड़े और ऊँट को बिठा नीचे उतर कर उसे पकड़ने के लिए वृक्ष पर चढ़ गये। अब सेठ के पास आया हुआ धूर्त बचा जान कर शाखाओं को पकड़ कर शीघ्रता से नीचे कूद गया और सेठ जी के नीचे उतरने से पहले ऊँट को दौड़ा कर बहुत दूर निकल गया।

इस प्रकार हाथ से ऊंट गया हुआ जानकर और अपना कुछ भी जोर चलता हुआ न देखकर पेड़ पर से ही खड़े होकर उस धूर्त से जोर से कहा—पंडित जी! यह ऊँट भी लड़की को दे देना। ऐसा कहने के पश्चात् सेठजी वृक्ष के नीचे उतर आये और उदास होते हुए अपने घर को चले गये।

❑

# नौसादर का आरोग्यवर्धक आदर

वैद्य दीपक

**संस्कृत भाषा में नौसादर को अमृतसार के नाम से भी जाना जाता है। लैटिन में अमोनियम क्लोराइड कहते हैं। यूनानी हकीमों के मतानुसार यह खनिज द्रव्यों की तरह खदानों से प्राप्त होता है। पानी के साथ भी इसकी उत्पत्ति मानी गई है। शौच-पेशाब आदि गंदगी को जलाने से भी इसकी उत्पत्ति होती देखी गई है।**

संस्कृत भाषा में नौसादर को अमृतसार के नाम से भी जाना जाता है। लैटिन में अमोनियम क्लोराइड कहते हैं। यूनानी हकीमों के मतानुसार यह खनिज द्रव्यों की तरह खदानों से प्राप्त होता है। पानी के साथ भी इसकी उत्पत्ति मानी गई है। शौच-पेशाब आदि गंदगी को जलाने से भी इसकी उत्पत्ति होती देखी गई है। चिकित्सक लोग तो नमक के तेजाब को पानी में घोल और कार्बोनेट आफ अमोनियम को समिश्रित कर सुखा कर बनाते हैं आयुर्वेद की मान्यताओं के अनुसार नौसादर का आदर चिकित्सा क्षेत्र में इसलिए किया जाता है कि यह उदर रोग, कब्जियत, यकृत रोग, शूल, ज्वर, प्लीहारोग, सिर दर्द, खांसी और योनि रोग में तुरन्त प्रभावकारी और गुणकारी सिद्ध होता है। यह आमाशय के सभी रोगों को मार भगाता है। पेट में बढ़ी हुई तिल्ली को ठीक करता है वायु और अफरे में लाभकारी है। इसके सेवन से भूख बढ़ती है और पेट साफ होता हैं शरीर के किसी भी अंग में रक्तस्राव होने लगे तो उसे तुरन्त बन्द कर देता है। नेत्रों में लगाने से जाला कट जाता है। इसका लोशन जख्म को भर देता है विष के प्रभाव पर इसका लेप करने से लाभ होता है। थोड़ी सी मात्रा नौसादर की पानी में मिलाये और मकान में छिड़काव करें तो सर्प नहीं आता।

नौसादर का अधिक मात्रा में सेवन किया गया तो विष तुल्य काम करेगा। आमाशय और आँतों को विकृत कर डालता है। भूलवश अत्यधिक मात्रा में सेवन कर भी लिया तो इसके कुप्रभाव को मिटाने हेतु दूध घी पिलाकर वमन कराया जाय। चिकनी खुराक इसमें अधिक हितकारी सिद्ध होती है। ठण्डी और शांत स्वभाव की औषधियाँ भी जहरीले प्रभाव को हटा देती हैं। चिकित्सकों का यह कहना है कि टूटी हुई हड्डी को जोड़ने में यह लाभप्रद होता है। जोड़ों में जमे हुए रक्त पर नौसादर का लेप कर दिया जाये तो रक्त संचालन की क्रिया जल्दी होने लगती है।

महिलाओं के स्तनों में किसी तरह का फोड़ा उठने लगे तो नौसादर का लेप एक रामबाण औषधि की तरह कारगर सिद्ध

होता है। नौसादर को सूँघने मात्र से गला, श्वांस की नली और फेफड़ों के ऊपर की झिल्ली में रक्त प्रवाह होने लगता है। गले की पुरानी सूजन, कान के भीतर की सूजन और खांसी में भी इसका प्रयोग रोग से मुक्ति दिलाता है। गर्भाशय की विकृति और सिरदर्द में भी इसे औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। जुकाम में इसके टुकड़े चूसने से बड़ा भारी लाभ मिलता है। जोड़ों के दर्द को भी मिटाता है।

मासिक धर्म में किसी तरह की रुकावट आने पर स्त्रियाँ इसकी १० ग्राम मात्रा दिन में तीन बार सेवन करें। बच्चों के अण्डकोष में पानी भर जाये तो २ ग्राम नौसादर को एक औंस पानी में मिलाकर लेप लगाने से लाभ मिलता है। नारू रोग की सूजन में भी इसका लेप कारगर होता है।

नौसादर को पान के पत्ते में खाने से गले के रोग नहीं रहते। अडूसे के काढ़े में

नौसादर का चूर्ण मिलाकर पीने से कुक्कर खांसी मिट जाती है। दाँत के खड्डे में दबाने से दांत दर्द दूर होता है। नौसादर और फिटकरी को नेत्रों में अंजन की तरह लगाने से नेत्र रोग नहीं रहते। इसके चूर्ण को शहद में मिलाकर लेप करने से कुष्ठ रोग में लाभ मिलता है। नौसादर चूना और सुहागा तीनों को पीसकर सूंघने से बिच्छू का जहर उतर आता है। नौसादर और दो काली मिर्च पीसकर सेवन करने से बुखार नहीं रहता सिर और कनपटी पर एक चुटकी लेप करने से आधाशीशी का दर्द मिटता है।

❑

## सफलता का घमंड

**महाभारत के युद्ध में अर्जुन और कर्ण के बीच घमासान चल रहा था। अर्जुन का तीर लगने पर कर्ण का रथ 25-30 हाथ पीछे खिसक जाता और कर्ण के तीर से अर्जुन का रथ सिर्फ 2-3 हाथ। लेकिन श्री कृष्ण थे की कर्ण के वार की तारीफ किये जाते, अर्जुन की तारीफ में कुछ ना कहते। अर्जुन बड़ा व्यथित हुआ, पूछा, हे पार्थ आप मेरी शक्तिशाली प्रहारों की बजाय उसके कमजोर प्रहारों की तारीफ कर रहे हैं, ऐसा क्या कौशल है उसमें। श्री कृष्ण मुस्कुराये और बोले, तुम्हारे रथ की रक्षा के लिए ध्वज पे हनुमान जी, पहियों पे शेषनाग और सारथी रूप में खुद नारायण हैं। उसके बावजूद उसके प्रहार से अगर ये रथ एक हाथ भी खिसकता है तो उसके पराक्रम की तारीफ तो बनती है। कहते हैं युद्ध समाप्त होने के बाद श्री कृष्ण ने अर्जुन को पहले उतरने को कहा और बाद में स्वयं उतरे। जैसे ही श्री कृष्ण रथ से उतरे, रथ स्वतः ही भस्म हो गया। वो तो कर्ण के प्रहार से कबका भस्म हो चुका था, पर नारायण बिराजे थे इसलिए चलता रहा। ये देख अर्जुन का सारा घमंड चूर-चूर हो गया। कभी जीवन में सफलता मिले तो घमंड मत करना, कर्म तुम्हारे हैं पर आशीष ऊपर वाले का है और किसी को परिस्थिति वश कमजोर मत आंकना, हो सकता है उसके बुरे समय में भी वो जो कर रहा हो वो आपकी क्षमता के भी बाहर हो। लोगों का आंकलन नहीं, मदद करो।**

# शनैश्चरी अमावस्या पर करें ये काम, हर समस्या का होगा समाधान

**शनि देव की पूजा में ये नियम कर देंगे उन्हें प्रसन्न**

**कौशल पाण्डेय (ज्योतिष)**

जन्म कुंडली में पितृदोष और कालसर्प दोष हो तो व्यक्ति का जीवन संकटपूर्ण बना रहता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में कुछ भी ठीक नहीं चलता। ना उसके बिजनेस में लाभ मिलता है और ना ही नौकरी में तरक्की कर पाता है। बार-बार बीमारियों पर खर्च होता है। परिवार में अक्सर वाद-विवाद बना रहता है। यहां तक कि ऐसे दोष वाले कई व्यक्तियों को संतानहीन भी देखा गया है। यदि आप भी इसी तरह के दोषों से परेशान हैं और उनका निवारण नहीं हो पा रहा है तो 17 मार्च को आ रहा है बड़ा दिन। पितृदोष, कालसर्प दोष और शनि से जुड़ी पीड़ा हो तो 17 मार्च 2018 शनिवार को शनैश्चरी अमावस्या आ रही है। पितृदोष, कालसर्प दोष और शनि से जुड़ी पीड़ा को शांत करने के लिए यह दिन सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इस दिन शनि की साढ़ेसाती और ढैया से परेशान व्यक्ति भी उपाय करेंगे तो उनके जीवन से संकटों की विदाई हो जाएगी।

**जन्म कुंडली में पितृदोष और कालसर्प दोष हो तो व्यक्ति का जीवन संकटपूर्ण बना रहता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में कुछ भी ठीक नहीं चलता। ना उसके बिजनेस में लाभ मिलता है और ना ही नौकरी में तरक्की कर पाता है। बार-बार बीमारियों पर खर्च होता है। परिवार में अक्सर वाद-विवाद बना रहता है। यहां तक कि ऐसे दोष वाले कई व्यक्तियों को संतानहीन भी देखा गया है।**

**पितृदोष से मुक्ति के लिए** यदि आपकी जन्म कुंडली में पितृदोष है तो शनैश्चरी अमावस्या के दिन सूर्योदय से पूर्व उठकर किसी पवित्र नदी या तालाब में स्नान करें। इसके बाद उसी के किनारे बैठकर पितरों के निमित्त पिंड दान, तर्पण किसी पंडित के माध्यम से करवाएं। पितृदोष तब लगता है जब अपने पूर्वजों की कोई इच्छा अधूरी रह जाती है, या उनका उत्तर कर्म ठीक से नहीं हो पाता है। ऐसे में पितरों के नाम से उनकी पसंद की वस्तुओं का दान भी किया जाता है। अपनी श्रद्धानुसार गरीबों को भोजन, वस्त्र, कंबल, चप्पल, छाते आदि भेंट करें। कालसर्प दोष से मुक्ति के लिए यदि आपकी जन्म कुंडली में कालसर्प दोष है तो शनैश्चरी अमावस्या के दिन प्रातः स्नान करके अपने पूजा स्थान में बैठकर पितृ स्तोत्र का पाठ करें। इसके बाद शिव मंदिर में जाकर कच्चा दूध, गंगाजल से शिवलिंग का अभिषेक करें। वहीं बैठकर महामृत्युंजय मंत्र की एक या पांच माला जाप करें। किसी ऐसे शिवलिंग पर तांबे या पीतल का सर्प लगवाएं जहां लगा हुआ नहीं हो। शाम के समय पीपल के वृक्ष में कच्चा दूध चढ़ाकर उसके नीचे आटे के पांच दीपक लगाएं। इससे काफी हद तक कालसर्प दोष की शांति होती है। उसके क्रूर प्रभाव कम होते हैं। शनि की शांति के लिए उपाय शनि वर्तमान में धनु राशि में चल रहे हैं। इसलिए वृश्चिक को शनि की साढ़ेसाती का अंतिम चरण, धानु को द्वितीय और मकर को प्रथम चरण चल रहा है। इन तीन राशि वाले लोग शनैश्चरी अमावस्या के दिन शनि मंदिर में सात सूखे नारियल एक काले कपड़े में बांधकर अर्पित करें। शनि चालीसा का पाठ करें। भूखे लोगों को इमरती खिलाएं और यथा शक्ति वस्त्र, कंबल आदि दान करें। इस दिन व्रत रखें। ❑

# तीन कसौटियां

सुकरात

एक दिन सुकरात का एक परिचित व्यक्ति उनके पास आया और बड़े ही उत्साह से उन्हें बताने लगा, मैंने आपके मित्र के बारे में कुछ सुना है। सुकरात अपनी विद्वत्ता, ज्ञान और सद्-व्यव्हार के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने उस व्यक्ति को रोकते हुए कहा, तुमने जो भी सुना है वह बात मैं अवश्य सुनना चाहूँगा। किंतु इसके पहले कि तुम मुझसे कुछ कहो, आओ उस बात पर एक छोटा सा परीक्षण कर ले। कैसा परीक्षण? उस व्यक्ति ने अचरज से पूछा। यह तीन कसौटियों का परीक्षण है सुकरात बोले। वह व्यक्ति राजी हो गया। उसने पूछा, वह तीन कसौटियां क्या है? सुकरात ने उसे समझाते हुए कहना प्रारंभ किया, पहली कसौटी है। सत्यता की कसौटी' क्या तुम पूर्णत: आश्वस्त हो कि तुम मेरे मित्र के बारे में जो कहने वाले हो वह पूर्णत: सत्य है? 'नहीं' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ये बात मैंने कहीं से सुनी है। ठीक है सुकरात ने विश्लेषण करते हुए कहा, इसका अर्थ है कि उस बात की सत्यता पर तुम्हें अब भी संदेह है। कोई बात बात नहीं, हम इसे दूसरी कसौटी पर परखते है. यह कसौटी है अच्छाई की कसौटी' क्या मेरे मित्र के बारे में जो तुम कहने जा रहे हो, उसमें कोई अच्छाई है अर्थात् क्या वह सकारात्मक बात है? नहीं, वास्तव में यह तो इसके विपरीत है। ओह! इसका अर्थ ये हुआ कि जो बात तुम मुझे बताने जा रहे हो वह सकारात्मक और अच्छी बात नहीं है। साथ ही तुम यह भी नहीं जानते कि वह सत्य है या असत्य। इसलिए अब हमें इसे तीसरी कसौटी पर परखना होगा और वह कसौटी है। उपयोगिता की कसौटी'. ये बताओ कि जो बात तुम मुझे बताने वाले हो, क्या वह मेरे लिए उपयोगी है? नहीं ऐसा तो नहीं है। व्यक्ति ने उत्तर दिया। यह सुनकर सुकरात बोले, तुम मुझे जो बात कहने वाले हो, न वो सत्य न सकारात्मक और न ही उपयोगी है। इस स्थिति में मुझे वह बताने का औचित्य ही क्या है? उस व्यक्ति को अपनी भूल का अहसास हो गया और वह वहाँ से चला गया। दोस्तों, रोजमर्रा के जीवन में कई बार हमारा सामना ऐसे लोगों से होता है जो दूसरों की बुराइयों का पिटारा लेकर घूमते रहते है. उनका प्रयास यह रहता है कि वे लोगों में मतभेद उत्पन्न कर अपने स्वार्थ की रोटी सेक सकें. इससे निपटने के लिए किसी भी जानकारी को ग्रहण करने के पूर्व उसका तीन कसौटियों पर परीक्षण करना आवश्यक है- सच्चाई, सकारात्मकतता और उपयोगिता की कसौटी। इस तरह हम व्यर्थ, अनुपयोगी और नकारात्मक बातों से दूर रहकर अपना जीवन अधिक शांतिपूर्ण बना सकते हैं। ❑

# होलिका दहन पर भद्रा का साया, फिर भी इस बार शुभ है होली...

साभार

**इस बार की होली है बेहद शुभ- होलिका दहन के लिए तीन चीजों का एक साथ होना बहुत ही शुभ होता है। पूर्णिमा तिथि हो, प्रदोषकाल हो और भद्रा लगा हो। इस साल होलिका दहन पर ये तीनों संयोग बन रहे हैं। इसलिए होली आनंददायक और शुभ रहेगी।**

होलिका दहन से पूर्णिमा तिथि लग जाती है। लेकिन अबकी साल भद्रा भी लगा है। इसलिए होलिका दहन भद्राकाल के खत्म होने के बाद ही होगा। भद्राकाल में कोई भी शुभ काम नहीं होता है कहते हैं इस दौरान किया गया कोई भी काम विनाश का कारण बनता है। होलिका दहन के साथ ही रंग वाली होली शुरू हो जाएगी, जो शुक्रवार को दोपहर तक जारी रहेगी।

## भद्रा पुराणों के अनुसार

भद्रा भगवान सूर्यदेव की पुत्री और राजा शनि की बहन है। शनि की तरह ही इसका स्वभाव भी कड़क बताया गया है। उनके स्वभाव को नियंत्रित करने के लिए ही भगवान ब्रह्मा ने उन्हें पंचांग के एक प्रमुख अंग विष्टि करण में स्थान दिया। भद्रा की स्थिति में कोई भी अच्छा काम नहीं होता लेकिन भद्राकाल में तंत्र कार्य, अदालती और राजनीतिक चुनाव का कार्य अच्छा होता है। इस बार की होली है बेहद शुभ- होलिका दहन के लिए तीन चीजों का एक साथ होना बहुत ही शुभ होता है। पूर्णिमा तिथि हो, प्रदोषकाल हो और भद्रा लगा हो। इस साल होलिका दहन पर ये तीनों संयोग बन रहे हैं। इसलिए होली आनंददायक और शुभ रहेगी।

## होलिका दहन की पूजन विधि

होली में आग लगाने से पूर्व होली

का पूजन करने का विधान है। जातक को पूजा करते वक्त पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठना चाहिए। पूजा आस्था के साथ करना चाहिए। पूजन करने के लिए माला, रोली, गंध, पुष्प, कच्चा सूत, गुड़, साबुत हल्दी, मूंग, बताशे, गुलाल, नारियल, पांच प्रकार के अनाज में गेंहू की बालियां और साथ में एक लोटा जल रखना चाहिए और उसके बाद होलिका के चारों ओर परिक्रमा करनी चाहिए। ❑

# अजब गजब देश दुनिया की बातें

1. कछुए के दाँत नहीं होते।
2. हम जो साँस लेते हैं उस ऑक्सीजन में करीब 0.0005: मात्र में हीलियम मिली होती है।
3. उड़ने वाले गुब्बारों में हीलियम गैस ही भरी होती है, ये गैस हवा से भी ज्यादा हल्की होती है, इसलिए ऊपर की ओर उड़ती है।
4. ऊँट भी इंसानों की तरह थूक सकते हैं।
5. शुतुरमुर्ग 70 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ लगा सकते हैं।
6. सूअर दुनियां के चौथे सबसे समझदार जानवर हैं।
7. डायनासोर घास नहीं खाते थे, उनके जमाने में घास भी नहीं हुआ करती थी।
8. मगरमच्छ की जीभ उसके मुँह के ऊपरी हिस्से से चिपकी हुई होती है, ना ही मगरमच्छ की जीभ हिलती है और ना ही वो चबाने में मदद करती है लेकिन उससे बनने वाली लार स्टील और काँच तक को गला देती है।
9. फ्रांस की राजधानी पेरिस में जितने व्यक्ति हैं उससे कहीं ज्यादा संख्या में कुत्ते हैं।
10. न्यूजीलैंड ऐसा देश है जहाँ 40 मिलियन लोग हैं और करीब 70 मिलियन भेड़ हैं।
11. मेंढक जब किसी कीड़े को सटकता है तो उसकी आँखें बंद हो जाती हैं।
12. शतरंज का अविष्कार भारत में ही हुआ।
13. साँप सीढ़ी वाला गेम 13 वीं शताब्दी में संत ज्ञानदेव ने बनाया।
14. दुनियां में सबसे ज्यादा डाकखाने भारत में स्थित हैं।
15. सन् 1896 तक भारत दुनिया का अकेला हीरा उत्पादक देश था।
16. 24 कैरेट वाला सोना भी पूरी तरह शुद्ध नहीं होता उसमें कुछ मात्र में कॉपर मिलाया जाता है, एकदम शुद्ध सोने को हाथ से भी आसानी मोड़ा जा सकता है।
17. Electricity (बिजली) तार के अंदर होकर नहीं गुजरती बल्कि तार के चारों ओर होकर गुजरती है।
18. दुनियां की पहली साईकिल 1817 में Baron von Drais ने बनायी थी जिसमें पैडल नहीं थे।
19. शुतुरमुर्ग की आँखें उसके दिमाग से ज्यादा बड़ी होती हैं
20. चींटी सोती नहीं हैं।
21. डॉल्फिन मछली 5 से 8 मिनट तक अपनी साँस रोक सकती है।
22. फिंगर प्रिंट की तरह हर इंसान के जीभ के प्रिंट भी अलग-अलग होते हैं।
23. कॉकरोच बिना सिर के भी 9 दिनों तक जिन्दा रह सकता है।
24. बिना पानी के चूहा ऊँट से भी ज्यादा दिन जिन्दा रह सकता है।
25. दुनिया की करीब 10% जनसंख्या left & handed बायें हाथ वाला है।
26. डॉलफिन मछली एक आँख खुली रख के भी सो सकती है।
27. हाथी 3 मील दूर से ही पानी की गंध सूँघ सकता है।
28. दरियाई घोड़ा एक आम इंसान से तेज दौड़ सकता है
29. तोता और खरगोश, दो अकेले ऐसे प्राणी हैं जो बिना अपना सर घुमाए ही पीछे की ओर देख सकते हैं।
30. ब्लू व्हेल धरती की सबसे बड़ी प्राणी है, इसका दिल एक कार जितना बड़ा है और जीभ हाथी के जैसी।
31. दुनिया की 90% बर्फ अंटार्कटिका में मौजूद है।
32. इसके बावजूद अंटार्कटिका एक रेगिस्तान जैसा है।
33. अंटार्कटिका सबसे ठंडा महाद्वीप है जहाँ माइनस -76% तापमान रहता है।
34. वृहस्पति सबसे बड़ा ग्रह है। इसके अंदर करीब 1000 धरती समा सकती हैं।
35. शनि ग्रह पर बहुत तेज हवाएं चलती हैं। इन हवाओं की गति 1100 मील प्रति घंटा है।
36. रेडियो से आने वाली आवाज electromagnetic waves के जरिये आती है।
37. इंसान की जाँघ की हड्डी कंक्रीट से भी ज्यादा मजबूत होती है।
38. आप साँस रोककर खुद को नहीं मार सकते।
39. आपका दिल एक दिन में करीब 100,000 बार धड़कता है।
40. दाएँ हाथ (Right handed) वाले लोग बाएं हाथ (left handed) वालों से करीब 9 साल ज्यादा जीते हैं।
41. हाथी अकेला ऐसा प्राणी है जो उछल नहीं सकता।
42. कोका कोला में अगर रंग ना मिलाया जाये तो यह हरे रंग की होती है।
43. आँखें खुली रखकर आप छींक नहीं सकते।
44. Albert Einstein की मृत्यु के बाद वैज्ञानिकों ने उनका दिमाग निकाल कर रख लिया था ताकि वो जाँच कर सकें की उनका दिमाग इतना तेज कैसे था।
45. अमेरिका के Robert Wadlow दुनिया के सबसे लम्बे आदमी हैं उनकी लम्बाई 8 ft11.1 इंच है।
46. चाइना की Zeng Jinlian दुनियां की सबसे लम्बी औरत हैं इनकी लम्बाई 8 ft 1 इंच है।
47. जिराफ की जीभ 21 इंच तक लम्बी होती है, अपनी जीभ से जिराफ अपने कान तक साफ कर लेते हैं।
48. एक इंसान बिना खाने के 1 महीने तक जिन्दा रह सकता है लेकिन बिना पानी के 1 हफ्ते भी नहीं रह सकता।
49. अगर आपके शरीर से 1% पानी निकाल दिया जाये तो आपको बहुत तेज प्यास लगने लगेगी और अगर 10% पानी निकाल दिया तो आपकी मृत्यु तक हो सकती है
50. श्रीलंका में 1896 में आसमान से खून की बारिश हुई थी, एक रिसर्च में यह बात सामने आयी है।
51. बोतल वृक्ष नामीबिया में पाया जाने वाला ये वृक्ष धरती के सबसे खतरनाक वृक्षों में से एक है। इस वृक्ष से दूधिया रस निकलता है जो एक तीव्र जहर होता है जिसे प्राचीन काल में शिकारी अपने तीरों पर लगाया करते थे। इस वृक्ष का आकार बोतल जैसा होता है इसलिए इसे बोतल वृक्ष कहते हैं।

# 'स्वार्थ परम ज्ञान ले आता है'

''स्वार्थ पर संयम करने से अन्य ज्ञान भिन्न पुरुष ज्ञान को उपलब्ध हो जाता है।'' स्वार्थसंयमात्मपुरुष ज्ञानम्

पतंजलि ऋषि कह रहे हैं कि स्वार्थ परम ज्ञान ले आता है। स्वार्थी हो जाओ, यही धर्म का वास्तविक मर्म है। यह जानने का प्रयास करो कि तुम्हारा वास्तविक स्वार्थ क्या है? स्वयं को दूसरों से अलग पहचानने का प्रयास करो–परार्थ, अर्थात् दूसरों से अलग और यह कभी मत सोचना कि दूसरे तुम से अलग हैं। ऐसा भी मत सोचना जो बाहर हैं, वे ही दूसरे हैं, वे तो दूसरे हैं ही लेकिन तुम्हारा शरीर भी दूसरा है। एक दिन तुम्हारा शरीर भी मिट्टी में मिल जाएगा, शरीर भी इस पृथ्वी का ही अंश है, तुम्हारी श्वांस भी, तुम्हारी नहीं है, वह भी दूसरों के द्वारा दी हुई है और वह हवा में वापस लौट जायेगी बस, थोड़े समय के लिए ही तुम्हें श्वांस दी गई हैं। वह श्वांस उधार मिली हुई हैं। एक दिन उसे वापस लौटाना ही होगा। कोई भी यहाँ सदा रहने वाला नहीं है। तुम भी यहाँ सदा रहने वाले नहीं हो, लेकिन तुम्हारी श्वांस यहाँ सदा हवाओं में रहेंगी। तुम यहाँ नहीं रहोगे, लेकिन तुम्हारा शरीर यहाँ पृथ्वी में सदा रहेगा। मिट्टी मिट्टी में मिल जाएगी, जल जल में मिल जाएगा, यह शरीर जिसे तुम अपना कह रहे हो, पंचतत्वों से बना है और एक दिन पंच तत्वों में ही मिल जाएगा। लेकिन जो चीज तुमने कभी किसी से नहीं ली वह सिर्फ अपनी है और वह है तुम्हारा साक्षी भाव, वह है तुम्हारी जागरूकता, वह है तुम्हारा होश और एक समय ऐसा आएगा बुद्धि खो जाएगी, तर्क खो जाएंगे। यह सब ऐसा ही है जैसे आकाश में बादल आते हैं, वे आते हैं और फिर चले जाते हैं। लेकिन आकाश वहीं का वही रहता है। तुम विराट आकाश की भाँति बने रहोगे। वही अनन्त विराट आकाश पुरुष है–अंतर–आकाश ही पुरुष है।

इस अन्तर आकाश को कैसे जाना जा सकता है? इसके लिए स्वार्थ में संयम प्रतिष्ठित करना होता है। धारणा, ध्यान, समाधि इन तीनों को आत्मा पर केन्द्रित कर दो–भीतर की ओर मुड जाओ। सभी लोग बाहर की ओर भाग रहे हैं– तुम हमेशा बाहर की ओर भागते हो। भीतर की ओर मुडो। अपने चैतन्य को केन्द्रीय बिन्दु तक ले आना होगा। विषय वस्तु के बीच की भिन्नता को पहचानना होगा। जब भूख लगे–तो समझना भूख एक विषय है, भोजन करके संतुष्ट हो गये, तो एक प्रकार का सुख मिलता है–यह सुख की प्राप्ति भी एक तरह का विषय है। सुबह होती है–यह भी एक विषय है। साँझ होती है–यह भी एक विषय है। तुम वैसे के वैसे ही रहते हो

**पतंजलि ऋषि कह रहे हैं कि स्वार्थ परम ज्ञान ले आता है। स्वार्थी हो जाओ, यही धर्म का वास्तविक मर्म है। यह जानने का प्रयास करो कि तुम्हारा वास्तविक स्वार्थ क्या है। स्वयं को दूसरों से अलग पहचानने का प्रयास करो-परार्थ, अर्थात् दूसरों से अलग और यह कभी मत सोचना कि दूसरे तुम से अलग हैं।**

भूख हो या ना हो, सुबह हो या ना हो, साँझ हो या ना हो, जीवन हो या मृत्यु हो, सुख हो या दुख हो, तुम उसी भाँति साक्षी बने रहते हो।

लेकिन हम तो फिल्म देखते–देखते उसके साथ ही तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। यह मालूम होते हुए भी कि वहाँ सिर्फ एक सफेद पर्दा है और कुछ भी नहीं है, पर्दे के ऊपर कुछ छायाएं आ जा रही हैं। लेकिन आपने सिनेमा घर में बैठे लोगों को देखा होगा। जब पर्दे पर कोई दुखद घटना घटती है तो कुछ लोग रोने लगते हैं, उनके आँसूं बहने लगते हैं। जबकि पर्दे पर कुछ भी वास्तविक रूप से नहीं घट रहा है। फिर भी आँसू आने लगते हैं। पर्दे पर कुछ छायाएं आ जा रही हैं जो कि सच नहीं हैं, जो कि झूठ हैं फिर भी आँसूं लाने का कारण बन जाती है। किसी कहानी को पढ़ते–पढ़ते लोग उत्तेजित हो जाते हैं या किसी नग्न स्त्री का चित्र देखकर कामुक हो जाते हैं। जरा सोचो तो कुछ भी वहाँ पर वास्तविक नहीं है। कुछ थोड़े चित्र या कुछ पंक्तियां हैं फिर कामवासना जाग्रत हो जाती है।

यह मन की प्रवृत्ति है। यह विषय वस्तुओं के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है, और उनके साथ एक हो जाता है।

जब कभी विषय वस्तुओं के साथ आपका तादात्म्य स्थापित हो जाए तो अधिक से अधिक जागरूक हो जाना और स्वयं को रंगे हाथों पकड़ लेना। जब भी कभी ऐसा हो तो अपने आपको रंगे हाथों पकड़ लेना और विषय वस्तु को गिरा देना।

उसके बाद तुम्हें एक तरह की शांति का अनुभव होगा, तुम्हारे सभी आवेश, सभी उद्वेग जा चुके होंगे। जिस क्षण इस बात का बोध हो जाता है कि केवल एक पर्दा ही है और कुछ भी नहीं है।

तो क्यों इतने आवेश और उत्तेजना में पड़ना किसलिए? और संपूर्ण संसार ही एक पर्दा है–और जो कुछ भी वहां दिखाई दे रहा है, वह हमारी स्वयं की ही इच्छाओं का ही प्रक्षेपण है और हमारी जो आकांक्षा होती हैं, वही उस पर्दे पर प्रक्षेपित हो जाती हैं और हम उसमें ही भरोसा करने लगते हैं। यह सारा संसार एक स्वप्न है, भ्रांति है, माया है।

और याद रहना चाहिए कि सबका संसार एक जैसा नहीं है। हर एक व्यक्ति का अपना अलग संसार है, अपनी अलग दुनिया है। क्योंकि सबके सपने दूसरों के सपनों से अलग होते हैं। सत्य एक है, लेकिन स्वप्न उतने ही हैं जितने मन हैं।

अगर व्यक्ति अपने ही मन के सपनों में सोया रहता है, तब वह दूसरे व्यक्ति से संबंध स्थापित नहीं कर सकता, दूसरे व्यक्ति के साथ नहीं जुड़ सकता है। फिर दूसरे के साथ कोई सम्बंध नहीं बन सकता है। तब वह अपने ही स्वप्न लोक में खोया रहता है। यही तो होता है जब हम किसी से संबंध बनाना चाहते हैं, तब हम संबंध नहीं बना पाते हैं। किसी ना किसी तरह हम एक

**जब कभी विषय वस्तुओं के साथ आपका तादात्म्य स्थापित हो जाए तो अधिक से अधिक जागरूक हो जाना और स्वयं को रंगे हाथों पकड़ लेना। जब भी कभी ऐसा हो तो अपने आपको रंगे हाथों पकड़ लेना और विषय वस्तु को गिरा देना।**

दूसरे से चुकते चले जाते हैं। प्रेमी-प्रेमिका,पति-पत्नी, मित्र इसी तरह एक दूसरे से चुकते चले जाते हैं और साथ ही उन्हें चिन्ता भी होती है कि वे एक दूसरे से संबंध क्यों नहीं बना पा रहे। वे कहना कुछ चाहते हैं और सामने वाला कुछ और ही समझता है और फिर वे कहे चले जाते हैं कि मेरा मतलब यह नहीं था लेकिन फिर भी सामने वाला व्यक्ति कुछ और ही सुनता है।

**जब भगवान महावीर और भगवान बुद्ध जीवित थे। वे दोनों समकालीन थे और वे एक प्रांत बिहार में भ्रमण करते थे। बिहार प्रांत को बिहार इन दोनों बुद्ध पुरुषों के कारण ही कहा गया है। बिहार यानि विहार जिसका अर्थ होता है भ्रमण करना। क्योंकि बुद्ध और महावीर दोनों पूरे बिहार में घुमते रहते थे, तो यह प्रांत उनके भ्रमण का स्थान कहलाने लगा। लेकिन वे कभी भी मिले नहीं।**

ऐसा क्यों होता है? क्योंकि सामने वाला व्यक्ति जीता है अपने स्वप्न में और दूसरा जीता है अपने स्वप्न में। वह उसी पर्दे पर कोई और फिल्म प्रक्षेपित कर रहा होता है और दूसरा उसी पर्दे पर कोई और फिल्म प्रक्षेपित कर रहा होता है।

और इसलिए सभी प्रकार के संबंध तनाव और पीड़ा बन जाते हैं। तब व्यक्ति को लगता है कि अकेले होना ही अच्छा और सुखपूर्ण है और जब किसी के साथ रहना पड़े तो बड़ी पीड़ा होती है। ऐसा लगता है कि जैसे नरक में रह रहे हैं। लेकिन दूसरा हमारे लिए नरक निर्मित नहीं करता। बस दो स्वप्न आपस में टकरा जाते हैं। स्वप्न के दो संसार एक दूसरे के साथ संघर्ष में पड़ जाते हैं।

दूसरे के साथ संबंध तभी संभव होता है जब व्यक्ति स्वयं के स्वप्न संसार को गिरा देता है। तब वे एक दूसरे से संबंध स्थापित कर सकते हैं और तब फिर वे दो नहीं रह जाते, क्योंकि वह द्वैत स्वप्न के साथ ही गिर जाता है। तब वे एक हो जाते हैं।

जब दो बुद्ध पुरुष एक दूसरे के सामने होते हैं तो वे दो नहीं होते। इसलिए कभी दो बुद्ध पुरुषों को वार्तालाप करते हुए नहीं देखा गया। क्योंकि वहाँ पर वार्तालाप के लिए दो मौजूद ही नहीं होते। वे मिलते भी हैं तो शांत और मौन ही बने रहते हैं।

ऐसी बहुत सी कथाएं मिलती हैं जब भगवान महावीर और भगवान बुद्ध जीवित थे। वे दोनों समकालीन थे और वे एक प्रांत बिहार में भ्रमण करते थे। बिहार प्रांत को बिहार इन दोनों बुद्ध पुरुषों के कारण ही कहा गया है। बिहार यानि विहार जिसका अर्थ होता है भ्रमण करना। क्योंकि बुद्ध और महावीर दोनों पूरे बिहार में घुमते रहते थे, तो यह प्रांत उनके भ्रमण का स्थान कहलाने लगा। लेकिन वे कभी भी मिले नहीं। कई बार तो ऐसा हुआ कि दोनों एक ही गाँव में, एक ही धर्मशाला में ठहरे थे, लेकिन फिर भी उनकी आपस में एक दूसरे से भेंट नहीं हुई।

अब सवाल उठता है कि ऐसा क्यों हुआ? दोनों आपस में एक दूसरे से क्यों नहीं मिले और कारण यह है कि मिलने के लिए वहां पर दो व्यक्ति मौजूद ही नहीं थे। वहाँ दो व्यक्ति नहीं, दो शून्यताएं एक ही धर्मशाला में ठहरी हुई थीं तो कैसे बात हो सकती है। हाँ अगर दो शून्यताओं को मिलाया जाए तो वे मिलकर एक हो जाएगी।

स्वार्थ पर संयम संपन्न करने से अन्य ज्ञान से भिन्न पुरुष ज्ञान को उपलब्ध होता है। ❑

# व्रत त्योहार

| ता. | व्रत एवं त्योहार |
|---|---|

## फरवरी- 2018

3. चतर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 21/28
6. श्री महाकालेश्वर विशेष पूजा प्रारंभ
7. श्रीनाथजी पाटोत्सव (नाथ द्वारा), कालाष्टमी
8. सीताष्टमी
9. श्री समर्थ रामदास नवमी
11. विजया एकादशी व्रत
12. कुंभ संक्रान्ति
13. प्रदोष व्रत
14. महाशिवरात्रि व्रत, रूद्राभिषेक, श्री वैद्यनाथ जयंती
15. देवपितृ कार्येअमावस्या, शिव खप्पर पूजा
17. रामकृष्ण परमहंस जयन्ती, फुलैरा दौज
23. होलिकाष्टक प्रारंभ, लड्डू होली, श्रीजी मंदिर (बरसाना)
24. लट्टमार होली (बरसाना)
25. लट्ठमार होली (नन्दगांव)
26. आमला एकादशी व्रत (सर्वे), लट्टमार होली जन्मभूमि (मथुरा)
27. प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी
28. राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

## मार्च- 2018

1. पूर्णिमा व्रत, होलिका दहन रा. 19/40 बाद, चैतन्य महाप्रभु जयंती
2. धुलैण्डी (होली), गणगौर पूजन प्रा. (राज.)
3. सन्त तुकाराम जयन्ती, रंगजी मंदिरोत्सव (वृंदा)
5. चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रा. 22/7
6. श्री रंग पंचमी, रंगोत्सव श्री राधा बल्लभ (वृंदा.)
7. एकनाथ षष्ठी
13. पापमोचनी एकादशी व्रत (सर्वे.)
14. मीन संक्रान्ति रात्रि 23/48, प्रदोष व्रत
15. रंगतेरस, मास शिवरात्रि
17. देवपितृकार्ये अमावस्या, श्री शनिश्चरी अमावस्या
18. वासन्तिक नवरात्रारंभ, संवत् 2075 प्रा. घटस्थापन प्रातः 7 बजे
22. श्री पंचमी
23. श्री यमुना ज., मेला यमुना छठ (मथुरा), स्कंद षष्ठी
25. श्री दुर्गाष्टमी, श्री दुर्गा नवमी, श्री रामनवमी, नवरात्र पूर्ण, मेला नरी सेमरी देवी (मथुरा) व लट्ठ पूजा
27. कामदा एकादशी व्रत (सर्वे.)
29. प्रदोष व्रत
30. पूर्णिमा व्रत
31. चैत्री पूर्णिमा, वैशाख स्नान प्रारंभ

# सदस्यता फार्म

(यह फार्म भरकर डी.डी./मनी ऑर्डर के साथ भिजवाएं)

***हां, मैं 'शाश्वत ज्योति' पत्रिका का सदस्य बनना चाहता/ चाहती हूं।***

1 वर्ष 300 रुपये ☐

आजीवन 5000 रुपये ☐

रुपये (शब्दों में) .....

.....

रुपये के लिए 'डिवाईन श्रीराम इण्टरनेशनल चेरीटेबल ट्रस्ट, हरिद्वार (हेतु शाश्वत ज्योति)' के नाम से डी.डी./मनी ऑर्डर नम्बर .....

दिनांक ..... बैंक .....

..... संलग्न है।

नाम .....

पता .....

.....

शहर ..... राज्य .....

पिन कोड ..... फोन .....

फैक्स ..... मोबाइल .....

ई-मेल .....

***नोट : एक से अधिक सदस्यता लेने के लिए आप इस फार्म की फोटो कॉपी करवा सकते हैं।***

आदर्श आयुर्वेदिक फार्मेसी, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखंड)
फोन- 01334-262600, मोबाइल-09897034165
E-mail: Umakantmaharaj@hotmail.com

*यहाँ से काटिये*